

| नम्बर | विषय | दोहा सं० | पृष्ठ |
|-------|--|----------|-------|
| १३ | देशमूं चमर सुधर्मागत अधिकार | २७ | ५३ |
| १४ | इहारमूं वली कम्मा अधिकार | ४७ | ५६ |
| १५ | असहेजाधिकार | ५५ | ६२ |
| १६ | चारमूं यात्रा अधिकार | २६ | ६८ |
| १७ | तेरहमूं इक्कीस हजार वर्ष तीर्थ रहसी ते अधिकार | ४३ | ७१ |
| १८ | चौदमूं आगमा अधिकार | १६ | ८० |
| १९ | पनरमूं मुख वल्लिका अधिकार | ७२ | ८२ |
| २० | सोलहमूं स्याद्वाद अधिकार | ४२ | ८६ |
| २१ | सतरमूं विषंवाद अधिकार | १०१ | ९४ |
| २२ | अठारमूं निर्युक्ति अधिकार | २२ | १०४ |
| २३ | उगनीसमूं नन्दी थिरावली अधिकार | ६६ | १०६ |
| २४ | बीसमूं नदी अधिकार | २६ | ११४ |
| २५ | इक्कीसमूं दानाधिकार | १७८ | ११७ |
| २६ | बाबीसमूं आवक ने दिय्यां स्यूं थाय अ० | ६६ | १२५ |
| २७ | तेबीसमूं अनुकम्पा अधिकार | १४० | १४५ |
| २८ | चोवीसमूं सुभद्राधिकार | २६ | १५६ |
| २९ | पन्नीसमूं गोशालाधिकार | २८६-२-४ | १६२ |
| ३० | छब्बीसमूं प्रतिमा बैराग्य नूं हेतु कहै तेहनूं उत्तर | २० | १६५ |
| ३१ | सत्ताबीसमूं लिपि अधिकार | २०-२ | २०१ |

॥ प्रश्न पत्रिका ॥

॥ श्री जिनाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

चरण-कमल जिनेराज का, जामें मुंज मन लीन ।

मधुकर जिहां गुञ्जत रहै, ज्ञानामृत रस पौन ॥ १ ॥

नाभेयादिक जिनेश्वरा, तीर्थङ्कर खोबोस ।

गणधर पाठक साधु पद, ध्यावत विश्रवावीस ॥ २ ॥

जिनवर भाषित शुद्ध नय, आगम-उद्दिष्ट अपार ।

धर्मत दूष कलि काल में, जिन प्रतिमा आधार ॥ ३ ॥

स्वर्ग निवासी देवगण, खलि पाताल कुसार ।

साश्रित जिन प्रतिमा भणौ, नित प्रति करत जुहार ॥ ४ ॥

एहवै प्रतिमा जिन तथौ, प्रणमी तेहना पाय ।

पंच लिखूं अति प्रेम सैं, मुनिवर ना गुण गाय ॥ ५ ॥

क्रोध लोभ मद मोह सबे, त्यागी विषय विकार ।

जीतसल महाराज कूं, नमत सकल नर नार ॥ ६ ॥

दोष बंयालीस टालतैं, लेतैं शुद्ध आहार ।

भविजन कूं प्रतिबोधता, विचरै धरा मजार ॥ ७ ॥

॥ सौरठा ॥

तीन करण धिर धार, जीते बावीस परिसहं ।
जपते दिल नवकार, शुद्ध करि सज्जन निरवहै ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

सतावीस गुणे करौ, पालो निज आचार ।
पञ्च महाव्रत पालता, एहवा तुम अणगार ॥ ९ ॥
निरजित मंद उनमोद पणो, वर्जित विषय विकार ।
तर्जित कर्मदिक्क अशुभ, गर्जित नाण उदार ॥ १० ॥
शहर लाडनू अति भलो, विचरो तिहां धर नेह ।
अप्रति वन्द्य बिहार करी, बैठा सभ्वर गेह ॥ ११ ॥
तुम गुण गणमकरन्द से, भविजन भ्रमर लोभाय ।
देश विदेश मानवी, कर जोड़ी गुण भाय ॥ १२ ॥
मैं प्रिण गुण श्रवणे सुणी, भेटण कौ मन चाय ।
ते दिन सफल गौणिस हूँ, वन्दौ तुमरा पाय ॥ १३ ॥
कर्म ईधन कूँ जालवा, प्रत्यक्ष अग्नि समान ।
इन्द्रिय पांचु वश करी, एहवा तपकौ खान ॥ १४ ॥
गुण सगला तुम अङ्ग में, दीखत है प्रत्यक्ष ।
आगम अर्थ विचार कै, किम ताणो ब्रह्म ॥ १५ ॥

पक्ष पक्ष काष्ठ मत करो, ज्ञान दृष्टि मनलाय ।
 जिनवर प्रतिमा देखतां, दुःख दोह्य टल जाय ॥१६॥
 चार निक्षेपा जिन कक्षा, भाव स्थापना नाम ।
 सप्त नय करी देखल्यो, वरणन ठामों ठाम ॥१७॥
 अम्बड श्रेणिक राय तिम, रावण प्रमुख अनेक ।
 विवध परै भक्ति करी, पाम्या धर्म विवेक ॥१८॥
 पञ्चम अगे भाषियो, प्रगट पणै अधिकार ।
 सूर्याभि जिन वन्दिया, राय प्रश्रेणी मजार ॥१९॥
 विजय देवताये करी, जिन पूजा जिनराज ।
 पक्षपात कूँ छोड़के, सारी आतम काज ॥२०॥
 कठै ज्ञाता अङ्ग में, द्रौपदी पाण्डव नार ।
 मन वच काया वश करी, पूज्या जिन इकतार ॥२१॥
 जङ्गा विद्या चारणा, मुनिवर गुणकी खान ।
 ते पिण प्रतिमा वन्दता, पञ्चम अङ्ग बखान ॥२२॥
 जिन प्रतिमा जिन सारखी, भाखी श्री महावीर ।
 कोई शङ्का मत आणज्यो, जिम पामो भव तीर ॥२३॥
 जिनवर मत स्थावाद है, मत जाणो करी एक ।
 दया दान मन धारल्यो, जद आवै विवेक ॥२४॥
 जीव दया पाल्यां यकां, निश्चै होय उपागर ।
 दया धर्म की मूल है, एहवो आगम सार ॥२५॥

घातः करन्ता जीव कौ, छोडावै कोई जाय ।
 अभय दान तेहने कछो, आगम में जिनराय ॥२६॥
 ज्यो न कुडावो जीव कूं, तो अनुकम्पा नांय ।
 अनुकम्पा बिन जीवकौ, समकित पुष्टि न थाय ॥२७॥
 गोशाली जलता थकां, जिनजी दियो विचार ।
 सीतल लेश्याये करी, तेजु लेश्या वार ॥२८॥
 ज्याने कहता चूकिया, ते तो मिथ्या वात ।
 कल्यातीत स्वभाव है, तीन लोक के नाथ ॥२९॥
 नेम कुंवर तोरण चढ्यां, देखी जीव विनाश ।
 अनुकम्पा मन लायके, छोड़ाई प्रभु पास ॥३०॥
 आप बड़ अणगार हो, पिण ये मोटी खोट ।
 ज्यो नवि जीव दया करो, बंधै पाप शिर मोट ॥३१॥
 पञ्च अधिकं चालीस तो, कछा सूत्र जिनराय ।
 द्वातिंस तुम मानता, कुण हेतु के न्याय ॥३२॥
 भाख्या नहि सूत्र मे सहु, आगम के नाम ।
 ते वत्तीसां बीच है, देखो चित करी ठाम ॥३३॥
 सांचा वत्तीस मानता, और न मानो सांच ।
 कै कोई प्रगख्यो ज्ञान तुम्ह, अथवा मनकी खांच ॥३४॥
 सत्य परुपणा ज्यो करो, तो मानो महाराज ।
 गहन अर्थ आगम तथा, भाष्या श्री जिनराज ॥३५॥

मुखपती मुख बांधता, कौन सूत्र अनुसार ।
 मन को भ्रमतां मिटौ नहि, ऐर विषम प्रकार ॥३६॥
 श्लेष्मा के संजोग सुं, उपजत जीव असख्य ।
 जीव समृद्धि इन्द्रियन, ग्रामे नहिं को बंक ॥३७॥
 गणधर गौतम स्वाम कूं, मिया देवी कह्यो एम ।
 मुख बांधो वस्त्रे करी, गन्ध न आवै जेम ॥३८॥
 ज्यो पह्लां बंधी हुन्ती, बलि बंधन किम होय ।
 एह त्यतिकर तुम जाणजो, सूत्र विपाकी जोग ॥३९॥
 जन्मा किंका कोरणै, मुख ठांको मुनिराय ।
 दृशत्रैकालिक सूत्र में, देखो मन चितलाय ॥४०॥
 सूत्र सबे तुम देखल्यो, बंधन का नहिं पाठ ।
 भगवती ज्ञाता आदि में, साख सूत्र को आठ ॥४१॥
 इत्यादिक सूत्रां तणा, मानो नही वचन ।
 आप मतै नही मानता, करल्यो लाख जतन ॥४२॥
 लिख्या अजमीगंज शहर सुं, पद अधिक उच्छरद ।
 खमत खासणा मानज्यो, करि तीन करण इक संग ॥४३॥
 मुनि शुण अति मुज अल्प धी, कैसे लिखूं बंणाय ।
 जैसे जल सब उदधि को, घट बिच नहिं समाय ॥४४॥
 कुशल खेम वरतै तिहीं, धर्म यकी जयकार ।
 इच्छां पिण सुगुरु पयास थी, आनन्द हरष अपार ॥४५॥

भक्ति पत्र भावै लिख्यो, धरज्यो चित अधिकाय ।
 अधिको ओछो ज्यो हुबै, ते खमज्यो मुनिराय ॥४६॥
 लिखज्यो उत्तर एहनो, मत धरज्यो मन रीस ।
 मुज मति साहू में लिख्यो, धरज्यो मन मुजगीश ॥४७॥
 एहवि परुपणा ज्यो करो; तो होय लाभ अपार ।
 मुग्ध जौव संसार का, उतरै पैलै पार ॥४८॥
 देखो बूटे रायजौ; तिम वलि आतमराम ।
 त्यागी मन भ्रम आपणो, साखा भविजन काम ॥४९॥
 थावो ज्यो तुम एहवा, आगम अर्थ विचार ।
 मारवाड टूटाड में, बहु जन पामै पार ॥५०॥
 सकल सङ्ग श्रावक सहु, वांची ज्यो धर प्रीत ।
 उत्तर पाछो अपाविज्यो, ए पण्डित जन रीत ॥५१॥
 मुनिवर ना गुण गांवितां, होता चित आराम ।
 मन तन कपट तजी करी, वन्दत कालूराम ॥५२॥

॥ कलशः ॥

इम करी रचना अति ही सुन्दर, वांचता मन उल्लसै ।
 देवाधि देवतिलोय स्वामी अन्तर जामी मन वसै ॥
 संबत उगणीस साल तेतीस मास आश्विन सुद पखे ।
 मुनि विनयचन्द पसाय करी ने, गोपीचन्द इम उपदिशै ॥

पूर्वोक्त प्रश्न पत्रिका अजीमगञ्ज से लाइनू आई सो वहाँ के श्रावकों ने महाराज से मालूम करो तब स्वामी ने हित शिक्षावली प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध बनाया जिस को श्रावकों ने कण्ठाग्र धार के लिखाकर अजीमगञ्ज बाबू कालूरामजी के पास भेजा था ।

यह प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध सूत्रों के प्रमाणों सहित जिन प्रणीत वचनों को यथा तथ्य बताने वाला और आत्मार्थी भव्यों को लाभदायक है इस को बाँचने से निष्पक्षी हलु कर्मों जीव जिन मारग को सहज में अच्छी तरह जान कर यथाशक्ति व्रत पञ्चखाण अङ्गीकार करके अपनी आत्मा का कल्याण कर सकते हैं ; जो राग द्वेष रहित वीतराग कथित मार्ग है जिस आत्मार्थी को पुद्गलीक सुखों से अरुचि है उन्हीं के लिये यह ग्रन्थ मानो अमृत समान मिष्ट है । इसमें से कितनेक दोहा आगे श्री० श्वेतसी जीवराज ने मुम्बई में एक पुस्तक में छपाए थे परन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थ यह आजतक छपा नहीं अब शहर जयपुर में निम्न लिखित श्रावकों ने धासा जिन्हों के नाम ।

गणेशीलालजी सीधड़,

जोरावखलजी बाँडिया,

गुलाबचन्द लूणियाँ,

सुजानमलजी खारेड,

चन्दनमलजी दुगड,

नार्यूलालजी सरावगी,

उपरोक्त पाँचों श्रावकों के पास से पत्र लेकर मैंने संग्रह करके लिखा और सर्वसाधारण को लाभ पहुँचाने के निमित्त मेरी लघु बुद्धि प्रमाण शुद्ध करके छपाया है, यदि कोई अक्षर या लघु दीर्घादि मात्रा की गलती रही होय उसका मुझे बारम्बार मिच्छामि बुकड है परिडित और गुणी जनों से मेरी यही प्रार्थना है कि कोई अशुद्धि रही हो इस के लिए क्षमा चाहता हूँ ।

आप का हितेच्छु और गुणवानो का दास,

श्री० जौहरी० गुलाबचन्द लूणियाँ जयपुर ।

प्रश्नोत्तर तत्वबोध

॥ दोहा ॥

नमूं देव अरिहन्त नित, जिनाधिपति जिनराय ।
 द्वादश गुणें सहित जे, वन्दूं मन बच काय ॥ १ ॥
 नमूं सिद्ध गुण अष्ट युत, आचार्य मुनिराज ।
 गुण षट्तीस संयुक्त जे, प्रणमूं भव दधि पाज ॥ २ ॥
 प्रणमूं फुन उवज्झाय प्रति, गुण पणवीस उदार ।
 नमूं सर्व साधु निमल, सप्तबीस गुण सार ॥ ३ ॥
 द्वादश अठ षट्तीस फुन, वलि मणवीस प्रगट्ट ।
 सप्तबीस ये- सर्व हौ, मुणवर इकशय अट्ट ॥ ४ ॥
 नवकरवाली नां जिकी, मिणियां जगति मभार ।
 एक एक जे गुण तणो, इक इक मिणियो सार ॥ ५ ॥
 इकसौ अठगुण सहित ए, परमेष्टी पद पंच ।
 ते तो भाव निचेप हैं, हूं प्रणमूं तज खंच ॥ ६ ॥
 ए सह नें प्रणमी करी, सखर समय रस सार ।
 तत्व बोध अविरोध तर, आखूं अधिक उदार ॥ ७ ॥

॥ इति मङ्गलाचरणम् ॥

॥ अथ प्रथम विजयसूर्याभाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै जे विजय सुर, बलि सूर्याभ विचार ।
 प्रतिमा नौ पूजा करी, हिव तसु उत्तर सार ॥ १ ॥
 प्रतिमा पूजौ विजय सुर, जीव अनन्तौ वार ।
 विजय पणै सहु जपना, पास्यां नहिं भव पार ॥ २ ॥
 शक्र सामानिक संगमो, देवलोक स्थित हैत ।
 पूजै जिन प्रतिमादि ते, राज बैसतां तेह ॥ ३ ॥
 तिमझिज सूर्याभादि सुर, राज बैसतां तेह ।
 प्रतिमा पूतलियादि प्रति, बहु वाना पूजेह ॥ ४ ॥
 सूर्याभे सुरलोक नौ, स्थिति ना वश थी जाण ।
 पूजा जिन प्रतिमा तणौ, कीधी कहौ पिछाण ॥ ५ ॥
 हस्ति ओघ नियुंक्ति नौ, तेह विषै ए ख्यात ।
 आचार्य गन्ध हस्त कृत, है तिहां बहु अवदात ॥ ६ ॥
 मिथ्याती वा समकितौ, विमान अधिपति देव ।
 देवलोक नौ स्थित हुन्तौ, प्रतिमादि पूजेव ॥ ७ ॥
 समदृष्टि पूजै तिमज, मिथ्याती पूजंत ।
 देवलोक नौ स्थित वशात्, पिण धर्म कार्य नहिं हुन्त ॥ ८ ॥
 सूर्याभे जिन बन्दियां, प्रभु षट वच आख्यात ।
 यह पुराण आचार तुम्ह, जीत आचार सुजात ॥ ९ ॥

यह तुम्हारी कार्य है, बलि तुम्ह करवा योग ।
 ए तुम्हने आचरण है, है मुक्त आण आरोग ॥१०॥
 नाटक नौ पूछा करी, तिहां आदर न दियो खाम ।
 मन में भलो न जाणियो, प्रगट पाठ में ताम ॥११॥
 बलि मौन राखी प्रभू, देखो पाठ प्रसिद्ध ।
 के भाव निजेपै आगलै, नाटक आण न दीध ॥१२॥
 बलि मन में भलो न जाणियो, ए पिण पाठ मभार ।
 आज्ञा विन नहिं धर्म पुण्य, देखो आंख उघार ॥१३॥
 तो तास स्थापन आगलै, आज्ञा किम दे वीर ।
 यह न्याय है पाधरो, धारो धर चित धीर ॥१४॥

॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय द्रोपदी अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै समकित कृतां, दुपद सुता अवलोक्य ।
 प्रतिमा नौ पूजा करी, तसु उत्तर हिव जोय ॥ १ ॥
 वृत्ति ओष निर्युक्ति नौ, गंधहस्त कृत मांथ ।
 ओ इक पुत्र यथां पकै, द्रोपदी समकित पाय ॥ २ ॥
 पूर्व कृत निदान करी, प्रेरी कृती सु आय ।
 पांच पाण्डव त्यां द्रोपदी, कछो मुज्ञाता मांथ ॥ ३ ॥

आशातनात्सम्यक्भाव अतः एव द्रौपदी न सम्यक्त्व धारणी संभाव्यते पुनः ओघ निर्युक्ति चिरंतन टीकायां गंधहस्त्याचार्येण उक्तं द्रौपद्या नृप पुत्रिका निदान कृति भर्तार पंचस्यछेता निदान भोजितवान् जातैक पुत्रः पुनः पाश्चात्साधू सकाशमाप्य प्रवरं सम्यक्त्व मार्गो धरते ॥ इति ॥

॥ एहं अथ वार्त्तिका करी कहै छै ॥

इहाँ कह्यो द्रव्य लिङ्गी परिगृहीत चैत्यप्रति प्रतिमा ते स्युं सम्यक् द्रष्टि संभावित नही ते किण कारण थकी इसो कोई प्रश्न पूछे तेहनुं उत्तर द्रव्य लिङ्गी मिथ्या द्रष्टि छै ते कारण थकी जो इम छै तो दिगम्बर सम्बन्धी चैत्य प्रतिमा स्युं सम्यक् द्रष्टि संभावित नहीं ए सत्य जो ए सत्य तो स्वर्गलोक ने विषे साखता चैत्य सूर्याभादि देवता समद्रष्टि पूजे ते माटे ये पूर्वा पर विरुद्ध नही हुबै काँई एहवी तर्क कीधै छतै हिव एहनुं उत्तर कहै छै, सूर्याभादि देव स्वर्गलोक ने विषे साखता चैत्य पूजे ते कल्प देवलोक नी खित बस अनुरोध थकी इण कारण थकी ज विरुद्ध नहीं हुबै जो इम छै तो द्रौपदी समकित धारी चैत्य ने नमस्कार कियो ते स्युं द्रव्य लिङ्गी परिगृहीत न हुई काँई एहवी तर्क कीधै छतै हिव एहनुं उत्तर कहै छै । द्रौपदी समकित धारणी न हुई इम कहै छतै बलि पूछ्यो द्रौपदी समकित धारणी किम नहीं, तेहनुं उत्तर । ओघ निर्युक्ति ने विषे इम कह्यो खोजन ने स्पर्श साधू ने त्रिविध २ वरजवो साधू ने अकल्पनीय कर्म आचरवा थकी समकित नुं अभाव हुबै ते कारण थकी साधू ने स्त्री जन नुं स्पर्श त्रिविध २ वरजवू द्रौपदी आगम ने विषे साँभलो ये छै “लोमहृत्पं परामूर्ख” लोमहस्त करिके फरसै पूजे इत्यर्थ, ते पूजवे करी जिन नुं स्पर्श हुबै जिन ने स्त्री जन स्पर्शवे करी अशातना हुबै आशातना करिवे करी समकित नुं अभाव इण कारण थकी द्रौपदी समकित धारणी न संभाविये, बलि ओघ निर्युक्ति नी चिरंतन टीका ने विषे गन्धहस्त आचार्ये कह्यो द्रौपदी नृप पुत्री निहाणानी करण हारी

ते माटे ये द्रोपदी, निदान विन पूरेह ।
 प्रतिमा पूजी तिण समै, समकित किम धामेह ॥१४॥
 ज्ञाता वृत्ति विषे कछ्छ, एक वाचना मांहि ।
 द्रोपदी जिन प्रतिमा तणी, अरचा कीधी ताहि ॥१५॥
 दीसै येतोहिज हम कछ्छो, तेह वृत्तिरै मांहि ।
 नमुंत्थुणं नुं पाठ त्यां, आम्ह्यो दीसै नांहि ॥१६॥

॥ वार्त्तिका ॥

कोई कहै द्रोपदी समकित धारणी प्रतिमा क्यूं पूजी ॥तंह नुं उत्तर॥
 ओघ निर्युक्ति ग्रन्थ नें अभिप्राय द्रोपदी प्रतिमा पूजी तिण वेल्ह्यां सम्यक्
 धारणी नहीं ते देखै छै; “दम्वं मि जिणहरा” इति व्याख्या ॥ ओघ
 निर्युक्ति रखाख्येयं ॥ द्रव्यलिङ्गी परिग्रहितानि चैत्यानि किं सम्यग्दृष्टिर्न
 संभावितानि इति कस्मात् द्रव्यलिङ्गी मिथ्यादृष्टित्वात् ॥ यद्येवं तर्हि
 दिगम्बर संबंधीनि चैत्यानि किं सम्यक्दृष्टी न संभावितानि एतत्सत्यं
 यद्ये तत्सत्यं तर्हि स्वर्गलोकेषु सास्त्रतानि चैत्यानि सूर्या भाद्यादेवाः
 सम्यक्दृष्टयः प्रपूज्यते तच्चैत्यानि संगमवत् अभव्य देवाः मदीयं मिति
 बहुमानात् प्रपूज्यंति पूर्वा परं विरुद्धं न स्यात् ननुसूर्या भाद्यादेवाः
 नटकलस्थिति वसानुगोचान् अतः एव विरुद्धं न संभवति यद्येवं तर्हि
 द्रोपद्या सम्यक् धारण्यायानि चैत्यानि नमस्कृतानि किं द्रव्यलिङ्गी परि-
 ग्रहितानि न भवन्तीत्याह द्रोपदी न सम्यक्ध्वं धारणी म्यात् ॥ ओघ
 निर्युक्त्या इत्युक्तं ॥ इत्यी जण सघट्ति विविहं तिबहेणं वज्र प साहु
 इति वचनात् ॥ श्री जनस्पर्शो त्रिविधः त्रिविधेन साधूनां वर्जनीयः
 साधोश्च अकल्पनीयः कर्माचारतः सम्यक्भाधान् द्रोपदी आगमेषु श्रूयते
 ॥लोमहर्ष्येयं परामुसई ॥ लोमहस्ते न परामृशति परामार्जयतीत्यर्थः तत्
 परमार्जने न जिनस्पर्शो जात जिनस्य श्री जनस्पर्शे न आगातनास्यात्

विजय विषै ज्यो वर्त्ता, वंदै डक जिनराय ।
 तो पिण जे चौबीसत्यो, किण विध कहिये ताथ ॥८॥
 विदेह जेव ना मुनि करै, द्वितीय आवश्यक जेह ।
 विचला जिन बावीस ना, मुनि पिण तिमहिज करेह ॥९॥
 बैठक नूँ तमु नियम नहौ, पिण ज्यो किणहिकवार ।
 मडिकमणा मे स्युं करै, द्वितीय आवश्यक सार ॥१०॥
 ज्ञाता अध्ययने पञ्चमें, शैलक ऋषि ना पाय ।
 पथक मडिकमणो करत, वांछा आख्या ताथ ॥११॥
 ते माटे जे 'जिन हुवै तेह तणो ले नाम ।
 द्वितीय आवश्यक नुं तदा, नाम उक्किता ताम ॥१२॥
 जिन चौबीस तणों जिज्ञां, नियम नहौ छै ताम ।
 तिण सुं चौबीसथा तणें, स्थान उत्कीर्त्तन नाम ॥१३॥
 अनुयोग द्वार यिवै अमल, आवश्यक षट मांय ।
 अर्थ तणां अधिकार षट, आख्या श्री जिनराय ॥१४॥
 द्वितीय आवश्यक नै विषै, उत्कीर्त्तन आख्यात ।
 कछु अर्थ अधिकार ये, जिन गुन नाम विख्यात ॥१५॥
 विदेह जेव मे मुनि तणै, द्वितीय आवश्यक जान ।
 ख ख जिन गुन नाम ते, उत्कीर्त्तन अभिधान ॥१६॥
 जेह विजय नहौ जिन तदा, द्वितीय आवश्यक मांछि ।
 पूर्व जिन गुन नाम ते, इसो सभवै ताहि ॥१७॥

तिणे भर्तार पंच ने बरी निहाणो भोगत्री एक पुत्र थर्या पछे साधू
समोपे समकित पार्मी एहवो ओच निर्युक्ति नो टीका नै विपे गन्धहस्त
आचार्य कह्यो ते मिस्थ्यात्त्व ना घश थकी पुण्यादिक करी प्रतिमा
पूजी ।

॥ अथ तृतीय निक्षेपा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै बाबीस जिन, तसु मुनि प्रतिक्रमणेह ।
किस्युं करै चौबीस्यो, द्वितीय आवश्यक जेह ॥ १ ॥
तसु कहिये महाविदेह ना, मुनि प्रतिक्रमण विषेह ।
द्वितीय आवश्यक स्युं करै, न्याय विचारो लेह ॥ २ ॥
नहो तिहां अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी पिण नाहि ।
ते माटे नहिं षट अरा, सम अज्ञा कहि वाहि ॥ ३ ॥
तिहां अनन्ता शिव गया, जासे मुक्ति अनन्त ।
मेल नही चौबीस नुं, देखोजी बुद्धिवन्त ॥ ४ ॥
इक इक विजय विषे बली, एक एक जिनराज ।
वर्तमान काले ह्वै, उत्कृष्ट पणै समाज ॥ ५ ॥
हिव ते क्षेत्र विदेह ना, जिन यया सिद्ध अनन्त ।
तसु बाद्यां चौबीस नौ, संख्या नथी रहन्त ॥ ६ ॥
थासे सिद्ध अनन्त जिन, तसु बंदै जे कोय ।
तो पिण जिन चौबीस नौ, संख्या न रहै सोय ॥ ७ ॥

વિદેહજેત્ર મે વૌસ જિન, તસુ મુનિ સ્વ જિન નામ ।
 અર્થ તણા અધિકાર કરિ, તે ઉત્કૌર્તન તામ ॥૨૮॥
 સૂત્ર ઉવવાઈ ને વિષે, તપ ના દ્વાદશ મેદ ।
 તૃતીય મેદ ભિજ્ઞાચરૌ, વારં નામ સવેદ ॥૨૯॥
 સમવાયંગ વિષે કહ્યા, વારૈ મેદ અભિરામ ।
 ભિજ્ઞાચરૌ ને સ્થાન જી, વૃત્તિ સંજ્ઞેપ સુ નામ ॥૩૦॥
 ભિજ્ઞાચરૌ ના નામ વે, દ્વિતીય આવશ્યક તેમ ।
 ઉત્કૌર્તન ચોવીસથો, ઉભય નામ તસુ એમ ॥૩૧॥
 નવમા જિન ના નામ વે, સુવિધ અને પુષ્પદન્ત ।
 આહ્યા લૌગસ મૈં પ્રગટ, દેખોજી બુદ્ધિવન્ત ॥૩૨॥
 પુષ્પ સરિસા દન્ત તસુ, પપ્પ દન્ત અભિરામ ।
 દ્રુમ અર્થ તણા અધિકાર કરિ, ઉત્કૌર્તન પિણ નામ ॥૩૩॥
 કૃષ્ણા અને વલ્લભદ્ર નો, કૈશવ રામ આહ્યાત ।
 ઉત્તરાધ્યયન બાવીસમેં, તિમ દ્વિતીય આવશ્યક રહ્યાત ॥૩૪॥
 કિહાં ચ્યાર મહા વ્રત કહ્યા, તાસ કહ્યા ચિહું યામ ।
 ઉત્તરાધ્યયન તેવૌસ મેં, કૈશી મુનિ ગુણ ધામ ॥૩૫॥
 દ્વિતીય આવશ્યક ના તિમજ, ઉભય નામ અવલોય ।
 ઉત્કૌર્તન ચોવીસથો, સદ્દુ ભાવે જિન જોય ॥૩૬॥
 ચૌવીસમ જિન ના મુનિ, કારૈ ચોવીસથો તામ ।
 વિદેહ તેવૌસ તણા મુનિ, ઉત્કૌર્તન જિન નામ ॥૩૭॥

विचला जिन बाबीस ना, मुनि ने खजिन नाम ।
 उत्कौर्त्तन अभिधान तसु, द्वितीय आवश्यक ताम ॥१८॥
 धुर जिन ना मुनि लै तिमज, खजिन गुन फुन नाम ।
 द्वितीय आवश्यक संभवै, उत्कौर्त्तन अभिराम ॥१९॥
 वा धुर जिनना मुनि तणै, चोबीस्थो ज्यो होय ।
 तो गत चौबीसौ हर्द, जाणै किवली सोय ॥२०॥
 यथा नही चोबीस जिन, तसु बारै अवलोय ।
 द्वितीय आवश्यक ने विषै, चोबीस्थो किम होय ॥२१॥
 चोबीसमा शासण धणी, तेह तणौ अपेचाय ।
 आखुं कै चोबीस्थो, द्वितीय आवश्यक मांय ॥२२॥
 द्वितीय आवश्यक ना कछा, उभय नाम अवलोय ।
 उत्कौर्त्तन चोबीस्थो, तसु हेतु हिव जोय ॥२३॥
 पञ्चम अंगे धुर कछूँ, इन्द्रभूति सुप्रसिद्ध ।
 वृत्ति विषै कछो नाम ये, मात पिता नूं दोध ॥२४॥
 गौतम गौत कवि तसु, गौतम नाम कहाय ।
 उत्तराध्ययन तेबीस मे, गाथा छट्टी मांय ॥२५॥
 तिम जिनवर चोबीसमा, तसु बारै अवलोय ।
 गुणै नाम चोबीस जिन, ते चोबीस्थो होय ॥२६॥
 ते चोबीस्था नै विषै, उत्कौर्त्तन अभिराम ।
 अर्थतणा अधिकार कै, पिण मुख्य चोबीस्थो नाम ॥२७॥

तिम जे कोर्बे ब्रह्म मुनि हुस्ये, पिण हिवडां ग्रहस्थ पणोह ।
 कहिये द्रव्य साधू तसु, आवश्यकवत् एह ॥४८॥
 जो बन्दो द्रव्य निक्षेप ने, तो तिण द्रव्य मुनि रा पाय ।
 तुमे बन्दता क्युं नथौ, तुम अङ्गारै न्याय ॥४९॥
 चौबीसौ वर्तमान ने, बन्दे बहु ठामेय ।
 अनागत बांदा नथौ, देखो तुर्य अंगेय ॥५०॥
 तृतीय निक्षेपो द्रव्य तसु, गणधर बंदो नांहि ।
 तो द्वितीय निक्षेपो स्थापनां, किम बंदौ जे ताहि ॥५१॥
 द्रव्य तीर्थंकर कृष्ण था, दौधो नेम बताय ।
 नेम तणा साधु साध्व्यां, त्यां क्युं नही बंदा पाय ॥५२॥
 उलटो कृष्ण भणौ तिणां, दौधो पगां लगाय ।
 तो चौबीसो करतां कृतां, किम बदै मुनिराय ॥५३॥
 द्रव्य जिन श्रेणिक नृप हुंतो, दौधो बौर बताय ।
 बौर तणां साधु साध्वियां, त्यां क्युं नही बंदा पाय ॥५४॥
 तीर्थंकर बन्दन तणुं, तसु राण्यां रै चाहि ।
 तो कृष्ण अने श्रेणिक तणा, त्यां क्युं नही बंदा पाहि ॥५५॥
 उलटौ करौ विडम्बना, जाणौ ने भरतार ।
 तो चौबीसो करतां कृतां, किम बदै अणगार ॥५६॥
 जिन बन्दै तिहुं काल नां, नमोत्युणं रै अन्त ।
 किणौ सूत्र में ते नही, देखोजी बुद्धिवन्त ॥५७॥

मुक्त ने भ्यासै एहवा, बाहु न्याय विचार ।
 वलि केवली जे बदै, तेहिज सत्य उदार ॥३८॥
 भाव निक्षेपै भरत नी, चौबीसौ वर्त्तमान ।
 पाठ बदे बहु ठाम छै, लोगस मांहि मुजान ॥३९॥
 भाव निक्षेपै ऐरवत, चौबीसौ वर्त्तमान ।
 पाठ बंदे बहु ठाम छै, समवायंगे जान ॥४०॥
 चौबीसौ भरत ऐरवत, अनागत जिन नाम ।
 द्रव्य निक्षेपी तुर्य अह, बंदे पाठ न ताम ॥४१॥
 अष्ट अने चालीस ना, वर्त्तमान जिन नाम ।
 भाव निक्षेपो ते भणौ, पाठ बंदे बहु ठाम ॥४२॥
 अष्ट अने चालीस ना, अनागत जिन नाम ।
 द्रव्य निक्षेपो ते भणौ, बदे टाल्यो स्वाम ॥४३॥
 द्रव्य निक्षेपै एह जिन, गणधर बंदा नांहि ।
 तो चौबीस्थो करतां छतां, द्रव्य जिन किम बंदाहि ॥४४॥
 तीर्थंकर घर में छतां द्रव्य निक्षेपै जेह ।
 तेहने मुनि बदै नही, तुम्ह लेखै पिण तेह ॥४५॥
 तो होनहार जिनवर भणौ, चौबीस्था विषेह ।
 मुनिवर किम बंदै तसु, न्याय विचारी लेह ॥४६॥
 वलि कछो अनुयोग द्वार में, जे आवश्यक नूँ जान ।
 होस्यै पिण न ययो हजी, ते द्रव्य आवश्यक पिछाण ॥४७॥

કોર્ડ કહે આચાર્ય ના, ઉપાધ્યાય ના તાહિ ।
 ઉપગણ ની આશાતના. કહિ ટાલવી કાહિ ॥૬૮॥
 જ્ઞાન દર્શન ચારિત તથાં, તેહ ઉપધિરૈ માંહિ ।
 કીહવા ગુણ છે તે ભણી, ઉપધિ સઘટવું નાંહિ ॥૬૯॥
 નવમેં દશવૈકાલિકૈ. દિતીય ઉદ્દેશે સ્થ્યાત ।
 દ્રમ કહે ઉત્તર તેહનું, સાંભલજો અવદાત ॥૭૦॥
 સૂત્ર વિષે તો દ્રમ કહ્યો, ગુરુ કાયાદ્રં કરેહ ।
 તિમહિજ ગુરુ નાં ઉપધિ કરિ, સઘટે થયે છતેહ ॥૭૧॥
 મુક્ત અપરાધ ખમો તુમ્હે, વલિ ન હૂં કરું કોય ।
 દ્રમ ભાષે મુવિનીત શિષ્ય, તાસ ન્યાય હિવ જોય ॥૭૨॥
 આચાર્ય નાં ઉપધિ એ, તાસ પ્રયોગે આય ।
 જિમ ગુરુ કૈ સહવર્તી તનું. તેમ ઉપધિ પ્રિણ તાય ॥૭૩॥
 ભાવ નિક્ષેપે ગણપતિ, તાસ ઉપધિ તનુ જીમ ।
 તાસુ સઘટ્ટયયાં ચામવું, આશ્યું સૂત્રે એમ ॥૭૪॥
 થયુ વલિ અપરાધ મુક્ત, ખમું તુમ્હે અવલોય ।
 એ બચ પ્રત્યક્ષ ગુરુ તણે, ન્યાય વિચારી જોય ॥૭૫॥
 જો ચમાયવો હુવે ઉપધિ ને. તો દેખો ચિત દેહ ।
 બન્દના કરો ચમાયવે. ઉપગણ સ્યું જાણેહ ॥૭૬॥
 યે તો ઉપધિ સહિત જી, આચારજી ની જોય ।
 કહી અશાતના ટાલવી, મયી અન્યથા કોય ॥૭૭॥

जे कोई जीव अजीव नूँ नाम आवश्यक देह ।
 ते आवश्यक नों प्रभु, नाम निक्षेप कहेह ॥५८॥
 अनुयोग द्वार विषै ब्रह्म, प्रगट पाठ पहिछाण ।
 तिमहिज तीर्थकर तणूं, नाम निक्षेपो जाण ॥५९॥
 जिम कोई जीव अजीव नूँ, ऋषभ नाम कै केह ।
 ऋषभ देव भगवान नो, नाम निक्षेपो तेह ॥६०॥
 जो बांदो नाम निक्षेप ने, तो तिण ऋषभारा पाय ।
 क्युं नहिं बांदो को तुम्हे, तुम्ह अज्ञा रै न्याय ॥६१॥
 किण रो नाम दियो बली, अरिहन्त ने भगवान ।
 नाम अरिहन्त बन्दो तुम्हे, तो क्युं नहिं बन्दो जान ॥६२॥
 सिद्ध निरञ्जन नाम पिण, दोसै बहु जग मांहि ।
 नाम सिद्ध बन्दो तुम्हे, तो क्युं नहिं बन्दो पाहि ॥६३॥
 केद्वक मनुषां रा कारटा, ते पिण बाले आचार्य ताय ।
 बन्दो नाम आचार्य तुम्हे, तो क्युं नहिं बंदो पाय ॥६४॥
 केद्वक ब्राह्मण लोक मे, बाले कै उपाध्याय ।
 नाम उपाध्याय बंदो तुम्हे, तो क्युं नहिं बंदो पाय ॥६५॥
 जोगी सन्यासी प्रमुख, साधू नाम कहाय ।
 नाम साधु बांदो तुम्हे, तो क्युं नहिं बन्दो पाय ॥६६॥
 ज्ञान दर्शन चारित्र ना, गुण नही कै जे मांय ।
 तेह बंदवा योग किम, निमल विचारो न्याय ॥६७॥

ज्ञान दर्शन चारित तणा, तिणमें गुण नहिं कोय ।
 तिणमुं दहन क्रिया कियां, अशातना नहिं होय ॥८८॥
 करौ स्थापना तेहने, वांदा कहो छो धर्म ।
 तो ए सागे तनु वालियां, लागै आशातना कर्म ॥८९॥
 आवश्यक नो जाण थो, काल कियो तिहवार ।
 द्रव्य आवश्यक तनु कछो, देखो अनुयोग द्वार ॥९०॥
 तिम मुनि काल कियां कृतां, जीव रहित जे देह ।
 द्रव्य साधु कहिये तसु, न्याय विचारौ लेह ॥९१॥
 वन्दनीक द्रव्य मुनि कहो, तो तुझ लेखे ताय ।
 द्रव्य साधु वाल्यां कृतां, अशातना पिण थाय ॥९२॥
 जम्बूद्वीप पन्नती में कछो, जिन जनस्यां सुर राय ।
 जन्म भुवन जिनवर तणा, तसु प्रदक्षिणा दे आय ॥९३॥
 जिन ने वा जिन मात प्रति, प्रदक्षिणा दण वार ।
 देई कर जोड़ी करी, वदे शक्र अवधार ॥९४॥
 हेधरण हारौ रतन कूचिनी, यावो तुझ नमस्कार ।
 इह विध सुरपति ऊचरै, ए पिण जौत आचार ॥९५॥
 इण लेखे मरु देवी प्रति, इन्द्र कियो नमस्कार ।
 पिण समर्पित किय पै लही, वारुं न्याय विचार ॥९६॥
 ग्रहस्थ पणै जिन जनक ना, पद ग्रणमै अवलोय ।
 लौकिक हेतु जाणवुं, धर्म हेतु नहिं कोय ॥९७॥

सयनाशन गणपति तणां, तास संघट्टवं नाहि ।
 तेहिज आचार्य विहार करि, गया डुवै जो ताहि ॥७८॥
 सयणाशन तेहिज तव. शिष्य सेवै के नाहि ।
 भोगवियां आशातना. लागै के नहि ताहि ॥७९॥
 जे पृथिवी शिल ऊपरै, बैठा श्री भगवान ।
 कालान्तर गोयम सुधर्म, बैठे के नहीं जान ॥८०॥
 छायागणौ ना तनु तणौ, शिष्य अक्रमौ तास ।
 चालै के चालै नहीं, जोवो हिये विमास ॥८१॥
 तुम्ह लेखै छाया भणौ, आक्रमवं पिण नाहि ।
 संघटो पिण करवुं नहीं, गुरु छाया नुं ताहि ॥८२॥
 ते माटै ए स्थापना, वन्दन योग न होय ।
 ज्ञान दशन चारित्र तणा, तिणमें गुण नहिं कोय ॥८३॥
 अथवा आचार्य तणा, पगला तणौ पिछाण ।
 तुम्हे करो छे स्थापना, तेहने बन्दो जाण ॥८४॥
 तो चालै गुरु कीड शिष्य, गमन करन्ता जोय ।
 धरती ऊपर गुरु तणा, पगला मडै सोय ॥८५॥
 शिष्य ना पग ते ऊपरै, पडियां दण्ड स्युं आय ।
 वन्दनोक पगला कहौ, ते लेखै दण्ड पाय ॥८६॥
 चारित सहित जे गुरु भणौ, बदै तीरथ च्यार ।
 काल कियां तसु कायने, भस्म करै तिह वार ॥८७॥

तीर्थंकर जनस्यां पक्षे, ते पिण द्रव्य जिनराय ।
 भाव निक्षेपे तेहने, ग्रहस्थौ कहिये ताय ॥१०८॥
 तीर्थंकर दीक्षा लियां, तसु द्रव्य जिन कहिवाय ।
 भावे ते मोटा मुनी, बन्दनौक तसु पाय ॥१०९॥
 चौतीस अतिशय ओपता, वाणी गुण पैतौस ।
 केवल ज्ञान यथां पक्षे, भावे जिन जगदीश ॥११०॥
 बन्दनौक भावे मुनी, वलि भावे जिनराय ।
 ओलख ने जमियां यकां, मातिक दूर मुलाय ॥१११॥
 ॥ इति निक्षेपाधिकार ॥

॥ अथ चतुर्थम् अम्बडाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै अम्बड कह्युं, अरिहन्त विन अवलोय ।
 वलि अरिहन्त ना चैत्य विन, नथौ बंदवा मोय ॥ १ ॥
 प्रथम उपाङ्ग विषै बसो, आख्यो श्री जिनराय ।
 ते अरिहन्त ना चैत्य कुण, तसु उत्तर कहिवाय ॥ २ ॥
 अरिहन्त तो धुरपद विषै, प्रतिमा चैत्य कहाय ।
 तो मुनिवर नहौ बन्दवा, अन्य वर्ज्या तिण न्याय ॥ ३ ॥
 मुनि पद तो है पञ्चमो, ते धुरपद में नहौ आय ।
 तिण कारण अरिहन्त ना, चैत्य मुनि कहिवाय ॥ ४ ॥

ज्ञाता अध्ययन आठमे. मल्लिनाथ भगवान ।
 लागी पगां पिता तणै, लोकिक हेतै जान ॥६८॥
 मल्लिनाथ थया केवली, तठा पछै मा तात ।
 बाणी मुणी श्रावक थया, पाठ विषै अवदात ॥६९॥
 दूण लेखै मल्लि नो पिता, पहिलां श्रावक नांहि ।
 तास पाय प्रणम्यां मल्ली, धर्म नहीं तिण मांहि ॥१००॥
 तिम हिज द्रव्य जिनवर भणो, इन्द्र करै नमस्कार ।
 ए तसु जीत आचार कै, श्रीजिन आज्ञा बार ॥१०१॥
 जीव रहित जिन देहं ते, द्रव्य जिन तास कहैह ।
 ते बंदनीक किण विध हुवै, न्याय विचारौ लेह ॥१०२॥
 जो बन्दनीक ते द्रव्य हुवै, तो तुभ लेख कहैह ।
 तनु प्रते दग्ध कियां छतां, आशातन लागैह ॥१०३॥
 ज्यो द्रव्य निक्षेप बन्दो तुम्हे, तो जमाली आदि ।
 द्रव्य साधु कहिये तसु, बन्दो क्युं न संवाद ॥१०४॥
 भावै जे साधू हुन्तो, सेव्यो तिण अणाचार ।
 भाव निक्षेपो तसुगयो, कै गयो द्रव्य जिवार ॥१०५॥
 मुनि वैसे सेव्यो तिणे, अणाचार अवधार ।
 ते द्रव्य मुनि बन्दो कै नहिं, धर्म हेत धर प्यार ॥१०६॥
 कृष्णादिक नरकी पढ्या, द्रव्य जिनवर कहिवाहि ।
 भावै कहिये नेरिया, बन्दनीक ते नांहि ॥१०७॥

कोई कहै तसु देव ने, किम बोलावै ताय ।
 बलि अशनादिक किम दिये, निमल सुणो तसु न्याय ॥७॥
 पुत्र सुजेष्टा नूं कछो, महादेव तसु देव ।
 नवमे ठाणै अर्थ मे, ते वीर थकां खय मेवं ॥ ८ ॥
 चेडा राजा नी सुता, तेह सुजेष्टा जाण ।
 तिण कारण तसु देव ते, विद्यमान पहिछाण ॥ ९ ॥
 तेहने बोलावै नहीं, बलि नहीं आपै आहार ।
 बलि चैत्य मुनि अरिहन्त ना, भइ थया तिणवार ॥ १० ॥
 ते अन्य तीर्थिक में जई मिल्या, अन्य तीर्थिक पिण तास ।
 ग्रहण किया निजमत विषै, अन्य तीर्थिक गृहित विमास ॥
 नहीं बोलावूं तेहने, बलि नहीं आपूं आहार ।
 अभियह ए आनन्द लियो, बाखूं न्याय विचार ॥ १२ ॥

॥ इति आनन्दाधिकार ॥

अथ षष्ठम् जंघा विद्याचारणाधिकार ।

॥ दोहा ॥

कोई कहै मुनि लब्धि धर, जङ्गल विद्याचार ।
 जावै रुचक नन्दीश्वरें, वन्दै चैत्य तिवार ॥ १ ॥
 बीसम शतकी भगवती, नवम उद्देश विषह ।
 प्रभू आख्या ते चैत्य कुण, उत्तर तास कहेह ॥ २ ॥

जिन प्रतिमा जिन सारसी, तुम्हें कहो तिण न्याय ।
 प्रतिमा तो धुरपद हुई, मुनि धुरपद नहीं आय ॥ ५ ॥
 अरिहन्त तो ए देव हैं, अरिहन्त चैत्य सु सन्त ।
 तेह गुरु ए देव गुरु, बिना न अन्य बंदन्त ॥ ६ ॥

॥ इति अम्बडाधिकार ॥

॥ अथ पंचम् आनन्दाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै आनन्द कछो, अनतीर्थिक संगहीत ।
 अरिहन्त ना जे चैत्य प्रते, बन्द नहीं प्रतीत ॥ १ ॥
 एह सातमा अङ्ग मे, दाख्यो गणधर देव ।
 ते अरिहन्त ना चैत्य कुण, उत्तर तासु कहेव ॥ २ ॥
 आनन्द कछुं अण तीर्थ ने, अणतीर्थिक ना देव ।
 अन्यतीर्थिक परिगहीत जे, अरिहन्त चैत्य कहेव ॥ ३ ॥
 ए तीनू ने बन्दना, करवी कल्पे नाहि ।
 नमस्कार करिवं नहीं, ए तीनू ने ताहि ॥ ४ ॥
 पहिला बोलाव्यां बिना, बोलूं नहीं द्रक वार ।
 बार बार बोलूं नहीं, नही आपूं तसु आहार ॥ ५ ॥
 चैत्य द्रहां प्रतिमा हुवै, तो बोलावै किम ।
 बलि आपे अशणादि किम, न्याय विचारो एम ॥ ६ ॥

तथा चैत्य ते जिन बह्व, तेह तणा गुण गाय ।
 धन्य प्रभू इम कहै तसु, सत्य वचन सुखदाय ॥१३॥
 कोइ कहै प्रभूजी भणी, चैत्य किहां आख्यात ।
 उत्तर तेहने आखिए, सुगज्यो सुगण मुजात ॥१४॥
 सूर्यामि मन चिन्तव्युं, कल्याण कारौ स्वाम ।
 दूरितोपशम कारौ यकी, मगलीक अभिराम ॥१५॥
 तीन लोकना अधिपति, तिणसुं देवत नाथ ।
 हेतु सुप्रसन्न मनतणा, तिणसुं चैत्य आख्यात ॥१६॥
 राय प्रशेणी वृत्तिमें, चैत्य अर्थ जिन ख्यात ।
 तेमाटे इहां संभवै, बहु जिन गुण अवदात ॥१७॥
 बहु जिनेन्द्र वा जिनकहै, रुचक नन्दीश्वर मांय ।
 भाव कछा तिमहिज सहु, देखि हिये हुलसाय ॥१८॥
 धन्य जिनेन्द्र धन्य केवली, गिरि कूंटादिक केह ।
 जेम कछा तिमहिज ए, इम तसु स्तुति करेह ॥१९॥
 ते माटे इहां चैत्य ते, बहु जिन कहिए सोय ।
 बन्दई तसु स्तुति करै, एह अर्थ पिण होय ॥२०॥
 विन आलोयां ते मुनी, काल करै जो कोय ।
 तास विराधक प्रभु कछो, पाठ विषे अवलोय ॥२१॥
 जब को तर्क करै इसी, दिसां गौचरी जाय
 पाछा आवी पडिक्कमै, ईर्या वही मुनिराय ॥२२॥

जङ्घा विद्या चारणा, रुचक नन्दीश्वर जाय ।
तिहां बन्दै पाठ कै, पिण नमंसई नाहि ॥ ३ ॥
मानुषोत्तर गिरी विषै, कूट चार आख्यात ।
नयी कछुं सिद्धायतन, तूर्य ठाण अवदात ॥ ४ ॥
वृत्ति विषै द्वादश कछा, तिहां देवता वास ।
आख्या पिण सिद्धायतन, कूट कछो नहीं तास ॥ ५ ॥
तिहां चैत्य बन्दै किंसा, तिण सूं चैत्य सुज्ञान ।
करै तास गुणयाम अति, देखी ने जे स्थान ॥ ६ ॥
धन भगवन्त नो ज्ञान ए, धन्य भगवन्त रो ज्ञान ।
जेम कछुं तिमहिज सह, इम करै स्तुति जान ॥ ७ ॥
नमंसई तिहां पाठ नहीं, बन्दई पाठज एक ।
तेहनुं कै स्तुति अर्थ, देखो धर सु विविक ॥ ८ ॥
प्रश्न हजारों पूकिया, गोयम पञ्चम अङ्ग ।
तिहां बन्दई नमंसई कै, विहुं पाठ सुचङ्ग ॥ ९ ॥
ए तो कै अति अजव गति, रुचक द्वीप लग जाय ।
तिहां नमंसई पाठ नहीं, नमोत्थूणं पिण नाय ॥ १० ॥
आवक तुङ्गियां ना प्रवर, आया स्थिवरां पास ।
तिहां बन्दई नमंसई, उभय पाठ गुण रास ॥ ११ ॥
जो प्रतिमा बन्दन गया, तो करता नमस्कार ।
नमोत्थूणं गुणता बलि, देखो हृदय विचार ॥ १२ ॥

वही पडिकमियाँ बिना काल करै तो उणरै श्रद्धारै लेखै ओ पिण विराधक हुवै, धर्म कारणे जाता धर्म कारणे आवताँ ईर्यावही पडिकमिया बिना काल करै तो उणरै लेखै ओ पिण विराधक हुवै, जद तो तीर्थकर ने बान्दवा जाताँ आवताँ ईर्यावही पडिकमियाँ बिना काल करै तो उणरै लेखै ओ पिण विराधक, अरिहन्त गणधर आचार्य उपाध्याय महामोटा पुरुषाँ ने बलि साधू साध्वियाँ ने बान्दण जाताँ ने आवताँ ईर्यावही पडिकमियाँ बिना काल करै तो उणरै लेखै ओ पिण विराधक, इम इत्यादिक अनेक कार्य्य कियाँ ईर्यावही पडिकमवा छै, जद ते पिण कार्य्य करताँ ईर्यावही पडिकमियाँ बिना काल करै तो उणरै लेखै ओ पिण विराधक, इम ईर्यावही पडिकमियाँ बिना विराधक हुवै छै तो साधू ने पहिलाँहीज ईर्यावही पडिकमवा वालो कार्य्य करणो हिज नही, तथा पडिलेहणा कियाँ पछे अथवा बिचै ईर्यावही पडिकमियाँ बिना काल करै तो उणरै लेखै ओ पिण विराधक हुवै, इम विहार करताँ बिचै ईर्यावही पडिकमियाँ बिना मरै तो उणरै लेखै ओ पिण विराधक हुवै, जो इम विराधक हुवै जद तो तीर्थकर ने बन्दवा जाताँ ने आवताँ बिचै ईर्यावही पडिकमियाँ बिना काल करै तो उणरै लेखै ओ पिण विराधक हुवै, अरिहन्त गणधर आचार्य उपाध्याय महा मोटा पुरुषाँ ने बलि साधू साध्वियाँ ने बन्दवा जाताँ ने आवताँ बिचै काल करै तो उणरै लेखै ओ पिण विराधक छै, इम ईर्यावही पडिकमियाँ बिना विराधक हुवै तो साधूने पहिलाँ हिज ईर्यावही पडिकमवारो कार्य्य करणो हीज नहीं, इण श्रद्धारै लेखै तो साधू ने हालवो चालवो इत्यादि कयुंही कार्य्य करणो नहीं, अरिहन्त ने भगवन्त ने तीर्थकर ने गणधर ने आचार्य ने उपाध्याय ने महा मोटा पुरुषाँ ने साधू ने साध्वियाँ ने किण ही ने बन्दवा जाणो नही कदा बिचै ही काल करै तो विराधक पणो थाय छै आज्ञा रो भरोसो छे नही तिणसुं, उणरी श्रद्धा रै लेखै तो धर्म रो कार्य्य करण ने कट्टे हो जाणो नहीं जाताँ ने आवताँ ईर्यावही पडिकमियाँ बिना मरै

तिम ए पिण आवी करौ, ईर्या वही गुण्येय ।
 तामु उत्तर कहौजिये, सांभलज्वो चित देय ॥२३॥
 दिसां गौचरी मुनि जई, आवंतां कियो काल ।
 तेह विराधक नहीं हुवै, जोवो नयण निहाल ॥२४॥
 जंघा विद्याचारणा, काल कियां अन्तराल ।
 तास विराधक प्रभु कछा, नथौ आराधक न्हाल ॥२५॥
 तिणसु ईर्या वही तणू, नथौ मिलै ए न्याय ।
 लब्धि फोड़वौ तेहनो, दंड कछो जिनराय ॥२६॥

॥ वार्त्तिका ॥

कोई कहै जंघाविद्याचारण लब्धि फोड़ो ने नन्दीश्वर डीपे जाय ते आलोयों बिना मरै तो विराधक कह्यो ते आलोयणों ईर्यावही नी कही छैं दिसां गौचरी जावै तेहनी पिण ईर्यावही गुणै तिम ए पिण लब्धि फोड़ने नन्दोश्वर डीप गया तेहनी पिण ईर्यावही जाणवी हम कहै तेहने कहिणो हम ईर्या वही गुण्या बिना विराधक हुवै तो गौचरी पिण जाणो नहीं कदा ठिकाणे आयों बिना पहिलां मरि जाय तो विराधक हुवै, बलि गाम बाहिर दिसां जाणो नहीं । बिहार करणो नहीं । पडिलेहणा करणी नहीं । झण मंगूर काया है सो ईर्यावही गुणियां बिना पहिलां हो मर जाय तो विराधक होवणो पड़ै ते माटे ; साधू गौचरी गयो पाछो आवतां बीच में काल करै ईर्यावही पडिकमियां बिना जय तो ओ पिण विराधक हुवै ; हम बिहार करतां विचै ईर्यावही पडिकमियां बिना काल करै तो उणरी अद्वारे लेखै ओ पिण विराधक हुवै, हम तो पडिलेहणा कियां पछै अथवा विचै ईर्या

३४] * धर्मार्थ हिंसा न गिणै तेहना उत्तर नुं अधिकार *

यात्रा अर्थे लब्धि जे, फोड़बियां दण्ड आय ।
तो पुण्यादिक कार्य में, धर्म पुण्य किम थाय ॥२६॥
॥ इति ॥

॥ अथ सातमो धर्मार्थ हिंसा न गिणै
तेहना उत्तर नुं अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै धर्म कारणे, जीव हणै जो कोय ।
पाप न लागै तेहने, हिव तसु उत्तर जोय ॥ १ ॥
देवल प्रतिमा कारणे, हणै जु पृथिवी काय ।
मन्द बुद्धि तेहने कछा, दशमा अह रै मांय ॥ २ ॥
अर्थ धर्म ने हेतु हणै, मन्द बुद्धि कछा तास ।
ए पिण दशमा अह मे, प्रथम अध्ययन विमास ॥ ३ ॥
जन्म, मर्ण सूकायवा. हणै जे पृथिवी काय ।
कछा अहेतु अवोध तसु, प्रथम अह रै मांय ॥ ४ ॥
धर्म हेतु जन्तु हणै, दोष इहां नही कोय ।
ए अनार्य नू वचन, आचारहे जोय ॥ ५ ॥
जिनाला सावद्य सह. वचन मात्र पिण सोय ।
मुक्त ने आचरवा नही, प्ररूपवा नही कोय ॥ ६ ॥
महानिशीथ रै पंच मे, कमल प्रभा: डम ख्यात ।
सावद्य पाप सहित में, धर्म पुण्य किम थात ॥ ७ ॥

तो विराधक पणो थाय छै, इण अद्वारै लेखै तो शासन सर्व ऊठ जावै या तो महा विपरोत अद्वै छै. अरिहन्त भगवन्त तो थूं कह्यो छै साधू चारित्रयाने कर्मयोगे अनेक भारो कार्य्य कीधा छै मोटा मोटा दोष सेव्या छै पछै गुरु कने अनेक कौसां लगे आलोचन चाल्यो छै कदा गुरु पासै नहीं पूगो बिचै हो आलोच्यो बिना काल करै तो तिण न भगवन्त अराधक कह्यो छै, तो जंघा चारण ने विद्या चारण नी ईर्यावही पडिकम-धारी सरधा नहीं थो काँई ? ये विराधक किसे लेखं हुवै तो ऐसा ये काँई भोला छा अने बलि यारै ईर्यावही पडिकमवा री सरधा न हुवै, तो गौचरी दिसां बिहार प्रमुख नो गुरु कने आज्ञा माँगै तो आज्ञा पिण देणी नहीं बिच मै मरि जाय तो विराधक हुवै, बलि नन्दी उतरवा री पिण आज्ञा माँगै तो आज्ञा देणी नहीं बिचै मरि जाय तो विराधक हुवै ते बारै नीकलियां पहिलां हो ईर्यावही तो न गुणी इम जो विराधक हुवै तो नन्दी उतरतां मोक्ष किम जाय, सागारी संथारो पचखी नावामे बैसे पहवुं आचाराङ्ग अध्ययने तीसरे कह्यो छै, जो ईर्यावही गुणियां बिना विराधक हुवै नावा में सागारो संथारो पचखी किम बैसे, बलि नन्दी उतरवा री साध्यां ने भगवान् आज्ञा दीधी अने गौचरी प्रमुख नी पिण आज्ञा दीधी छै तिण सूं नन्दी नावा उतरतां गौचरी प्रमुख पूर्वे कार्य्य कह्या ने करतां मरै तो अथवा गौचरी प्रमुख कार्य्य करी ठिकाणै आय्यां ईर्यावही गुण्यां पहिलां मरै तो आराधक पिण विराधक नहीं ।

॥ दोहा ॥

धर्म हेतु हिंसा कियां. तुम्हे दोष कहो नाहि ।

पुण्यदिक आरम्भ मे, धर्म कहो को ताहि ॥२७॥

तो यात्रा करवा भणी, लखि फोड़वी जेह ।

धर्म हेतु ए कार्य नो, किम प्रभू दण्ड कहेह ॥२८॥

निरवद्य है तो मुनि करै, गृहो सामायक मांय ।
 ते पिण द्रव्य पूजा करै, तुभ 'श्रद्धा' रै न्याय ॥१५॥
 जो सावद्य द्रव्य पूजा ह्वै, तिण सँ मुनि न करेह ।
 तो सावद्य मांही धर्म पुन्य, केम कहौजै तेह ॥१६॥
 आरम्भ जे छकाय नूँ, पचण पचावण जास ।
 निज वा पर अर्थे किया, निन्द' गरुड' तास ॥१७॥
 इम कच्च' वन्देत् विषै, सप्तम गाथा जोय ।
 तो साहस्यौ वच्छल विषै, धर्म पुन्य किम होय ॥१८॥
 ॥ इति ॥

॥ अत्र वन्देतु नौँ गाथा ॥ छकाय समारम्भे, पयण
 पयावण जे दोसा ॥ अत्तट्टा परट्टा ए, उभयट्टा चैव
 तं निन्दे ॥

॥ इति धर्मार्थे हिन्साधिकार ॥

॥ अथ आठमो सुर्याभाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोर्ब कहै सुर्याभिसुर, प्रतिमा पूजौ ताम ।
 तिहां हित मुक्षम पाठ है, निसिखा ए अनुगाम ॥ १ ॥
 ते निसिखा नूँ अर्थ तो, मोक्ष अमर पद होय ।
 ते माटे शिव हेतु ए, तसु उत्तर ह्वि जोय ॥ २ ॥

ग्रन्थ संघ पट्टक कियो, जिन बल्लभ सुरेश ।
 जिन प्रतिमा यात्रा भणौ, किर्युं कछो कै तैण ॥ ८ ॥
 लोहना कांटा ऊपरै, मांस डली प्रति ताहि ।
 मूँकी पकड़ै मौन ने, धौवर नर जग मांहि ॥ ९ ॥
 तिम जिन विम्ब जिन नाम करि, मुग्ध लोक जे मौन ।
 जिन यात्रादि उपाय करि, कुगुरु ठगत मत हीन ॥ १० ॥

॥ काव्य ॥

अत्र जिन बल्लभ सूरि कृत संघ पट्टानी काव्य ।

आकृष्टं मुग्धमीनान् बडिशपिशितवर्द्धिब्रमादर्श्य जैनं । तस्मान्ना
 रम्यरूपान पवन् कमठान् स्वेष्ट सिद्धयै विधाप्य ॥ यात्रा स्नात्रोद्युपायै
 नैर्मसितक निशा जागरायै शूलैश्च । श्रद्धालुर्नामजेनै शूलित इव गढे
 दंध्यतेहाजनोऽथम् ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

भस्म ग्रह करिके बलि, दशम् अक्षर करेह ।
 मित्थ्या मत कछुं संघपट्टे, जिन बल्लभ सूरेश ॥ ११ ॥
 इन्द्र विम्ब प्रति बाल विन, ग्रहिवूं कुण बंछेह ।
 तृतीय काव्य भक्तामरे, न्याय विचारी लेह ॥ १२ ॥
 तिम हिज जे जिन विम्ब प्रति, जिन जागी ने जेह ।
 बाल अजाण विना बंवाण, अङ्गीकृत करेह ॥ १३ ॥
 द्रव्य पूजा सावद्य कै, के निरवद्य आख्यांत ।
 उत्तर हिये विचारिये, छोडी ने पक्षपात ॥ १४ ॥

सामानिक परिषध प्रमुख. सुर सुर्याभ प्रतेह ।
 अष्ट सहस्र ने चौसठ फुन, जल भरिया कलशेह ॥१३॥
 वृन्दाविषेक करी कहै, सुरगण में जिम इन्द्र ।
 तारागण में चन्द्र जिम, असुर विषै चमरिन्द्र ॥१४॥
 नाग विषै घृणिन्द्र जिम, भरत चक्री मनु मांहि ।
 बहु पल्योपम लग तुम्हे, बहु सागरोपम ताहि ॥१५॥
 च्यार सहस्र सामानिका, यावत सोल हजार ।
 आतम रक्षक देवता, तेह तणो अवधार ॥१६॥
 अधिपती फुन स्वामी पणो, करतां थकां ज सोय ।
 पालन्ता विचरो तुम्हे, इम कहै सुर अवलोय ॥१७॥
 अलंकार सभा तिहां, आवी करै अलंकार ।
 आवी व्यवसाए सभा, पुस्तक बांच तिवार ॥१८॥
 पछै आय सिद्धायतन, प्रतिमादिक पूजेह ।
 सूत्रे विस्तार है बहु, इहां कछु संचेपेह ॥१९॥
 इम प्रतिमा दाटां पनग, पूतलियांदिक पेख ।
 बहु वाना पूजा तिणे, स्वर्ग स्थित थी देख ॥२०॥
 ऊपजियो सुर्याभ तब, चिन्तवियो मन जेय ।
 पूर्व पछै करिवुं किर्युं, सुभ पूर्व पछै स्युं श्रेय ॥२१॥
 जेह कार्य कीधि कते, पूर्व पछै स्युं सोय ।
 हित सुख प्रमुख भणी हुइ, इम चिन्तवियो सोय ॥२२॥

राय प्रशेणौ मे कच्छुं, जे सुर्याभ सु देव ।
 उपजियो तब चिन्तव्युं, मन मांहि स्वयमेव ॥ ३ ॥
 स्युं मुझ ने करिवो हिवे, पहिलां पछै ज काज ।
 स्युं मुझ पहिलां श्रेय जे, श्रेय फुन पछै समाज ॥ ४ ॥
 स्युं मुझ पहिलां ने पछै, हित सुखम निस्सेसाहि ।
 अनुगामी केडै हुइ, इम चिन्तव्यो मन मांहि ॥ ५ ॥
 सामानिक परिषध सुरे, जाणौ ए अथवसाय ।
 कर जोड़ी सुर्याभ प्रति, बोल्या एम बधाय ॥ ६ ॥
 जिन प्रतिमा दाढां प्रते, आप भणी अवलौय ।
 अन्य बहु वैमानिक सुरा, सुरी प्रते फुन जौय ॥ ७ ॥
 अरचण जोगज जाव फुन, सेवा जोगज जेह ।
 ते माटे पहिलां पछै, तुम ने करिवुं एह ॥ ८ ॥
 पहिलां पछैज ए श्रेय, पूर्व पक्षा पिण जौय ।
 हित सुखम निस्सेसाए हैं, अनुगामिक अवलौय ॥ ९ ॥
 इम सांभल सुर्याभसुर, हृष्ट तुष्ट सलहीज ।
 यावतु विकस्यो हृदय फुन, जठ्यो सेभ थकीज ॥ १० ॥
 पवर सभा उपपात थौ, निकली द्रह विषेह ।
 आवी ने ते द्रह प्रते, तथा प्रदन्निण देह ॥ ११ ॥
 द्रह मै ऊतर स्नान करै, जिहा सभा अभिषेक ।
 तिहां आवी सिधाशणे, बैठो पूर्व सम्पेख ॥ १२ ॥

उत्तराध्ययन बावौस में, द्रव्य मंगल संवाद ।
 तोरण जातां नेम कृत, दधौ अक्षत द्रोवादि ॥३३॥
 तिमहिज सुर्याभि करी, संसारिक मंगलीक ।
 पूजा जिन प्रतिमादि नौ, स्वर्ग स्थिति तह तोक ॥३४॥
 प्रभू वन्दन अवसर कछु, पेक्षा हित सुख आदि ।
 पेक्षा ते पर भव विषै, देखो तज असमाधि ॥३५॥
 प्रतिमा त्यां पूव्वी पच्छा, फुन वन्दन जिन राय ।
 पेक्षा पाठ कछो तिहां, राय प्रशेणी मांय ॥३६॥
 पचमा अइ दूजै शतक, प्रथम उद्देशक पेख ।
 खन्धक दीक्षा अवसरे, इह विध कछु विशेष ॥३७॥
 धन काटे ग्रही लाय थी, पच्छा पूरा ए ताय ।
 बक्षित काल थकी पछै, फुन पहिलां कहवाय ॥३८॥
 ते ग्रही जाणै सुभ्र हुसै, ए धन हित सुख काज ।
 क्षम समरथ निस्सिसाय जे, फुन अनुगामिक साज ॥३९॥
 तिम जरा मरण री लाय थी, स्वात्म काढ्यां ताय ।
 पर लोकि हित सुख भणौ, बलि मुज क्षम निस्सिसाय ॥४०॥
 मेघ कछु धन लाय थी, काढ्यां पूर्व पश्चात् ।
 हित सुखक्षम निस्सिसाय फुन, पिणपेक्षा पाठ न ख्यात ॥४१॥
 तिम जरा मरण री लाय थी, स्वात्म काढ्यां सोय ।
 हुसै विद्देद ससार नू, ज्ञाता प्रथम सु जोय ॥४२॥

धर्म कार्य तो जाणतो, समदृष्टि थो जेह ।
 तेह तणूं स्युं चिन्तवै, किम तमु अमर वदेह ॥२३॥
 पिण राज बैसतां कृत्य जे, करिवूं पूर्वं पछेह ।
 तेह कार्यं ससार ना मङ्गल हेतु कहेह ॥२४॥
 तेह रीत नवी जाणतो, नवो ऊपनो एह ।
 तिणस्युं चित्यो मुक्त किंस्युं, करिवो पूर्वं पछेह ॥२५॥
 एह भाव सुर्याभ नां, सामानिक सुर धार ।
 वलि परिषधनां देवता, जाण लिया तिण वार ॥२६॥
 ए छूना था ते भणौ, राज बैसतां ताय ।
 कारज करवो तेहनां, जाण हुन्ता अधिकाय ॥२७॥
 ते माटे सुर स्थिति हुन्तौ, तं दीधी तिणे बताय ।
 जिन प्रतिमा दाढां भणौ, कछो पूजवुं ताय ॥२८॥
 खर्ग रीत जाणौ कछुं, सुर सुर्याभ प्रतेह ।
 पूजा हितसुख प्रमुख पिण प्रभु न कछा वच एह ॥२९॥
 पुत्र्यौ पच्छा पाठ त्यां, पहिलां पछै सुजोय ।
 हितसुख आदिकछो सुरे, पिण पेक्षा पाठ न कोय ॥३०॥
 पूर्वं पछा ते ब्रह्म भवे, द्रव्य मङ्गल कहिवाय ।
 विघ्नोपशम अर्थे क्रिया, राज बैसतां ताय ॥३१॥
 श्रावण तुङ्गिया ना स्थविर, बन्दन जातां कौध ।
 सरिषव द्रोवाक्षत दही, द्रव्य मङ्गलीक प्रसिद्ध ॥३२॥

तिम प्रतिमा पूजे तिहां, निस्सीसाय आख्यात ।
 विघ्न तणौ ए मोक्ष है, विघ्न मू'कायवू' खगात ॥५३॥
 ए द्रव्य मंगल राज बैसतां, जे जग मांहि गिणेह ।
 विघ्न पड़ै नहौं राजमें, दधी अक्षत जिम जेह ॥५४॥
 कोई कहै प्रतिमा तणौ, पूजा यौ कहिवाय ।
 अनुगामिया ए कह्यु', फल तसु कैडै आय ॥५५॥
 तसु कहिये धन लाय घौ, काटै तसु पिण सोय ।
 अनुगामिया ए इसो, पाठ सरौसो जोय ॥५६॥
 जे धन काटे लाय घौ, इह भव पूर्व पश्चात ।
 तसु फल धन काढण तणू', जिहां जाय तिहां आता ॥५७॥
 विमान अधिपती अभव्यथा, स्वर्ग तणी स्थिति मंत ।
 सह सुर्याभ तणौ परै, प्रतिमांदिक पूजन्त ॥५८॥
 तिम पूजा प्रतिमा तणौ, ए भव पूर्व पश्चात ।
 तसु फल द्रव्य मंगल तणू', जिहां जाय तिहां आता ॥५९॥
 शुभ सूचक संसार में, दधी अक्षत द्रोवादि ।
 तिम पिण ए सुरलोक में, शुभ सूचक सवाद ॥६०॥
 भाषा श्री जिन रायनो, गावै विवाह विषेह ।
 तिम पूजा प्रतिमा तणौ, वलि यमोत्थूणं गुणेह ॥६१॥
 राज बैसतां कार्य्य जे, सह ससारिक हित ।
 स्वर्ग स्थिति माटै किया, धर्म पुण्य नहौं तेह ॥६२॥

प्रतिमा नौ पूजा तिहां, लाय थकी धन बार ।
 काटे तिहां पच्छा प्रथम, ते इह भव में धार ॥४३॥
 जिन बन्दन पेच्चा कछु, चारित ग्रन्थां परलोग ।
 ते परभव हित सुख प्रमुख, देखो दे उपयोग ॥४४॥
 कोट्टे कहै प्रतिमा तणी, पूजा कै निरदोष ।
 हित सुखक्षम निस्सीसाए कछु, निस्सीसाय ते मोख ॥४५॥
 तसु कहिये धन लाय थो, काटे तसु पिण सोय ।
 हित सुखक्षम निस्सीसाए कछु, इहां मोक्ष स्यूं होय । ४६।
 धन काटे जे लाय थो, इह भव पूर्व पश्चात ।
 दारिद्र्य थो मूँकायवो, ते मोक्ष दारिद्र्य नौ ख्यात ॥४७॥
 तिम पूजा मंगलिक अरथ, इह भव पूर्व पश्चात ।
 विघ्न थकी मूँकायवो, ते मोक्ष विघ्न नौ ख्यात ॥४८॥
 शतक पनरमें भगवती, आणंद थिवर प्रतेह ।
 गौशाली जे वनिक नूँ, आख्युं दृष्टान्त देह ॥४९॥
 चौथो वल्गू फोडतां, ब्रह्म पुरुष तिहवार ।
 फोडक हाला पुरुष नूँ, हित सुख वंछणहार ॥५०॥
 पथ्य आनन्द कारण तणूँ, वंछणहारो तेह ।
 अनुकम्पा कारक तिको, निश्चय यथ बन्हेह ॥५१॥
 निस्सीसाए नूँ अर्थ जे, आख्यो वृत्ति विषेह ।
 वंछै मोक्षज विपतनी, विपत मूँकायवूँ जेह ॥५२॥

जन जागै मङ्गल थकी, हित सुख प्रमुख जे पाय ।
 पण नही जागै पूर्व बंध, पुण्य थकी ए थाय ॥७३॥
 पुत्रादिक परणायवे, आरा मोसर आदि ।
 सुयश हुवै ते पूर्व बन्ध, पुण्ये करी सम्बाद ॥७४॥
 ब्रह्मा विष्णु महेश पुन, देवी पूजा आदि ।
 कौधां मुख सम्पति मिलै, ते पूर्व पुण्य प्रसाद ॥७५॥
 महा आरम्भ महा परग्रही, करै पंचेन्द्री घात ।
 मांस भक्षण ए चिहुं थकी, नरकायु बन्धात ॥७६॥
 नरकी पंचेन्द्रिय पणौ, पुण्य प्रकृति कै जेह ।
 ते तो कै पूर्व बन्धो, वर शुभ जोग करेह ॥७७॥
 पण महा आरम्भ आदि जे, चिहुं कारण करि जोय ।
 पंचेन्द्री पणू नही बंधे, न्याय हिये अवलोय ॥७८॥
 तिम प्रतिमा पूज्यां छतां, हित सुख प्रमुख न थाय ।
 पूर्व बंधे पुण्ये हुवै, हित सुखक्षम निस्सेसाय ॥७९॥
 वर सुर्याभ विमान नो, अधिपती देव किंवार ।
 मित्थ्या दृष्टि पिण हुवै, भव्याभव्य विचार ॥८०॥
 जे सुर्याभे सांचवी, ते हिज रीत तिंवार ।
 राज बैसतां सांचवै, विमान अतिपती धार ॥८१॥
 प्रतिमादिक पूजै तिकै, वलि नमोत्थूण गुणोह ।
 तिण सू ए स्थिति स्वर्ग नी, मङ्गलीक हितेह ॥८२॥

कोई कहै पूजा कियां, ए भव विघ्न मिटेह ।
 पुण्य वध किम नवि कहो, हिव तसु उत्तर लेह ॥६३॥
 चढ्यो सूर संग्राम में, कर बहु जन संहार ।
 आव्युं जीत फते करौ, सुयश करै नर नार ॥६४॥
 सावद्य युद्ध तिणे करौ, अशुभ कर्म बंधाय ।
 ते अशुभ कर्म करौ, सुयश हुवे किम ताय ॥६५॥
 नाम, कर्म नी प्रकृति, यशो कीर्ति पुन्य जेह ।
 ते तो पाछल भव बधौ, वर शुभ योग करेह ॥६६॥
 ते यशो कीर्ति पुण्य प्रकृति, युद्ध समय सुविचार ।
 उदय आवी तिण कारणे, सुयश करै नर नार ॥६७॥
 जन बहु जाणे युद्ध थौ, सुजश थयो जग मांहि ।
 पण नही जाणे पूर्व वध, पुण्य थकौ जश पाय ॥६८॥
 तुझिया ना आवक किया, विघ्न हरण रै काज ।
 दधौ अक्षत द्रोवादि जे, इम हिज नेम समाज ॥६९॥
 दधौ अक्षत द्रोवादि करौ, अशुभ कर्म बंधाय ।
 विघ्न मिटे किम तेहथौ, किम सुख सम्पति पाय । ७० ।
 विघ्न मिटे अरि जन हटे, सुख सम्पति पामेह ।
 ते पुण्य प्रकृति पूर्व भवे, बंधौ शुभ जोगेह ॥७१॥
 ते पुण्य प्रकृति कदा, मझल कियां पकेह ।
 उदय आयां सुख सम्पजै, वलि बहु विघ्न मिटेह । ७२ ।

तथा परभवे एहवुं पाठ पिण पच्छा नहीं ॥ ४ ॥ चम्पा
 तणा जन वृन्द जिन वन्दन समय ए विध कहौ । प्रभु
 वन्दतां फल पेक्षा भव वा इह भव हित सुख प्रमुख
 ही । फुन तुझिया ना आवकी पिण स्थविर वन्दन समय
 ही । फल वन्दना नूं इह भवे वा परभवे होसे सही ॥ ५ ॥
 शिवराज कृषिं फुन कृषभ दत्ते कछ्छं प्रभू वन्दन तणूं ।
 फल इह भवे वा पर भवे हित सुख प्रमुख हुसे घणूं ।
 इम जिन मुनि प्रते वन्दवे फल पेक्षा वा परभव वही ।
 पिण पाठ पच्छा शब्द किहां ही सूच में दाख्यो नहीं ॥
 ६ ॥

॥ इति सूर्याभिधिकार ॥

॥ अथ नवमूं चैइटी निजभराटी
 शब्दार्थ अधिकार ॥ प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै प्रतिमा तणी, व्यावच करवी सार ।
 आखी दशमा अङ्ग में, तीजे संबर द्वार ॥ १ ॥
 उत्तर तमु निमुणो हिवै, तिण ठाणै इमवाय ।
 आराधै ए तृतीय व्रत, ते केहवुं मुनिराय ॥ २ ॥

बहु सागर सुर सुरी तणूं, अधिपती पणो करेह ।
ए पिण बच है देव नूं, देखो पाठ विषेह ॥८३॥
आयू जे सुर्याभ नूं, चार पल्योपम ख्यात ।
बहु सागर लग किम रहै, पेखो तज पखपात ॥८४॥

॥ गीतक छन्द ॥

प्रतिमा तणौ पूजा तिहां सुर्याभ ने सुर आखियो ।
पुखी अने पच्छा हियाए आदि पाठ सुभाखियो ॥ पुखी
पच्छा ते इह भवे संसार ना मंगलीक ही । तुझियादि
ना जिम विघ्न हरवा । द्रोव सरसव तिम वही ॥ १ ॥
सुर्याभ जिन वन्दन तणौ मन मांहि धारी है तिहां ।
पेचा हियाए पाठ आदज प्रगट अन्तर ए जिहां । पेचा
तिको परभव विषे हित सुख प्रमुख पहिछाणवूं । पच्छा
अने पेचा उभय नुं अर्थ दिल में आणिवूं ॥ २ ॥ खंधक
कछो धन लाय थी काटे तिको चिन्ते सही । पच्छा
पूराए हिया सुहाए आदि पाठ सु प्रगट ही । तिम
जरा मरणज लाय थी निज आत्म प्रति काढ्यां थकै ।
मुझ हुसे परलोकि हियाए । प्रमुख पाठ कछा तिकै
॥ ३ ॥ प्रतिमा तणौ पूजा अने धन लाय थी काटे वही ।
पच्छा हियाए पाठ है पिण पेचा वा परभव नहीं ।
सुर्याभ जिन वन्दन अने जे खन्धकी दीक्षा ग्रही । पेचा

प्रतिमा अन्न खाती नथी, पीती नथी ज पाण ।
 वस्त्र ओढती पिण नथी, नथी पहरती जाण ॥१३॥
 ते माटे इम-सम्भवै, चैत्य ज्ञान अर्थेह ।
 निरजरा नूं अर्थी छतो, करै व्यावच जेह ॥१४॥
 चैत्य ज्ञान अर्थे करै, एक अर्थ ए होय ।
 द्वितीय अर्थ कहिए हिवै, सांभलजो अवलोय ॥१५॥
 आराधै ए तृतीय ब्रत, ते केहवुं मुनिराय ।
 इम शिष्य प्रश्न किये छतें, हिव गुरु भाषै वाय ॥१६॥
 उपधि भात पाणी जिको, प्रतीत घर थी आण ।
 संगह करिवा में कुशल, कुशल दान में जाण ॥१७॥
 ते केहने आपै तिको, अत्यन्त गाढो बाल ।
 दुर्बल रोगी ब्रह्म फुन, खमग प्रवर्तक न्हाल ॥१८॥
 आचारज उवज्झोय शिष्य, साधर्मीक पिछाय ।
 तपसी कुल गंग संघ ए, चैत्य तिको जिन जाण ॥१९॥
 पूर्व कछा ते सर्व नूं, अर्थ प्रयोजन जेह ।
 निरजरा नूं अर्थी छतो, करै व्यावच तेह ॥२०॥
 पूजा श्लाघा रहित चित, दश विध आचार्यादि ।
 बहु विध भक्त पाणादि करि, करै अनेक प्रकार सम्वाद २१
 चित्त अहलादक ते भणौ, चैत्य केवली जाण ।
 भात पाणी तसु आणि दे, बलि उपधादिक दे आण ॥२२॥

उपधि भात पाणी जिको, प्रतीत घर थौ आण ।
 संगह करिवूं कुशल बलि, कुशल दान में जाण ॥ ३ ॥
 ते कहने आपै तिको, अत्यन्त गाढोबाल ।
 दुरबल ते बल रहित जे, बलि म्लान मुनि न्हाल ॥ ४ ॥
 वृद्ध तिको कहिये स्थिविर, खमग मास खमणादि ।
 प्रवर्त्तावे जे योग्य तिम, प्रवर्त्तक ते सम्बाद ॥ ५ ॥
 आचारज उवभाय फुन, नव शिष्य साधर्मिक ।
 तपसौ कुल गण संघ ए, तमु व्यावच तहतीक ॥ ६ ॥
 कुलते गच्छ समुदाय कै, चन्द्रादिक कहिवाय ।
 गण ते कुल समुदाय कै, संघते गण समुदाय ॥ ७ ॥
 इतलानी व्यावच करै, चैत्य ज्ञान अर्थेह ।
 निरजरानं अरथो कृतो, कर्म जयां थौ तेह ॥ ८ ॥
 पूजा ज्ञाचा रहित चित्त, दश विध बहु विध जेह ।
 करै व्यावच दृतीय वरत, आराधै मुनि तेह ॥ ९ ॥
 अप्रतीत कारी घर विषे, प्रवेश न करै जान ।
 अप्रतीत कारी घर तणूं, नहौं लेवै अन्न पाण ॥ १० ॥
 इहां कछुं जे उपधि करि, बलि भक्त पाण करेह ।
 अत्यन्त बाल प्रमुख तणी, करै व्यावच तेह ॥ ११ ॥
 कोई कहै प्रतिमा तणी, व्यावच करवौ ख्यात ।
 तो प्रतिमा रे ये बिह्वं, वस्तु काम न आत ॥ १२ ॥

भव द्रव्य देव भवान्तरै, देव हुसै ते ताथ ।
 चक्रौ ते नर देव हँ, धर्म देव मुनिराय ॥३३॥
 देवाधि देव तौर्धकरा, तिणसूँ दैवत वौर ।
 तीन लोक ना अधिपति, युग केवल गुण हीर ॥३४॥
 भाव देव चिहुँ जाति ना, भवनपत्त्यादिक नैह ।
 वारम शतकी भगवती, नवम उद्देश विषेह ॥३५॥
 ते माटे ए चैत्य जिन, तास बेयावच ताम ।
 निरजरा नूँ अर्थी कतो, करै मुनि गुण धाम ॥३६॥
 कोइ कहै ए चैत्य नूँ, अर्थ इहां जिन होय ।
 तो हेइहै ए किम कहुँ, तमु उत्तर हिव जोय ॥३७॥
 चैत्य तुम्हे प्रतिमा कहौ, तो हेइहै किम ख्यात ।
 तुम लेखै तो धुर कहौ, पछै अन्य मुनि आत ॥३८॥
 जिन प्रतिमा जिन सारणी, तुम्हे कहौ को सोय ।
 ते माटे ए आदि मे, कहिवुँ चैत्य सु जोय ॥३९॥
 इहां वाल अत्यन्त धुर, दुर्वल ग्लान पश्चात ।
 स्थिबर प्रवर्तक धुर कहौ, पछै आचारज ख्यात ॥४०॥
 आचार्य्य पद तो प्रथम, कहिवुँ धुर अहलाद ।
 ठाम ठाम व्यावच विषे, आचारज पद आदि ॥४१॥
 इहां प्रथम वालादि कहौ, पछै आचारज जोय ।
 तेहुनुँ कारण को नही, देखो दिल अवलोय ॥४२॥

सूत्र भगवती में कछो, सौहो मुनि मुजाण ।
 पाक बीजोरा वीर प्रति, बहरो आया आण ॥२३॥
 अन्य कीवली तेहने, उपधादिक दे आण ।
 आराधै इम द्दतीय ब्रत, महा मुनि गुण खान ॥२४॥
 राय प्रशेणी में कछा, वीर तणा चिहुं नाम ।
 कल्याणं मंगल बलि, दैवत चैत्य मु ताम ॥२५॥
 मलियागिरि कृत वृत्ति में, अर्थ इसो आख्यात ।
 कल्याणकारी ते भणी, कल्याणिक जगनाथ ॥२६॥
 दुरित विघ्नज तेहना, उपशम कारी खाम ।
 ते माटै जगनाथ ने, कछो मंगलं ताम ॥२७॥
 तीन लोकना अधिपति, तिणसूं दैवत ख्यात ।
 हेतु मु प्रश्न मन तणा, तिणसूं चैत्य संजात ॥२८॥
 चैत्य शब्द नूं अर्थ इम, आख्यो कै तिण स्थान ।
 ते माटै ए चैत्य जिन, तास वैयावच जान ॥२९॥
 मुनि ना ए पिण नाम चिहुं, आख्या कै बहु ठाम ।
 कल्याणकारी ते भणी, मुनि कल्याणिक नाम ॥३०॥
 दुरितोशम कारी प्रणै, मंगल मुनि कहिवाय ।
 चार मंगल में देखल्यो, तीजो मंगल ताय ॥३१॥
 दैवत कहतां देव ए, पञ्च देवमें ताहि ।
 धर्म देव मुनि ने कछा, सूत्र भगवती मांहि ॥३२॥

तिगहिज अध्ययने किया, रुचि दर्शन ज्ञान चरित्त ।
 इहां दर्शन धुर आखियो, तसु कारण न कथित्त ॥५३॥
 अभिणि बोधिक धुर कहौ, पकै कह्यो श्रुत ज्ञान ।
 भगवती आदि विषै प्रभू, प्रगट पाठ पहिछान ॥५४॥
 उत्तराध्ययन अट्टबोस में, कह्यो प्रथम श्रुत ज्ञान ।
 अभिणि बोध कह्यो पकै, तसु दोषण नहीं जान ॥५५॥
 पूर्वानु पूर्वी किहां, किहां द्वितीया अवलोय ।
 अनानु पूर्वी कहौ किहां, तसु दोषण नहिं कोय ॥५६॥
 पञ्च ज्ञान में देख लो, केहड़ै केवल ज्ञान ।
 केहड़ै दर्शन चार मे, केवल दर्शन जान ॥५७॥
 चार ध्यान मांही बलि, केहड़ै शुक्त ध्यान ।
 केहड़ै गुणठाणा ममौ, अजोगौ गुण स्थान ॥५८॥
 केहड़ै चिहुं विध देव मे, बैमानिक सुर ख्यात ।
 चारित्र में केहड़ै कह्युं, यथाचात जगनाथ ॥५९॥
 बलि षट नियट्टा ने विषै, केहड़ै स्नातक जान
 इत्यादिक बहु सूत्र में, भाष्या श्री भगवान ॥६०॥
 अनानु पूर्वी करी, इहां चैत्य जिन अन्त ।
 उपधि भात पाखी करी, तसु व्यावच मुनी करन्त ॥६१॥
 आराधै इम तृतीय व्रत, महा मोटा मुनिराय ।
 द्वितीय अर्थ ए आखियो, निमल विचारो न्याय ॥६२॥

तिमहिज अ ते चैत्य जिन, इहां आख्युं है सोय ।
 तेहनुं पिण कारण नही, हिये विचारी जोय ॥४३॥
 मुनि सहचारौ पणा थकी, प्रथम कच्चा अणगार ।
 पक्के चैत्य ते जिन कच्चा, तसु नही दोष लिगार ॥४४॥
 गिणू अनुपूर्वी तुम्हे पद, तसु द्रक्शय बीस ।
 पच्छानु पूर्वी विषे, पहला मुनि जगौश ॥४५॥
 उवभाया आचार्य सिद्ध, अरिहन्त अन्त कहेह ।
 अनानु पूर्वी विषे, आघा पाछा लेह ॥४६॥
 अनुयोग द्वारे आखियो, पूर्वानु पूर्वी जान ।
 पच्छानु पूर्वी वलि, अनानु पूर्वी आन ॥४७॥
 पूर्वानु पूर्वी तिहां, ऋषभ जाव वर्द्धमान ।
 महावीर यावत् ऋषभ, पश्चानु पूर्वी जान ॥४८॥
 आघा पाछा नाम ले, अनानु पूर्वी तेह ।
 ए बिहुं अनु पूर्वी कहौ, देखोजो चित देह ॥४९॥
 सामाचारौ दश विध कहौ, अनुयोग द्वार विषेह ।
 इच्छा मिच्छा धुर अखी, पूर्वानु पूर्वी एह ॥५०॥
 उत्तराध्ययन छव्वीस मे, आवस्यिया धुर जोय ।
 अनानु पूर्वी एह है, तसु दोषण नही कोय ॥५१॥
 ज्ञान दर्शन चारित्र तप, शिव मग ए चिहुं सार ।
 उत्तराध्ययन अट्ठवीस मे, प्रथम ज्ञान सुविचार ॥५२॥

द्रुमचिन्तव अवधे करौ, प्रभु कहै मुज प्रति देख ।
 शीघ्र गमन कर संयच्छो, बज्र प्रते सुविसेख ॥ ७ ॥
 द्रुहां तिहुं शरणा में प्रथम, अरिहन्त केवल धार ।
 अरिहन्त चैत्य छद्मस्थ जिन, चिहुं ज्ञानी सुविचार । ८ ।
 भावितात्म अणुगार फुन, यह तिहुं शरणे मन्त ।
 द्रुहां चैत्य ते ज्ञानवन्त, चिहुं ज्ञानी भगवन्त ॥ ९ ॥
 बलि मन शत्रु विचारियो, अरिहन्त नी अवलोय ।
 भगवन्त ने अणुगार नी, अति आशातन होय ॥ १० ॥
 चैत्य स्थान भग शब्द कह्यो, भग नुं अर्थ सुजान ।
 चिहुं ज्ञानी अरिहन्त ए, पिण प्रतिमा नहि जान । ११ ।
 कोई शरण तो न कहै, आशातन कहै दोय ।
 अरिहन्त ने प्रतिमा तणी, एक कहै छै सोय ॥ १२ ॥
 शरण विषै तो पाठ तण, आशातन में जोय ।
 दोय पाठ दाख्य हुं ता, तो आशातन बे होय ॥ १३ ॥
 शरण विषै तो पाठ तण, आशातन में जोय ।
 तीन पाठ छै ते भणौ, आशातना तण होय ॥ १४ ॥
 प्रत्यक्ष सूत्रे शरणा तिहुं, कहौ आशातना तीन ।
 अरिहन्त ने भगवन्त नी, बलि मुनि तणी कथीन ॥ १५ ॥
 तीन आशातन ने विषै, चैत्य शब्द नहीं ख्यात ।
 चैत्य ठिकाणै भग कह्युं, देखो तज पखपात ॥ १६ ॥

चैत्य ज्ञानधुर अर्थकच्छं, द्वितीय अर्थ जिन जोय ।
बलि केवल ज्ञानी वदे, तेहिज सत्य सुहोय ॥ ६३ ॥

॥ इति चेइही निष्काराही शब्दा नूं अर्थ ॥

॥ अथ दशमूं चमर सुधमार्गत अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै असुरेन्द्र जी, स्वर्ग सुधर्मे जाय ।
त्यां प्रतिमा नूं शरण कछं, तसु उत्तर कहिवाय ॥ १ ॥
सूत्र भगवती द्वितीय शत, द्वितीय उद्देशा मांय ।
चमर वीर नूं शरण ले, स्वर्ग सुधर्मे जाय ॥ २ ॥
जई सुधर्मे शक्र प्रति, बोल्यो विरुई दान ।
शक्र कोप कर मंकियो, वज्र सु जाज्वलमान ॥ ३ ॥
पछे इन्द्र विचारियो, विन नेशाय सुजोय ।
आवै चमर सुधर्म ए, वृसी शक्ति नहिं होय ॥ ४ ॥
अरिहन्त अरिहन्त चैत्य फुन, भावितात्म अणगार ।
आवै ए तिहुं शरण ले, चमर सुधर्मे धार ॥ ५ ॥
ते माटै महा दुःख ए, अरिहन्त नौ अवलोय ।
भगवन्त ने अणगार नौ, अति आशातन होय ॥ ६ ॥

ते माटे अरिहन्त नौ, प्रतिमा नौ अवलोय ।

शरण कहै छै ते इहां, नथी संभवै सोय ॥ २७ ॥

॥ इति चमर सुधर्मागत अधिकार ॥

॥ अथ इज्जारमूं वली कम्मा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै वली कम्म शब्द, सूत्र विषै बहु स्थान ।

तेह तणुं स्युं अर्थ है, हिव तसु उत्तर जान ॥ १ ॥

पञ्चमुद्देशि द्वितीय शत, तुङ्गिया तणा विचार ।

आवक स्थिविर सु वांद्वा, तयार थया तिह वार ॥ २ ॥

ज्ञान करौ वली कर्म कृत, तास अर्थ वृत्तीकार ।

कौधो है गृहदेवता, देखी हिये विचार ॥ ३ ॥

इमही उववाई में कछो, प्रवृत्ति वादुक कौध ।

वलि कर्म स्व गृहदेवता, वृत्ती विषै सु प्रसिद्ध ॥ ४ ॥

केइक इहां गृहदेवता, जिन प्रतिमा कहै हेव ।

पिण कृतलो जाणै नही, ए किण घरना देव ॥ ५ ॥

तीर्थकर तो है सही, तीन लोक ना देव ।

ते किम जिन प्रतिमा भणौ, घरना देव कहैव ॥ ६ ॥

जिन प्रतिमा जिन सारणी, इम पिण कहता जाय ।

वलि स्थापै घर देवता, ए किण विध मिलसै न्याय ॥ ७ ॥

अरिहन्त ने प्रतिमा तणो, मुनिनो शरण जु थाय ।
 तो छद्म जिन नुं शरण ग्रहणुं, ते किण शरणा मांय ॥१७॥
 अरिहन्त तो केवल धरा, तेह विषे सुविचार ।
 जिन छद्मस्थ तणो शरण, आवै किण विध सार ॥१८॥
 जिन प्रतिमा नुं शरण कहै, तिण मे पिण नहौं आय ।
 द्वितीय शरण जिन विन मुनि, किम तिण विषे कहाय ॥१९॥
 तिण सुं छद्म जिन तणुं, द्वितीय शरण ए होय ।
 जो प्रतिमा नुं शरण जुवै, तो किम आवै मनु लोय ॥२०॥
 सभा सुधमीं थौ निकट, सिद्ध आयतन जाय ।
 जिन प्रतिमा नुं शरण तो, ग्रहण करन्तो ताय ॥२१॥
 ते माटे इहां चैत्य नुं, अर्थ ज्ञान अवलोय ।
 अन्य ठाम पिण चैत्य नुं, अर्थ ज्ञान कछुं सोय ॥२२॥
 चौबीस तीर्थंकर तणा, चैत्य रुंख चौबीस ।
 समवायक विषे कछा, ए ज्ञान रुंख सु जगीस ॥२३॥
 चैत्य ज्ञान केवल लछुं, जिण तरु तल जिनराय ।
 चैत्य वृक्ष ए जाणवा, ए ज्ञान वृक्ष कहिवाय ॥२४॥
 तिमहिज अरिहन्त चैत्य प्रति, चिहुं ज्ञानो अरिहन्त ।
 द्वितीय शरण ए जाणवो, देखोजी मतिवन्त ॥२५॥
 द्वितीय आश्रितन ने विषे, चैत्य स्थान भगवन्त ।
 इहां अर्थ जे भग तणो, कहिए ज्ञान सुतन्त ॥२६॥

॥ सोरठा ॥

मल्ली पिता ने पास रे, आवन्ता म्हाया कच्चा ।

जाव शब्द में तास रे, वली कम्मा ए पाठ है ॥१८॥

वलि मल्ली षट राजान रे, समभावा आवी तदा ।

जाव शब्द में जान रे, वली कम्मा ए पाठ है ॥१९॥

देखो मली भगवान रे, प्रतिमा पूजौ कहनी ।

अध्ययन अष्टम् जान रे, आख्यो ज्ञाता ने विषै ॥२०॥

वलीकम्मा नूँ जाण रे, अर्थ कहै पूजा तणो ।

ए जिन प्रतिमा नी माण रे, के पूजा कुल देव नी ॥२१॥

जो स्थापै जिन विम्ब रे, तो मल्ली तीर्थकर कृतां ।

पूजै तेह अचम्भ रे, वलि प्रतिमा किण जिन तणो ॥२२॥

जिन प्रतिमा नी ताय रे, मल्ली नाय पूजा करौ ।

तो भावे मुनि पाय रे, देखी प्रणमै के नहीं ॥२३॥

वलि अठाद्वीप रे म्हांय रे, भावे जिन उत्कृष्ट थौ ।

इक सौ सित्तर घाय रे, जघन्य बीस थौ नवि घटै ॥२४॥

त्यां द्रव्ये जिन घर माय रे, भावे जिन बंदै के नहीं ।

वलि तसु बाण मुहाय रे, तसु लेखै किम नहिं मुणै ॥२५॥

मलिनाथ घर माहि रे, जिन प्रतिमा पूजौ कहै ।

तो द्रव्ये जिन पिण ताहि रे, भावे जिन बन्दै न किम ॥२६॥

कदापि कुल देवी प्रते, कहिये घर ना देव ।
 लोकीक हिते पूजता, श्रावक पिण स्वमेव ॥ ८ ॥
 जेह देवता शब्द नित, स्त्री लिङ्ग वाची होय ।
 कछुं अमर में ते भणी, न्याय हिये अवलीय ॥ ९ ॥
 नवम उद्देशै सप्तशत, वर्ण कौध वली कर्म ।
 अर्थ देवता नूं कियो, वृत्ति विषै ए मर्म ॥ १० ॥
 वली कर्म नुं अर्थ धर्मसी, ज्ञान तणो ज विशेष ।
 कौधो वलि कर्म शब्द करौ, आया कारज शेष ॥ ११ ॥
 ज्ञाताध्ययने दूसरै, सुत वंछा ने हित ।
 नाग भूत यक्ष पूजवा, गर्ह सुभद्रा तेथ ॥ १२ ॥
 पुष्करणी में ज्ञान कर, कौधा वली कर्म जोय ।
 ए बाव मधे किण देवनी, प्रतिमा पूजी सोय ॥ १३ ॥
 भीनी साडी ओडणै, एहवी हतीज तेह ।
 कमल बहु गद्दी नीकली, पुष्करणी थी जेह ॥ १४ ॥
 बहु पुष्प गन्ध धूपणो, माल्य प्रमुख अवलीय ।
 कांठे जे मूक्या प्रथम, तेह गद्दी ने सोय ॥ १५ ॥
 पछै नाग घर आय ने, प्रतिमा पूजी आम ।
 जाव वै श्रमण नौ वलि, पूजी आखी ताम ॥ १६ ॥
 वली कर्म पुष्करणी विषै, कौधो धुर आख्यात ।
 ते पुष्करणी ने विषै, किसान देवनी जात ॥ १७ ॥

पहलां तो न्हावो कच्चो, पछै कच्चुं वलि कर्म ।
 पछै वस्त्र पहच्या कच्चा, हिव जोवो ए मर्म ॥३६॥
 स्त्री जाति सुभाव नान, धई न्हावा बैठी जेह ।
 त्यां न्हावा ना घर विषै, केहवो पूज्यो देव ॥३७॥
 वली कर्म कर जिन घर विषै, प्रतिमा पूजौ आय ।
 तो वली कर्म मंजन घरे, ते केहनौ प्रतिमा थाय ॥३८॥

॥ सोरठा ॥

अपात चिलातौ न्हाय रे, कय वलि कम्मा पाठ त्यां ।
 जम्बूद्वीप पन्नती मांय रे, किसो देव त्यां पूजियो ॥३९॥

॥ दोहा ॥

कोणिक जिन बन्दन गयो, कच्चो स्नान विस्तार ।
 वली कम्म शब्द ज मूलगो, नद्यो तिहां अवधार ॥४०॥

॥ अथ कोणिक जिन बंदवा गयो त्यां न्हावा
 नूं पाठ उववाई सूत्र में कह्यो ते लिखिये छै ॥

जेणेव मज्झम घरे तेणेव उवागच्छ गच्छत्ता मज्झम घरं अणुप्य-
 विसइरत्ता समुत्ताजाला उलामिरामे विचित्त मणिरयण कुट्टिमत्तले रम-
 णिज्जे ण्हाण मंडवं सि णाणामणिरयण भत्ति वित्तं सि एहाण पीढंसि
 सुहणिसणे सुद्धोदगेहिं गंधोदगेहिं पुण्णोदगेहिं सुमोदगेहिं पुणोदकल्ल-
 णग पवरमज्झम विहिण मज्झिमत्तत्थ कोउयसपहि वहुविहेहिं कल्लोणग-
 पवर मज्झणावसाणे पम्हल सुकुमालगंध कासाडय लूहियगे सरस सुरहि

जो स्थापै कुल देव रे, मछिनाथ पूजा करी ।
सुर सहाय स्वयमेव रे, किम न करै श्रावक समकितौ ॥२७॥
स्नान तणुं ज विशेष रे, अर्थ कहै वली कर्म नूं ।
तो टलियो क्लेश अशेष रे, सहु ठाम विशेष स्नान नूं ॥२८॥

॥ दोहा ॥

भगवतौ नवमां शतक मे, तेतीस में उद्देश ।
जमाली मंजन घर, स्नान वली कर्म शेष ॥२९॥
अलकार कर नौकल्यो, मंजन घर थौ हिव ।
दूष न्हावा ना घर विषै, कहवो पूज्यो देव ॥३०॥
देवा नन्दा ब्राह्मणी, वली कर्म मंजन गेह ।
तिथ न्हावा ने घर किसी, पूज्यो देव कहव ॥३१॥
द्वितीय उपाङ्ग प्रदेशी नृप, देव पूजवा जाय ।
पट्टिलां न्हावा घर विषै, वली कर्म कीधो ताय ॥३२॥
दूष न्हावा ना घर विषै, किसी पूजियो देव ।
देव पूजवा तो हिवै, जावै कै स्वयमेव ॥३३॥
ज्ञाताध्ययने सोल मे, द्रौपदी मंजन गेह ।
स्नान वली कर्म कौतुकः, पवर वस्त्र पहरेह ॥३४॥
मंजन घर सुं नौकली, आवो जिन घर मांय ।
इतरा सूधौ पाठ कै, देख विचारो न्याय ॥३५॥

वृत्तिकार कछु सोय रे, वली कर्म ते गृह देवता ।
 तसु पूजा अवलौय रे, इहां कुल देवी सम्भवै ॥४६॥
 स्नान विशेषण होय रे, वा पूजी यह देवता ।
 उभय अर्थ अवलौय रे, सत्य सर्वज्ञ वदै तिको ॥४७॥

॥ अथ असहेजाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

बलि कहै आवक समकितो, चार जाति ना देव ।
 तास साभ बंछै नहीं, सूत्र विषै ए भेव ॥४८॥
 ते माटे वली कर्म ते, जिन प्रतिमा पूजन्त ।
 पिण कुल देवी अर्थ नहिं, हिव तसु उत्तर मन्त ॥४९॥

॥ सोरठा ॥

असहेज्जा पोठ नू जाण रे, अर्थ दोय है वृत्ति में ।
 आपद पछे सुजाण रे, साभ न बंछै देव नू ॥५०॥
 पोते कौधा पाप रे, ते पोतैहिज भोगवै ।
 अदीन मनोवृत्ति स्थाप रे, एक अर्थ तो इम कियो ॥५१॥
 बलि पाखंडी आय रे, चलावै समकित आदि यो ।
 तो नहीं बंछै सहाय रे, समर्थ स्वयमेव हटायवा ॥५२॥
 बलि जिन शासन मांय रे, अत्यन्त भावित आसता ।
 ते माटे असहाय रे, अर्थ दूजो इम वृत्ति में ॥५३॥

गोसीस चंदणोणु लिच्छगत्ते अहय सु महग्घ, दूमरयण सु संवप सुइ
माला वण्णम विलेवण आविद्ध मणि सुवणे कप्पिय हारद्वहार तिसरय
पालंव पलंवमाणे कडिसुत्त सुकय सोद्वे पिणद्धगे विज्जे अङ्गुलिज्जे कल
लियंगयं ललियं कया मरणे वरकडंग तुदिय थंमियभूय अहिय
रूचसस्तिरीया मुट्टिया पिगलंगुलिय कुंडल उज्जोवियाणणे, मउड
दित्त सरप हारोत्थप सुकयर इयव वत्थे पालंव पलंवमाण पडसुकय
उत्तरिज्जे णाणामणि कणगरयण विमलमहरि हणिउणा वियमि सम-
संति चिरइय सु सिलिद्ध विसिद्ध लद्ध आविद्ध जोर वलये किं बहुणा
कप्पल्लप चेव अलंकिय विभूसिप णरवई सकोरंट मल्लदामेण छत्तेण
धरिज्ज माणेण चउ चामर वालवीजयंगे मंगल जय सह कयालोप
मक्कण बराउ पडिणिल्लक मइमभ २ ता ॥ इति ॥

॥ सौरठा ॥

वली कर्म शब्दे जेह रे, पूजा जिन प्रतिमा तथौ ।
तो कौणिक अधिकारेह रे, जिन वंदन समय ए न किम ॥
जम्बूद्वीप पन्नती एम रे, भर्तेश्वर ना स्नान नूं ।
विस्तार कौणिक जेम रे, त्यां वली कम्मा पाठ नहौं ॥४२॥
स्नान तथौ जिन स्थान रे, विस्तार पणे नवि वरणव्यूं ।
त्यां वली कम्मा जान रे, पाठ देख निरणय करो ॥४३॥
जलाञ्जलि प्रमुख रे, स्नान करंतो जे करै ।
कुरलादिक प्रत्यक्ष रे, स्नान विशेषण एह कै ॥४४॥
ते माटै अवलोय रे, वली कम्मा जे पाठ नूं ।
स्नान विशेषण सोय रे, अर्थ धर्मसौ इम कियो ॥४५॥

तास अर्थ वृत्ति मांय रे, एक ईज कीधो अछै ।
 आपद सुर असहाय रे, एह अर्थ कीधो, नथी ॥६४॥
 कुतूथिंक प्रेरित रे, समकित से अविचल पयो ।
 पर सहाय नवि चित्त रे, उववाई वृत्ति में कछो ॥६५॥
 राय प्रशेखी वृत्ति रे, असहेज्भा नूँ अर्थ छे ।
 कीधो अधिक पवित रे, चित्त लगाई सांभलो ॥६६॥
 कुतूथिंक प्रेरित रे, समकित से अविचल पयो ।
 पर सहाय नवि चित्त रे, यह अर्थ इक हिज तिहां ॥६७॥
 आपद सुर असहाय रे, यह अर्थ कीधो नथी ।
 कुतूथिंक थौ ताहि रे, न चलै एहिज अर्थ त्यां ॥६८॥
 आनन्दादिक सार रे, असहेज्भा पाठ कछो तिहां ।
 छः छण्डी आगार रे, देवाभिलगे पाठ में ॥६९॥
 अन्य तीथी ने धार रे, तथा देव जे तेहनां ।
 अछा भष्ट अणगार रे, अन्य तीथी अछा तेहने ॥७०॥
 न करु वन्दना ताहि रे, नमस्कार पिण नहिं करु ।
 पहलां बोलूँ नाहि रे, अशणादिक देव नही ॥७१॥
 अभिग्रह एह विशेष रे, छः छण्डी आगार त्यां ।
 राजा ने आदेश रे, तथा कुटम्ब आदेश थौ ॥७२॥
 बलवन्त तणै प्रयोग रे, देव तणै परवश पयै ।
 कुटम्ब बडा ने योग रे, अठवी विषेज कारणै ॥७३॥

तुझिया ने अधिकार रे, उभय अर्थ ये आखियो ।
 तास न्याय सुविचार रे, चित्त लगाई सांभलो ॥५४॥
 दूजो अर्थ पहिछाय रे, समकित ब्रत सैंठा प्रयो ।
 प्रवर मूल गुण जाण रे, एह अवश्य गुण चाहि ओ ॥५५॥
 ए गुण खण्डित पाय रे, तो कुवै विराधक पांति में ।
 शुद्ध हुवां सुं ताय रे, आराधक पद आखियो ॥५६॥
 जो प्राखण्डो ने जीह रे, जाब देवा समरथ नहीं ।
 पर सहाय बिन तेह रे, तासु चलायो नवि चलै ॥५७॥
 तो पिण मूल गुण तास रे, तेहनुं न गयुं सर्वथा ।
 समकित ब्रत नौ राग रे, अखण्ड पणै राखी तिणे ॥५८॥
 आपद पडियां आय रे, सुर सहाय बंछै नहीं ।
 ए धुर अर्थ कहाय रे, उत्तर गुण ते आणवू ॥५९॥
 मुनि धुर पहिर सभाय रे, द्वितीय पहिर में ध्यान वर ।
 तृतीय गोचरी जाय रे, चौथे पहिर सभाय फुन ॥६०॥
 उत्तर गुण ए चार रे, कछा विचक्षण मुनि तणै ।
 ज्यो न करै अणगार रे, तो संयम में भङ्ग नहीं ॥६१॥
 तिम आवक रे एह रे, उत्तर गुण असहायता ।
 सुर सहाय बंछिह रे, तो समकित में भङ्ग नहीं ॥६२॥
 सूत्र उववाई मांहि रे, अम्बड ने अधिकार पिण ।
 जाब शब्द में ताहि रे असहेज्जा ए पाठ है ॥६३॥

कृष्णो पिण सुविशेष रे, लघु बधव रै कारणै ।
 देव आराध्यो देख रे, अन्तगड मांही कछो ॥८४॥
 चक्रौ भरत सु सोय रे, देवी देव भणी तिणै ।
 जम्बूद्वीप पन्नत्तौ जोय रे, अट्टम करि आराधियो ॥८५॥
 बलि मूक्या छः बाण रे, नमस्कार सुर ने लिख्यो ।
 ए प्रत्यक्ष ही पहिछाण रे, बन्ध्यो सहाय देवनू ॥८६॥
 बलि चक्रौ भरतेश रे, चक्र तणी पूजा करौ ।
 द्रमहिज सुर सम्पेख रे, पूजै स्वार्थ कारणै ॥८७॥
 शान्ति कुंथु अरि जाण रे, चक्र रतन पूज्यो कै नां ।
 खट खण्ड साधत पाण रे, अट्टम तेर किया कै नां ॥८८॥
 लवण सुट्टियो देव रे, कृष्णो पिण आराधियो ।
 ज्ञाता सोलम भेव रे, सुर सहाय बन्ध्यो तिणै ॥८९॥
 पूर्वोक्त पहिछाण रे, देव सहायज बान्छवै ।
 सम्यक् दृष्टि जाण रे, सावदा लोकिव कृत करै ॥९०॥
 समकित तास न जाय रे, नही जाय श्रावक पणो ।
 जो सुर पूजै नाहि रे, तो गुण अधिकैरो अछै ॥९१॥
 नारद केरा पाय रे, दुपद सुता प्रणम्या नथी ।
 ए गुण छै अधिकाय रे, पिण मांडू प्रणमत करौ ॥९२॥
 जाव शब्द रे मांहि रे, कृष्णो पिण नारद भणी ।
 प्रणमत कीधी ताहि रे, पिण तसु समकित नवि गर्दौ ॥९३॥

ए खट तथै प्रकार रे, अन्य तीर्यादिक त्रिहुं भणी ।
 बन्दै करि नमस्कार रे, अशणादिक दे तेहने ॥७४॥
 आपद उपजै आय रे, अथवा तेहना भय थकी ।
 बांछै देव सहाय रे, जाणै सावदा तेहने ॥७५॥
 तसु समकित किम जाय रे, समकित तो श्रद्धा अछै ।
 हिये विचारो न्याय रे, श्रद्धा कार्य जुवा जुवा ॥७६॥
 छः छगडौ विन त्याग रे, ए पिण गुण अधिकाय छै ।
 अधिकैरो बैराग रे, ब्रत सांकडा जेहना ॥७७॥
 ब्रक चस ना पच्चखाण रे, कौधां से आवक जुवै ।
 शतक सतरमें जाण रे, द्वितीय उद्देशै भगवती ॥७८॥
 अर्थ दण्ड परिहार रे, ए आठमूं ब्रत छै ।
 अर्थ तणो आगार रे, न्याय हिवै तेहनुं सुणो ॥७९॥
 अर्थ दण्ड में एह रे, आठ आगारज आखिया ।
 द्वितीय सुयगडांगेह रे, द्वितीय उद्देशै देखल्यो ॥८०॥
 आत्म ज्ञात घर तेथ रे, परिवार ने मित्र कारणै ।
 नाग भूत यच्च हेत रे, हिंसादिक आरम्भ करै ॥८१॥
 अर्थ दण्ड रै मांहि रे, ए आठूं ही आखिया ।
 नाग भूत यच्च ताय रे, आवक रै आगार छै ॥८२॥
 धारणी नो तिहवार रे, अकाली घन डोहला अर्थ ।
 देखी अभय कुमार रे, ज्ञाता सुर आराधियो ॥८३॥

॥ अथ १२ मूं यात्रा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

यात्रा शेरुंजादि नौं, करवी केइक ग्यात ।
 पिण ए यात्रा सूत्र में, कही नथी जगनाथ ॥ १ ॥
 शतक अठारमें भगवती, दशमें उद्देशै सार ।
 सोमल पूछा वीर प्रते, प्रश्न यात्रादि प्रकार ॥ २ ॥
 हे भगवन्त ! स्यूं थांहिरै, यात्रा अधिक उदार ।
 इम सोमल पूछां थकै, उत्तर दे जगतार ॥ ३ ॥
 जिन भाषै सुण सोमिला, कै मांहिरै सुखकार ।
 तप अणशणादिक नियम, तेह अभिग्रह सार ॥ ४ ॥
 संयम वलि सज्जाय ते, धर्म कथादिक जाण ।
 ध्यान आवश्यक आदि वर, जोग विमल पहिछाण ॥ ५ ॥
 ए पूर्व कछा तेहने विषै, जयणा प्रते राखै जिह ।
 ते मांहिरै यात्रा अछै, कछा पवर बच एह ॥ ६ ॥
 पिण शत्रुहयदिक तणी, जिन यात्रा कही नांहि ।
 देखोजी देखो तुम्हे, देखो हिवडा मांहि ॥ ७ ॥

॥ सोरठा ॥

वृत्ती विषै इम वांय रे, यद्यपि प्रभू कीवल पणै ।
 आवश्यादि ताथ रे, बोल केइक नहीं कै तमु ॥ ८ ॥

प्रत्यक्ष ही पहिछाण रे, समदृष्टि आवक तिके ।
 शीश नमावै जाण रे, स्नेह ना राजा प्रति ॥६४॥
 तिमहिज डरता ताय रे, अथवा स्वार्थ कारणे ।
 प्रणमै सुर ना पाय रे, ते मार्ग लोकीक छै ॥६५॥
 ते माटे पहिछाण रे, पाखण्डौ थौ नवि चलै ।
 दृढ़ आसता जाण रे, भूल अर्थ असहेज्म नूं ॥६६॥
 वलिजे कहै इम बाणि रे, सुर सहाय नही बञ्छणो ।
 तो चौबोस जिनना जाण रे, चौबोस यक्ष यक्षणी कहै ॥
 शासण देव सहाय रे, तसु थुई पडिक्कमणै पढ़ै ।
 वलि शेवुंजे ताय रे, पूजे कीम चक्के श्वरौ ॥६७॥
 तथा यती यक्षां प्रत्यक्ष रे, काला गौरा भैरव ।
 माणभद्र दिक यक्ष रे, आरधै रक्षा भणी ॥६८॥
 ए लेखै तो जोय रे, सहाय देवनो बञ्छवै ।
 निज श्रद्धा अवलोय रे, तुम गुरु पिण नहीं समकिती ॥
 पूजे भैरव आदि रे, आवक परणीजै तदा ।
 शीतलादिक अहंछाद रे, तुम्ह लेखै नहीं आवक पणो ॥
 तिणसूं देव सहाय रे, लौकिक खातै बञ्छता ।
 सम्यक्त तास न जाय रे, नहीं जावै आवक पणो ॥१०२॥

शेतुंज्मे पव्वए सिद्धे, सूत्र में इम गिरि ख्यात ।
 पिण शेटुञ्जे तीर्थ सिध, इम न कंझो गणि नाथ ॥१८॥
 जागां अलाहदी जाणि ने, कीधा तिहां संथार ।
 बन्दनीक तो गुण अछै, जीवो हिये विचार ॥१९॥
 जीव रहित तनु तेहनु, ते पिण नहिं बन्दनीक ।
 तो जागां बन्दनीक किम, न्याय विचारो ठीक ॥२०॥
 नाज खला थो ले करी, घाल्यो जे कोठार ।
 सूना खला लारै रक्षा, चाटै तेह गिमार ॥२१॥
 हुण्डी जे लाखां तणी, सिकारता जे स्थान ।
 काल कितलै शेटजी, छोड़ी तेह दुकान ॥२२॥
 हिव हुण्डी सिकारै नहीं, तेह दुकाने जोय ।
 तिम शेटुञ्जादिक विषै, जिन मुनि सिद्धा सोय ॥२३॥
 हिव ते पर्वत ने विषै, हुण्डी तणू ज सोय ।
 सिकारण वाली नहीं रह्यो, बन्दनीक किम होय ॥२४॥
 बन्दनीक जो गिर हुवै, तो तिण ऊपर ताय ।
 पग दीधां आशातना, हुवै तुभा अद्धा न्याय ॥२५॥
 हीप अटार्इ ने विषै, दोय समुद्र विषेह ।
 सह ठामे सिद्धा मुनी, पन्नवणा सोलम एह ॥२६॥
 जिहां एक सिधा तिहां, सिधा मुनि अनन्त ।
 सूत्र उववार्इ ने विषै, भाख्यो श्री भगवन्त ॥२७॥

तथापि तप नियमादि रे, तमु फल ना सदभाव थी ।
तप नियमादि संवाहिं रे, कहिये फल ते आसरी ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

द्रुमहिज पुष्पिया उपाङ्ग में, दृतीय अध्ययन सभार ।
पार्श्वनाथ भगवन्त प्रते, सीमल विप्र जिंवार ॥ १० ॥
प्रश्न यात्रादिक पूछिया, तप नियमादि प्रवृत्ति ।
पार्श्व प्रभू यात्रा कहौ, पिण गिरि नौ न कथित ॥ ११ ॥
ज्ञाताध्ययने पंचमें, मुनि स्थावरचा पूत ।
तेह प्रते शुक् पूछिया, प्रश्न यात्रादि प्रभूत ॥ १२ ॥
हे भदन्त ! यात्रा किसी, शुक् पूछे ए सार ।
कछु यावरचा पुल द्रुम, ओ मुक्त ज्ञान उदार ॥ १३ ॥
दर्शन चारित्र तप बलि, संयम आदि विचार ।
योगे यत्नी जीवनी, ए मुक्त यात्रा धार ॥ १४ ॥
इहां पिण यात्रा एह ही, ज्ञानादिक नौ जोय ।
पिण श्रेष्ठज्ञा आदि नौ, यात्रा न कहौ कोय ॥ १५ ॥
उत्तराध्ययन सु वारमें, हरिकेशी प्रति सार ।
विप्र पूछियो थांहिरे, कुण द्रह तीर्थ उदार ॥ १६ ॥
धर्म रूप मुनि द्रह कह्यो, ब्रह्मचर्य अवलोय ।
तीर्थ शान्तिकारी कछ्यो, पिण गिरने न कह्यो कोय ॥ १७ ॥

॥ सौरठा ॥

तीर्थ आगम धार रे, अमर कोष में आखियो ।
 तीजा काण्ड मभार रे, थांतत वर्गे जाणवो ॥ ६ ॥
 निपान आगम जेह रे, ऋषि सिव्यो जल गुरु विषे ।
 ए चिहं अर्थ विषेह रे, तीर्थ शब्द कह्यो तिहां ॥ ७ ॥

॥ श्लोक ॥

निपानाऽगमयो तीर्थ ऋषि जुष्ट जले गुरौ ॥
 ब्रह्मर तृतीय काण्डे थांतत वर्गे ॥

॥ सौरठा ॥

तीर्थ शास्त्र अवधार रे, हेम अनेकार्थे अख्यूं ।
 द्वादश नाम मभार रे, प्रथम नाम ए आखियो ॥ ८ ॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थे शास्त्रे १ गुरौ २ यज्ञे ३ पुण्य क्षेत्रा ४ वतार
 यो ५ ऋषि जुष्टे ६ जले मंत्रिगुणं ७ पाये ८ स्त्री
 रजस्यपि ९ ॥ योनौ १० पात्रे ११ दर्शनेषु १२ ॥

॥ इति हेम अनेकार्थे ॥

॥ सौरठा ॥

विश्व कोष रे मांहि रे, तीर्थ नाम कह्युं शास्त्र नूं ।
 नव नामा में ताहि रे, प्रथम नाम ए पेखियो ॥ ९ ॥

ब्रह्म लेखै तुम्ह बन्दवा, अठ्ठीद्वीप अवधार ।
 फुन वै दधि प्रति बन्दवा, त्यां सिधा अणगार ॥२८॥
 ते माटै बन्दनौक छै, जिन मुनि महा गुणधार ।
 पिण स्थानक बन्दनौक नहौं, वारुं न्याय विचार ॥२९॥

॥ इति यात्रा अधिकार ॥

॥ अथ १३ मूं इक्कीस हजार वर्ष
 तीर्थ रहसी ते अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

सूत्र भगवती में कह्यो, बीसम् शतक विधिह ।
 अष्टमुद्देशक वीर प्रति, गोयम प्रश्न करेह ॥ १ ॥
 जम्बूद्वीप ना भरत में, ए अवशर्पिणी माहि ।
 काल केतलुं आपरो, तीर्थ रहिस्यै ताहि ॥ २ ॥
 जिन कहै जम्बू भरत में, एह अवशर्पिणी मन्त ।
 वर्ष सहस्र इकबीस मुझ, तीर्थ रहिस्यै तन्त ॥ ३ ॥
 तीर्थ कहिजै कहने, इस को प्रश्न करेह ।
 तसु उत्तर तीर्थ तीको, आगम सूत्र कहिह ॥ ४ ॥
 वर्ष सहस्र इकबीस लग, रहिस्यै सूत्र उदार ।
 वहु ठामे जे तीर्थ नुं, सूत्र अर्थ सुविचार ॥ ५ ॥

७४] * इकीस हजार वर्ष तीर्थ रहती ते अधिकार *

तीर्थ प्रबचन सार रे, तेहना अव्यतिरेक थी ।

संघ तीर्थ सुविचार रे, तसु कर्ता तीर्थकरा ॥१३॥

॥ अत्र टीका ॥

तस्मिन्नि तेन संसार सागरमिति तीर्थं प्रबचनं तदव्यतिरेकबोधः
संघः तार्थं ततः करणं शीलत्वा तीर्थकरः ।

॥ एहनुं अर्थ वार्तिका करिइ कहै छै ॥

तिरे तिणकरी संसार सागर इति तीर्थ ते तीर्थ ने करिवा नो शील
पणा यकी तीर्थकर कहिये, इम भगवती नी वृत्ति में नमोत्पूण में
तिरथगज नो अर्थ कियो, इमहिज समवस्यग नी वृत्ति ने विषे जाणवो,
इहां तीर्थ नाम प्रबचन सूत्र नुं कह्युं, ते पाठ अर्थ रूप सूत्र साधु साध्वी
आधार रखा छै अने अर्थ रूप सूत्र आवक आविका ने आधार रखा छै ते
सूत्र तीर्थ तो आयेय छै अने चतुर्विध संघ आचार छै ते अयेय ने आधार
ना किण ही प्रकारे करी अभेदोपचार यकी संघ ने तीर्थ कहा तेहने
करिवा नूं शील ते माटे तीर्थकर कहिये ।

इहां मुख अर्थ प्रबचन ने तीर्थ कहा ते प्रबचन रूप तीर्थ बहुल पण
संघ ने विषे रखा छै त्रिण सू संघ ने तीर्थ कहा ते प्रबचन रूप तीर्थ
यो संघ जुद्धो नथी ते माटे ।

॥ सोरठा ॥

तीर्थ प्रबचन सार रे, तत् कारण शील तीर्थकरा ।

नमोत्पूण में धार रे, राय प्रशेणी वृत्ति मे ॥१४॥

॥ अत्र टीका ॥

तीर्थ ते संसार सनुद्रोऽनेनेति तीर्थं प्रबचनं तत् कारणं शीलस्तीर्थ
करः तेभ्यः ॥ इति ॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थ शास्त्रा १ ध्वर २ जेतो ३ पायो ४ पाध्याय ५
मंदिषु ६ अवता ऋषि ७ जुष्टांभः ८ स्त्री रजः ९ सु
च वि श्रुतं ।

॥ इति विश्वे यातत वर्गे ॥

॥ सौरठा ॥

तीर्थ शास्त्र इम लेख रे. कच्छो मेंदनी कोष में ।
दश नामा में देख रे. प्रथम नाम ए परबरो ॥१०॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थ शास्त्रा १ ध्वर २ जेतो ३ पाय ४ नागीरजः ५
सु च । अवता ऋषि ६ जुष्टांव ७ पात्री ८ पाध्याय ९
मंदिषु १० ।

॥ इति मेदनी यातत वर्गे ॥

॥ सौरठा ॥

गुणातीसमं उक्तगध्ययनं रे, बोल गुनीरुम वृत्ति में ।
तीर्थ शब्दे वयण रे. गणधर वा प्रवचन श्रुतः ॥११॥
भगवई वृत्ति मभार रे. तिल्य गराणं नो अर्थ ।
तीर्थ प्रवचन सार रे, इमहिज समवायइ वृत्तौ ॥१२॥

[६६]

इकीस हज़ार वर्ष तीर्थ, रहती, ते, अधिकार

सिद्धः इहां पिण परम गुरु ते तीर्थकर तेहना बचन ते आग्रम तेहने तीर्थ
कह्यो, ते आग्रम आधार पिना न हुवै तें आधार माटे संघ ने तयो प्रथम
गणधर ते तीर्थ कह्यो ।

॥ सोरठा ॥

आवश्यक निर्युक्ति रे, तास अर्थ में भाव घौ ।
तीर्थ प्रवचन उक्त रे, समर्थ क्रोधादि जीपवा ॥१८॥

॥ अत्र टीका ॥

इह भाव तीर्थ क्रोधादि निग्रह समर्थ प्रवचन में ग्रहणे ।

॥ एहनुं अर्थ ॥

इहां भाव तीर्थ क्रोधादि निग्रह समर्थ प्रवचन सूत्र हीन ग्रहण
करिये, इहां पिण प्रवचन सूत्र ने तीर्थ कह्यो ।

॥ सोरठा ॥

द्वय्यादिक बहु ठाम रे, तीर्थ सूत्र भणौ कछु ।
ते तीर्थ प्रवचन ताम रे, रहस्येय कबीस सहस्र वर्ष ॥१९॥
प्रवचन तीर्थ सोय रे, सब धांधारे हुवै कदा ।
किणहिक वेलां जीय रे, द्रव्य लिह्यो आधार हुवै ॥२०॥
जद जो प्रश्न करत रे, मुनिना गुण बिन जेहनुं ।
अग्रयं सूत्र किम हुन रे, तसु उत्तर दित्त तामलो ॥२१॥
धुरं उद्देशेय कह्यो रे, बहु श्रुत बहु धामें भण्युं ।
द्रव्य लिह्यो जे धार रे, मुनि प्रायश्चित ले तिण क्रम ॥२२॥

॥ एहनुं अर्थ वार्तिका करोइं कहै छै ॥

तीरीयै संसार समुद्र हणे करी इति तीर्थ प्रवचन सूत्र ते सूत्र तीर्थ करिवा ना शील थकी तीर्थकर कहिये, इहाँ राय प्रशेणी नी वृत्ति में प्रवचन ते आगम वे तीर्थ कह्युं ते आगम रूपी तीर्थ ना कर्सा तीर्थकर छे ने माटे तीर्थयरे नो अर्थ तीर्थ कर कियो ।

॥ सोरठा ॥

पद्मवत्सा वृत्ति मभार रे, पनर मेद सैं तित्व सिद्धा ।
प्रथम पदे अवधार रे, दाख्यो छै ते सांभलो ॥१५॥
सत्य प्ररूपक सोय रे, परम गुरु छै तेहना ।
बचन विमल अवलोय रे, तीर्थ कहिये तेहने ॥१६॥
ते निराधार नहिं होय रे, तसु आधारज संघ प्रति ।
तीर्थ कहिये जोय रे, वा धुर गणधर तिहां कछ्युं ॥१७॥

॥ अत्र टीका ॥

तीर्थ ते संसार सागरो अनेनेति तीर्थ यथा अवस्थित सकल जीना-
जीवादि पदार्थ पररूपक परमगुरु प्रणीत बचन तख निराधार न भवति
इति तदा धार संघः प्रथम गणधरो वा तस्मिन् उत्पन्नाये सिद्धाहस्ते
तीर्थ सिद्धा ।

॥ एहनुं अर्थ वार्तिका करोइं कहै छै ॥

तीरीयै संसार सागर हणे करी इति तीर्थ यथावस्थित सकल जीव
अजीवादि पदार्थ ना पररूपक परम गुरु ना कहा बचन तेहने तीर्थ
कहिये अने ते परम गुरु ना बचन रूप तीर्थ ते आधार बिना न हुबे इन
ते संघ ने आधार छे ते मणी संघ ने तीर्थ कह्यो, अथवा प्रथम गणधर
ने तीर्थ कहिये ते संघरूप तीर्थ ने विषे ऊपना जे सिद्ध यथा ते तीर्थ

संघ आधारे जेह रे, सूत्र रूप जे तीर्थ ते ।
 निरन्तर नहीं दीसेह रे, वर्ष सहस्र इकबीस लग ॥३०॥
 कदही संघ आधार रे, कदही अन्य आधार हुवै ।
 सूत्र तीर्थ मुखकार रे, वर्ष इकबीस हजार लग ॥३१॥
 कोई कहै चिहुं विध मल्ल रे, तेह भणौ तीर्थ कछा ।
 तसु आधार सु चह्न रे, प्रवच तीर्थ ते भणौ ॥३२॥
 पिण प्रबचन सु प्रशंस रे, द्रव्य लिङ्गी आधार तसु ।
 तीर्थ तणोज अंश रे, किम कहिये ? उत्तर तसु ॥३३॥
 पण्डित मर्ण विख्यात रे, अत दूजै उद्देश धुर ।
 पाउवगमन सुजात रे, भक्त पञ्चखाण ज दूसरो ॥३४॥
 मुख बचने करि न्हाल रे, मरण पण्डित बे आख्या ।
 मुनि अणशण बिन काल रे; करै तिको पण्डित मृत्यु ३५
 बाल मर्ण फुन बार रे, मुख्य बचन करि ने कछा ।
 बार मरण बिन धार रे, असंयती नो बाल मृतक ॥३६॥
 पूरण तापश ताहि रे, बलि जमालौ तामली ।
 बार मरण में नाहिं रे, पिण बाल मरण ते जाणवौ ॥३७॥
 मुख्य बचन करि बार रे, बाल मरण आख्या प्रभू ।
 तिम तीर्थ संघ चार रे, मुख्य बचन करि जाणवा ॥३८॥
 पण्डित मरण पिण दीय रे, मुख बचने करिने कछा ।
 तिम चिहुं तीर्थ जोय रे, मुख्य बचन करि जाणवा ॥३९॥

इहां द्रव्य लिह्यो आधार रे, सूत्रागम भौ जिन कछो ।

तसु श्रद्धा आचार रे, विरुद्ध हुवै ते तो जुदो ॥२३॥

॥ वार्त्तिका ॥

घबहार उद्देशे पहले कह्यो साधू ना रूप सहित भेषधारी बहु श्रुत बहु
आगम नूं जाण ते कनै साधू आलोचना करै पहवुं कहां ए भेषधारी ने
आधार बहु श्रुत यह आगम कह्यो छै ते माटे-तेहुं जेतलुं जेतलुं शाल
ना अर्थ नूं-शुद्ध जाण पणो ते श्रुत आगम रूप तथै नूं अंश संभवै ते माटे
किण हिक काले चतुर्विध संघ न हुवै तो खिलावारी ने आधारे प्रवचन
रूप तीर्थ नो अंश हुवै पहवुं संभाधियै छै ।

॥ सोरठा ।

बलि बवहार कथित रे, बहु श्रुत आगम भण्य ।

श्रावक पश्चात्कृत्य रे, मुनि आलोचै तिण कनै ॥२४॥

इहां ग्रहस्थ आधार रे, बहु श्रुत आगम जिन कछो ।

तसु सावदा व्यापार रे, ए तो एह थौ छै जुदो ॥२५॥

अर्थ रूप अवलोच रे, जाण प्रण छै जेह नूं ।

ते-निर्वदा छै सोय रे, चूत तीर्थ छै जे भणौ ॥२६॥

मित्थ्या दृष्टि देख रे, दिश-छाण दश-पूर्व-धर ।

उत्कृष्टो रामरेख रे, नन्दौ मांहि निहलज्यो ॥२७॥

मित्थ्याती आधार रे, इहां प्रभू पूर्व अखिया ।

श्रद्धा तास असार रे, ते तो धुर आसव अछै ॥२८॥

इमं धिज मञ्जु चार रे, किण बेत्थां मुनि-नहिं घया ।

द्रव्य-लिङ्गाद्या धार रे, सूत्र रूप तीर्थ हुइ ॥२९॥

ते माटे अवधार रे, तीर्थ प्रवचन सूत है ।
कंदहि संव आधार रे, द्रव्य लिङ्गी आधार कदि ॥४२॥

॥ दोहा ॥

सूत्र भंगवन्ती नी पंवर, नम कृत जोड विषेह ।
वलि कर्म तीर्थ न्याय कछु, ते इहां ग्रहण करेह ॥४३॥
॥ इति इकीस हजार वर्ष तीर्थ रहसी ते अधिकार ॥

॥ अथ चौदसूं आगमा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

पञ्च अने चालीस में, जे चिहुं शरण विचार १ ।
नाम भक्त परिचार वलि, पुन पईत्रो सन्यार २ ॥ १ ॥
जौत कल्प ४ पिंड नियुक्ति ५, पंचखाण कल्प चवलोय ।
ए खट नी नन्दौ विषे, साख नहीं है कोय ॥ २ ॥
मैंहा निशीथ विषे कछु, द्वितीय अध्ययन मभार ३ ।
कुं लिखत दोष देवो नहीं, तसु कारण अवधार ॥ ३ ॥
एहिज महा निशीथ मे, किहां एक अर्ह शीलोग ।
किहां श्लोक किहां अक्षर नौ, पंक्ति ओली प्रयोग ॥ ४ ॥
किहां एक पानो अर्ह ही, किहां पद बे तीन ।
गल्यो ग्रन्थ इम आदि बहु, इह विध कछु सुचीन ५ ।
वलि कछु द्वितीय अध्ययन में, ए पुस्तक रे मांहि ।
चटो ब्रूक पाना यकी, बोली पानो ताहि ॥ ६ ॥

॥ एहिज अर्थ वार्तिका करीइं कहै छै ॥

जिम भगवती शतक दूसरे उद्देशे पहलै मुख्य बचने करी बाल मरण बारा प्रकार नो कह्यो अने असंयती अविरती बारा प्रकार विना चालतो ही मर जाय ते पिण बाल मरण हिज छै, तथा तामली जमाली प्रमुख नो बाल मरण हीज छै पिण ते बारा में नथी कह्यो ते माटै ये बार प्रकार बाल मरण मुख्य बचने करी जाणवो, या बलि पण्डित मरण वे प्रकार कक्षा एक तो पादोपगमन दूजो भक्तपञ्चखाण ए पिण मुख बचने करी कक्षा, जे साधू संथारा बिना आराधक पद पायो तेह पिण पण्डित मरण हिज छै जिम भवानुभूति तथा सु नक्षत्र मुनि नो संथारो चाल्यो नथी ते भणी भक्त प्रत्याख्यान पादोपगमन तो नथी पिण पण्डित मरण हिज छै अने पादोपगमन भक्त पञ्चखाण ए वे भेदे पण्डित मरण कक्षा ते मुख्य बचने करी जाणवा, तथा आराधना हान दर्शन चारित्र ए तीन प्रकार नी भगवती शतक आठमें उद्देशे दशमे कही ते पिण मुख्य बचने करी जाणवी, अने बलि तिणहिज उद्देशे श्रुत ते समकित रहित अने शील क्रिया सहित ने देश आराधक कह्यो तिहाँ वृत्तीकार कह्यो ए बाल तपस्वी थोडो अंश मुक्ति मार्ग नो आराधै एहवो अर्थ कियो छै जिम ज्ञान रहित शील सहित बाल तपस्वी मोक्ष मार्ग नो अंश आराधै ते देश आराधक छै पिण तीन आराधना में नथी तिम वृथ लड़्डी ने आधार प्रवचन स्र ते तीर्थ नो अंश संभवै पिण ते च्यार तीर्थ मे नथी ।

॥ सौरठा ॥

वर्ष इक्कीस हजार रे, तीर्थ रहिस्यै न्याय तसु ।

एम संभवै सार रे, फुन बहु श्रुत कहै तेह सत्य ॥४०॥

वर्ष इक्कीस हजार रे, तीर्थ रहिस्यै इम कह्यो ।

पिण चिहुं तीर्थ सार रे, रहिस्यै इम आख्यो नथी ॥४१॥

हरिभद्र सूर करी, दशवैकालिक वृत्ति ।
 भाष्य अने वलि चूर्णि पिण, पूर्वाचार्य कृत ॥१७॥
 तिम ए षट नौ नवि करी, पूर्वाचार्य जोय ।
 तिष्ठ सं तिणे न मानिया, एहवुं दीसि सोय ॥१८॥
 शेष रक्षा बत्तीस जे, मानव योग आरोग्य ।
 एह घी मिलता अन्य पिण, है मुक्त मानव योग्य ॥१९॥

॥ इति आगमा अधिकार ॥

॥ अथ पनरम मुख वस्त्रिका अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

इन्द्रभूति ने आखियो, सृगा राणी ताहि ।
 मुंहपोतिया इ करी, मुख बांधी मुनिराय ॥ १ ॥
 ते मुख कहिये कहने, उत्तर तसु अवलोक्य ।
 भाक तसो ए नाम मुख, न्याय विचारी जोय ॥ २ ॥
 दुर्गन्ध आवै नाक ने, ते माटै सुविचार ।
 भाक बांधवा नी कहौ, राणी सृगा जिवार ॥ ३ ॥
 ज्ञाता अध्ययन आठमें, दुर्गन्ध व्याप्या ताहि ।
 षट राजा मुख ठाकिया, ते दुर्गन्ध नाके आय ॥ ४ ॥
 ज्ञाता भवम अध्ययन में, दुर्गन्ध व्याप्या न्हाल ।
 मुख ठाकवा आख्या तिकां, जिन ऋषि ने जिन पाल ॥ ५ ॥

ते माटै ए सूत्र ना, आलावा न पामेह ।
 तिहां भणणहार सूत्रां तणा, त्यां अशुद्ध लिख्युं हुवै जेह ॥
 दोष न देवो तेहनो, खंड खंड थई एह ।
 पत्र सद्या खाधा बलि, जीव उहेहि जेह ॥ ८ ॥
 हरिभद्र निज मति करी, सांधी लिख्युं ज ताम ।
 इम कछुं महा निशीथ में, बलि अन्य आचार्य्य नाम । ९ ॥
 तिण सूं महा निशीथ पिण, डोहलाणो है एह ।
 सर्व मूलगो नहि रक्षो, निपुण बिचारी लेह ॥ १० ॥
 शेष रक्षा षट तेह में, काइक काइक बाय ।
 अइ सं न मिलै तेह वच, किम मानौजे ताहि ॥ ११ ॥
 टीका चूरणि दीपिका, भाष्य निर्युक्ति जाण ।
 किणही करौ दोसै नथी, तिण सूं एह अप्रमाण ॥ १२ ॥
 एकादश जे अइ थी, मिलता वचन मुजाण ।
 सर्व मानवा योग्य मुक्त, पद्मना प्रमुख पिछाण ॥ १३ ॥
 धुर बे अइ नौ वृत्ति जे, शौलाचार्ये किह ।
 अभय देव सूरै करी, नव अइ वृत्ति प्रसिद्ध ॥ १४ ॥
 फुन अभय देव सूरै रची, प्रथम उपांग प्रबन्ध ।
 चन्द्र सूरि विरचित वृत्ति, निरावलि या श्रुतस्कन्ध ॥ १५ ॥
 शेष उपांग अरु छेदनौ, मलयामिरि कृत जोय ।
 हेमाचार्य वृत्ति करी, अनुयोग वार जौ सोय ॥ १६ ॥

तथा तर्पणी प्रमुख ते, डोरी बांधै तास ।
 ते किण सूत्रे आखियो ? जोबो हिये विमास ॥३६॥
 कम्बर विछाणा नौ करै, तसु डोरी बांधिय ।
 ते पिण किण सूत्रें कछुं ? न्याय विचारौ लेह ॥३७॥
 बलि सौराणा बांधता, डोरी थकीज जोय ।
 ते पिण किण सूत्रे कछुं, उत्तर आयो सोय ॥३८॥
 बलि चिरमली सूत्र में, आख्यो श्री भगवान ।
 तसु डोरी बांधै तिका, किसा सूत्र में जान ? ॥३९॥
 पुस्तक ने पृठा तथै, पडखा रै पहिछाण ।
 डोरी बांधै है तिका, किसा सूत्र में जान ? ॥४०॥
 बलि लेखना राखवा, कलमदान कहिवाय ।
 डोरी बांधै तेह ने, किसा सूत्र रे न्हाय ? ॥४१॥
 लिखवारी पाटी तथै, डोरी प्रति बांधिह ।
 किसा सूत्र मे ते कछुं, देखो तसु लेखिह ॥४२॥
 तथा लोका पाना तथै, डोरी श्री पाडेह ।
 फांखा नौ पाटी करै, किसा सूत्र में तेह ? ॥४३॥
 कारण में मग प्रमुख रै, पाटी बांधै देख ।
 डोरी बांधै तेह ने, किसा सूत्र में लेख ? ॥४४॥
 गोहारै डोखां थकी, पाना बांधै तेह ।
 किसा सूत्र मांही कछो ? उत्तर आयो रह ॥४५॥

ज्ञाता अध्ययन बारमें, जे जितशब्द राख ।
 मुख ठांकी इस आखिया, दुर्गन्ध व्यापे ताय ॥ ६ ॥
 मुखनो अवयव नाक छै, ते नाक भणौ मुख ख्यात ।
 वारु न्याय विचार ने, समझौ सुगुण सुजात ॥ ७ ॥
 होट इडवटी नाक फुन, चक्षु गाल निलार ।
 मुखना अवयव ते भणौ, मुख कहिये सु विचार ॥ ८ ॥
 धुर अह प्रथम अध्ययन में, द्वितीय उद्देश उद्दंत ।
 पृथिवी बेदन ऊपरै, अन्ध पुरुष दृष्टन्त ॥ ९ ॥
 पग सूं खेई शिर लगै, तनु द्वाविंशत् स्थान ।
 भाषा सूं भेदै बलि, खड्गो छेदै ज्ञान ॥ १० ॥
 तिहां होट इडवटी नाक फुन, आंख जीभ ने दन्त ।
 गाल निलार अरु कर्ण फुन, जू जूया नाम कथन्त ॥ ११ ॥
 ए मुखना अवयव कक्षा, पिण मुख नो न कक्षो नाम ।
 ते माटै ए सङ्ग भणौ, मुख कहिये छै ताम ॥ १२ ॥
 द्वादश आंगुल मुख कक्षो, नव मुख नो सङ्ग देह ।
 अनुयोग द्वारे आखियो, देखो पाठ विषेह ॥ १३ ॥
 ललाट यौ खेई करै, द्वादश आंगुल जाण ।
 नाक होट ने इडवटी, ए मुख तणुं प्रमाण ॥ १४ ॥
 गर्गाचार्य ना कुशिष्य, मुख ने विषै विकार ।
 भृकुटी करै कक्षा प्रभू, उत्तराध्ययन सभार ॥ १५ ॥

कहिये किणी प्रकार करि, ते स्याद्वाद कहिवाय ।
 न्याय कहूँ छूँ तेहनो, सांभलजो चितल्याय ॥ ३ ॥
 सूत्र भगवतौ ने विषै, शतक सातमें सोय ।
 द्वितीय उद्देशै भाखियो, जीव प्रश्न अवलोय ॥ ४ ॥
 किणी प्रकार करि प्रभू, जीव साश्वता ख्यात ।
 किण ही प्रकार असाश्वता, आख्या श्री जगनाथ ॥ ५ ॥
 द्रव्य थकी तो साश्वता, भाव थकी सु विचार ।
 असाश्वता प्रभूजो कछा, ए स्याद्वाद मत सार ॥ ६ ॥
 सूत्र भगवतौ ने विषै, शतक चौदमें सार ।
 तूर्य उद्देशै भाखियो, परमाणू अधिकार ॥ ७ ॥
 कछो परमाणू साश्वतो, किणी प्रकार करेह ।
 किणी प्रकार असाश्वतो, हिव तसु न्याय कहेह ॥ ८ ॥
 द्रव्य थकी तो साश्वतो, परिमाणू प्रति ख्यात ।
 न मिटै परम अणू पणो, किण हो काल विख्यात ॥ ९ ॥
 वर्णादिकं ने पञ्भाव करि, असाश्वता अवलोय ।
 स्याद्वाद बच एह छै, न्याय दृष्टि करि जोय ॥ १० ॥
 ब्रह्मत्कल्प मांहि कछु, पञ्चमुद्देश मभार ।
 प्रथम पोहर अशणादि प्रति, वहिरी ने अणगार ॥ ११ ॥
 तूर्य महिर राखी करौ, ते अशणादि प्रतेह ।
 भोगदणो कल्पै नहीं, सुखे समाधे एह ॥ १२ ॥

अशनादिक प्रति बहिरतां, पांती करतां सोय ।
 अन्य साधु प्रति धामतां, चरचा करतां जोय ॥२६॥
 मुनि ने कार्य्य भलावतां, इत्यादिक सु प्रयोग ।
 मुख बांध्यां विन किम रहै, अति तीखां उपयोग ॥२७॥
 तिण सुं यतना कारणै, डोरो घाली सोय ।
 मुख बांधै मुख वस्त्रिका, और कारण नहिं कोय ॥२८॥
 जदि कहै डोरो किहां कछो ? तसु कहिये इम बाय ।
 कान विषै घालै तिका, किसा सूत्र रै मांहि ? ॥२९॥
 मुख बांधै डोरै करी, तसु करै निन्दा तात ।
 कान बधावै प्रगट एं, आ किसा सूत्र नो बाते ॥३०॥
 तर्क करै डोरां तणी, कहै किण सूत्रे ख्यात ।
 कान बधावै तेहनो, क्यूं नहिं पूछै वात ॥३१॥
 मोर पृच्छना देश प्रति, घाली कण मभार ।
 उदक थकी छांट्यां थकां, फूलै तेह तिंवार ॥३२॥
 इम नित प्रति बहु खप करी, कण वधाय विशेष ।
 इम घालै मुख वस्त्रिका, किसा सूत्र में लेख ? ॥३३॥
 कहै बचन शुद्ध यतना अर्थ, घालां कण मभार ।
 तो डोरो पिण यतना अर्थ, न्याय सरिषो धार ॥३४॥
 उदक तणा घट ने विषै, डोरी बांधै तेह ।
 किसा सूत्र में ते कछुं, देखोजी चित देह ॥३५॥

दशवैकालिक देखल्यो, तूर्य अध्ययन समाप्त । ॥२३॥
 सचित उदक नहिं सङ्कटै, ए जिन आज्ञा सार ॥२३॥
 वृहत्कल्प तीजै कछु, विहर कारण धौ जोय ।
 नदी उतरणी प्रभू कहौ, ए स्याद्वाद बच होय ॥२४॥
 सरणान्त कष्टे मुनि भगौ, सचितोदक अवलोक ।
 भोगवणू प्रभू एहवू, स्याद्वाद नहिं होय ॥२५॥
 उत्तराध्ययन कथा विषै, परीषद द्वितीय प्रसिद्ध ।
 मर्दान्त कष्टे बुलक शिष्य, सचितोदक नहिं पिद्ध ॥२६॥
 गत अष्टादश भगवती, दशम उदेशे देख ।
 पूछ्यो सोमिल प्रभू प्रति, जे 'स्यु' हो- तुम्ह एक ॥२७॥
 तथा तुम्ह 'स्यु' दीय हो, का अक्षय तुम्ह होय ।
 फुन 'स्यु' अव्यय हो तुम्ह, अवस्थित तुम्ह जोय ॥२८॥
 जे तुम्ह अनेक भूत फुन, भाव भविक अवधार ।
 बीर भगौ षट प्रश्न ए, सोमिल, पूछ्या सार ॥२९॥
 वृत्तिकार कछो तब, प्रभू, स्याद्वाद प्रति, ताय ।
 सर्व दोष गोचर रहित, अविनाश्वी कहि प्राय ॥३०॥
 इक मिश्र 'हं' कू सोमिला, यावत बलि अनेक ।
 भूत भाव भावी अपि, 'हं' कू इम कछु, पेख ॥३१॥
 किण अर्थे प्रभु इम कछु, जाव भविक 'हं' सोय ।
 प्रभु कहै द्रव्यार्थ करी, इक मिश्र-कू अवलोक ॥३२॥

डोरा सँ मुंह पोतिया, बांधै जयसा काज ।
 तर्क करै तसु पूछिये, इतला बोल समाज ॥४६॥
 कहै अष्ट पहिर बांध्यां रहै, ते किण सूत्रे ख्यात ?
 तो एक पहिर बांधै तिका, किण सूत्रे अवदात ॥४७॥
 बखान में दूक पहिर लग, कर्ण घाल बाधन्त ।
 ते पिण किणौ सिद्धान्त में, भाष्यो नहिं भगवन्त ॥४८॥
 अष्ट पहोर बांध्यां थकां, दोष घणो जो होय ।
 तो एक पहोर बांध्यां थकां, दूषण थोड़ी जोय ॥४९॥
 जो एक पहोर बांध्यां थकां, दोष नहिं छै कोय ।
 तो आठ पहिर बांधै तसु, दोषण किण विध होय ॥५०॥
 डोरो घालै कर्ण में, तेहनो दोषण होय ।
 तो कर्ण विषै मुख वस्त्रिका, घाल्यां दोषण जोय ॥५१॥
 जो कर्ण विषै मुख वस्त्रिका, घाल्यां दोष न कोय ।
 तो डोरो घालै कर्ण में, तो पिण दोष न होय ॥५२॥
 कोई कहै मुख वस्त्रिका, अष्ट पहिर लग एह ।
 बांध्यां कफ में ऊपजै, जीव असङ्गित जेह ॥५३॥
 तो मुनि अज्मा तनु विषै, ययो गुम्बडो कोय ।
 राधि रुधिर रै ऊपरै, पाटो बांधै सोब ॥५४॥
 जीव समुच्छिन्न ते विषै, उपजै तिष रै लेख ।
 पाटा रै लागा रहै, रुधिर राधि सम्येख ॥५५॥

॥ अथ १७ मूं विषंवाद अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोइ कहै विषंवाद मत, प्रभू नो समय विषेह ।
 किण सूत्रे वच जे कह्युं, किहां अन्यथा तेह ॥ १ ॥
 किण सूत्रे वच जे कह्युं, ते वच अन्य सूत्रेह ।
 विकटै ते विषंवाद कहै, उत्तर तास सुणेह ॥ २ ॥
 सखर सप्त भह्नी कह्यी, जिन वाणी सुखदाय । -
 सप्त नये करि सत्य वच, तसु विषंवाद न कहाय ॥ ३ ॥
 किण ही सूत्र विषे प्रभू, चाख्या वयण विख्यात । --
 विगटै जे अन्य सूत्र थी, ते विषंवाद वच थात ॥ ४ ॥
 विषंवाद वच एह तेह, प्रभू नो नहिं है कोय ।
 वच केवल ज्ञानी तणो, व्यभिचारिक नहिं होय ॥ ५ ॥
 विषंवाद योगे करी, अशुभ नाम कर्म बंध ।
 अष्टम शतकी भगवती, नवमे--उद्देशै सन्ध ॥ ६ ॥
 विषंवाद ए अशुभ है, तिण थी अशुभज बंध ।
 तो किम हुवै प्रभूजी तणो, विषंवाद वच मंद ॥ ७ ॥
 अ विषंवाद योगे करी, नाम कर्म शुभ बंध ।
 अष्टम शतकी भगवती, नवम उद्देशै संध ॥ ८ ॥
 दशमा अङ्ग में देखली, सप्तमध्यमे मांहि ।
 सत्यवादी है तेह नुं, विषंवाद वच नांहि ॥ ९ ॥

सूत्र भगवती ने विषे, सोलह शतक मर्मकार ।
 द्वितीय उद्देशे भाखियो, कहिये ते अधिकार ॥६६॥
 शक्र उघाड़ै मुख लवै, भाषा सावद्य सोय ।
 हस्त बख मुख दे वदै, निरवद्य भाषा होय ॥६७॥
 वृत्तिकार इस आखियो, जीव सरक्षण सोय ।
 निरवद्य भाषा जानवौ, अन्या सावद्य होय ॥६८॥
 विक्रन्द्री ना पञ्चतन्गा, तेहना स्थानक जेह ।
 ते सुरलोक विषे नथी, पद्मवणा द्वितीय पदेह ॥६९॥
 धर्म सम्बन्धी वार्ता, करै शक्र जेहवार ।
 बोले मुख ठांकी तदा, ते निरवद्य बच सार ॥७०॥
 संसारिक जे वार्ता, करै शक्र जेहवार ।
 बदै उघाड़ै मुख तदा, ते सावद्य बच धार ॥७१॥
 तिष कारण वायु तणौ, दया अर्थ मुनिराज ।
 मुख बांधै मुंह पोत्तिया, पिण अवर नहिं कै काज ॥७२॥

॥ अथ सोलहमूं स्याद्वाद अधिकार ॥

॥ दोहो ॥

कोई कहै भगवन्त नों, स्याद्वाद मत जोय ।
 एकांतिक कहिबू नहों, तसु उत्तर अवलोक्य ॥ १ ॥
 स्याद् कथंचित् जोखवू, किण ही प्रकार करेह ।
 बदै कहिबू कीदतै, स्याद्वाद है एह ॥ २ ॥

कल्प इने घुर चङ्गे में, चवन काल विहुं घारे ।
 एक सरीया बाखिया, शिव साहारण दिचार ॥२८॥
 गर्भ साहारण कियो तिहां, कल्प सूत्र में ल्यात ।
 संहरिया पहिलां यहै, जाल्युं औ जगनाथ ॥२९॥
 संहरता, बेलां प्रभू, वत्तमान बालिहै ।
 बाख्युं नहि एखुं कछुं, कल्प सूत्र वच एह ॥३०॥
 बाचारहै पन्नरमें कछो, साहारण प्रदन फहात ।
 बलि साहरतां वार पिब, बाख्युं औ जगनाथ ॥३१॥
 चवन काल तो समय इक इट्ठनस्य नो उपदोष ।
 असंख्य समय नूं तें भयो, चवन न जाल्युं बोग ॥३२॥
 सुर कार्य साहारण ते, समय चलल्य सुजाण ।
 तिब सुं साहरतां प्रभू, बाख्युं बजवि प्रसाद ॥३३॥
 साहरतां बाख्युं नही, कल्प सूत्र में ल्यात ।
 साहरतां बाख्युं कछुं, घुर चङ्गे जगनाथ ॥३४॥
 कल्प सूत्र घुर चङ्गे में, ए विहुं वच बाल्यात ।
 कव सत्तो भूठो कियो, देखो तब पक्षपात ॥३५॥
 वीर प्रभू तो एक है, बाख्युं घुर चङ्गे ल्यात ।
 नकि बाख्युं कल्प कछुं, विहुं साचा किम यात ॥३६॥
 उभय मंहियो एक तो नित्यदा वचन विनिव ।
 देखीजी देखी तुम्हे, देखो तब मत ठेक ॥३७॥

गाढा गाढ आतङ्क करि, तूर्य पहरि में तेह ।
 भोगवणो कल्पै तसु, स्याद्वाद बच एह ॥१२॥
 प्रथम पहरि बहिरौ करौ, कारण पडियां ताहि ।
 रात्रि विषै जे भोगवै, ए स्याद्वाद बच नाहि ॥१४॥
 तूर्य पहरि आज्ञा कही, निश नौ आज्ञा नाहि ।
 तिण सुं निश नहिं भोगवै, कारण पडियां ताहि ॥१५॥
 द्वितीय उद्देशै जे विषै, ब्रह्मकल्प रै मांहि ।
 जल वा मद ना घट तिहां, रहिवुं कल्पै नाहि ॥१६॥
 अन्य स्थान न मिलै कदा, तो इका वै निशि जाण ।
 रहिवुं कल्पै प्रभू कछो, ए स्याद्वाद पहिछाण ॥१७॥
 तिणहिज उद्देशै आखियो, जे आखी निशि मांहि ।
 दीपक वा अग्नि बलै, तिहां नहि रहिवू ताहि ॥१८॥
 जो अन्य जागां नहिं मिलै, तो इका वै निशि तिण स्थान
 रहिवुं कल्पै प्रभू कछो, ए स्याद्वाद बच जान ॥१९॥
 मुनि जे सङ्कटो स्त्री तणो, करिवो बरज्युं स्वाम ।
 सोलमां उत्तराध्ययन में, बलि बहु सूखे ताम ॥२०॥
 ब्रह्मकल्प छटै कछु, नदी प्रमुख थी बार ।
 अज्भ्रा प्रति कांटे मुनी, ए स्याद्वाद मत सार ॥२१॥
 यहस्य पुरुष वा स्त्री भणौ, नदी प्रमुख थी जोय ।
 कांटे मुनि बच एहवुं, स्याद्वाद नहिं कोय ॥२२॥

आख्यो चूर्णि में तिहां, शिंध्य अपण्डित सोय ।
 रोग मिटावा निमित्ते, वैद्य कथन थी जोय ॥४०॥
 अथवा मारग चालतां, उषोदरी छै तेह ।
 अणसरतै जे भोगवै, विरुद्ध कहिजे जेह ॥४१॥
 सूत्रे वरज्यो सचित अम्ब, चूर्णिकार फुन तेह ।
 कारण पडियां चूंसवूं, कछु विरुद्ध वच एह ॥४२॥
 सचित रुंख मुनि जो चंटे, तो चौमासिक दण्ड ।
 निशीथ उहेथै बारमें, श्री जिन वयण सुमण्ड ॥४३॥
 सत्र निशीथ तणी जिका, चूर्णि विषै इम वाय ।
 खान प्रमुख ना भय हरण, दण्ड ग्रहै मुनिराय ॥४४॥
 प्रथम अचित दांडो ग्रहै, पछै मिश्र परितेण ।
 प्रथम परित यावत पछै, अनन्त काय नुं जेण ॥४५॥
 रुंख ऊपर मुनि नवि चंटे, ए जिन आज्ञा शुद्ध ।
 चूर्णिकार कछु सचित दण्ड, ग्रहै ते वयण विरुद्ध ॥४६॥
 ऋषभ भरत फुन बाहुबलि, ब्राह्मी मुन्दरी बेह ।
 लख चौरासौ पूर्व नूं, आयु तूर्य अङ्गेह ॥४७॥
 ऋष मण्डल मांहि कछु; ऋषभ देव भगवान ।
 भरत विना बलि ऋषभ ना, पूव निन्नाथुं जान ॥४८॥
 भरत तणा बलि अष्ट सुत, अष्टोत्तर सौ एह ।
 एक समय सौभा तिनी, विरुद्ध वचन छै जेह ॥४९॥

ज्ञान दर्शन करि दोय हूँ, प्रदेशार्थ करि दाय ॥ २३ ॥
 अक्षय हूँ अव्यय अपि, अवस्थित पिण थाय ॥ २४ ॥
 अनेक भूत भावी अपि, हूँ उपयोग करेह ।
 न्याय सहित उत्तर छव, स्याद्वाद वच एह ॥ २५ ॥
 इमज थावरचा मुक प्रते, ज्ञाता पञ्चम् लेह ।
 इमज पाश्वर् सोमिल प्रते, पुष्पिण्या विषे कहिह ॥ २६ ॥
 सहु दोषण करि रहित छै, स्याद्वाद वच एह ।
 पिण दोषण कर सहित वच, स्याद्वाद न कहिह ॥ २७ ॥
 पूर्वापर अविरुद्ध वच, स्याद्वाद मति माहि ।
 पिण पूर्वापर विरुद्ध वच, स्याद्वाद वच नाहि ॥ २८ ॥
 ब्रह्मादिक प्रभू आखिया, किण ही प्रकारे करेह ।
 नित्य अनित्यादिक जिक्, स्याद्वाद वच तेह ॥ २९ ॥
 पिण ज्यो किण ही प्रकार करि, कुशील में नहि धर्म ।
 बलि नहि किण ही प्रकार करि, शील विषे अव कर्म ॥ ३० ॥
 अज हिंसादिक में नहीं, किण ही प्रकारे धर्म ।
 किण ही प्रकार बंधे नहीं, सम्बर यौ अव कर्म ॥ ३१ ॥
 किण ही प्रकार हुवै नहीं, सावदा मांही धर्म ।
 किण ही प्रकार बंधे नहीं, निरवद्य थौ अव कर्म ॥ ३२ ॥
 किण ही प्रकार हुवै नहीं, जिन आज्ञा विन धर्म ।
 किण ही प्रकार नहीं बंधै, आज्ञा थौ अव कर्म ॥ ३३ ॥

गुरु वन्दै शिष्य कीवली, सूत्र विषै व्रम ख्यात ।
 तो प्रभू वन्दे व्रम कक्षां, आशांतन किम यात ॥६०॥
 सचित आहार सुनि ने अभज, पञ्चम अन्न प्रबन्ध ।
 ज्ञाता अध्ययने पञ्च में, निरावलिया श्रुत स्कन्ध ॥६१॥
 द्वितीय आचारङ्ग लागता, आधा करमी आहार ।
 अप्राशुक पिण्ड वृत्ति में, भोगवर्णु कक्षु' धार ॥६२॥
 कक्षो अफासु अभज जिन, वृत्ति विषै फुन तेह ।
 कक्षु भोगादणो कारणै, विरुद्ध वचन है एह ॥६३॥
 शत पणवीसमें भगवती, छट्टा उद्देशा माहि ।
 बकुण उत्तर गुण तणो, पडि सेवी कक्षु' ताहि ॥६४॥
 तिणज उद्देशै वृत्ति में, बकुण प्रति व्रम ख्यात ।
 भूष उत्तर पडि सेविये, तेह विरुद्ध सझात ॥६५॥
 ठाणा अङ्ग ठाणै चतुर्थ, प्रथम उद्देशै पेख ।
 सनत कुंमार तणो कक्षी, चन्त क्रिया सुविशेष ॥६६॥
 आवश्यक निर्युक्ति में, उत्तराध्ययन वृत्ति माहि ।
 तीजे स्वर्ग गयु' कक्षो, मिलै नहि ए वाय ॥६७॥
 अष्टम शतकी भगवती, द्वितीय उद्देशा नाहि ।
 एकिन्द्री निश्चय करौ, कक्षा अज्ञानो ताहि ॥६८॥
 कर्म गत्य मे देखल्लो, एकिन्द्री रै माहि ।
 वे गुणठाणा आखिया, तेह विरुद्ध कहाहि ॥६९॥

सत्यवादी संसार का, तसु विषंवाद वच नांहि ।
 तो प्रभूजी ना वयण ते, विषंवाद किम थाय ॥१०॥
 पूर्वापर अविरुद्ध वच. प्रभू ना समवायङ्ग ।
 वच अतिशय पैतौस में, अतिशय नवम मुचङ्ग ॥११॥
 उत्सर्ग में आज्ञा किहां, किहां आज्ञा अपवाद ।
 झकसूँ झक विगटे न ते, पिण नहिं छै विषंवाद ॥१२॥
 उत्सर्गे आज्ञा नथी, ते कार्य्य नौ जान ।
 अपवादे आज्ञा कही, ते विषंवाद मत मान ॥१३॥
 विषंवाद रै जपरै, कहिये हेतु सार ।
 निपुण न्याय वच सांभली, द्वेष हिये मत धार ॥१४॥
 बार मास है वर्ष ना, तेह विषै सुविधान ।
 अधिक धर्म करिवा तणूँ, मास भाद्रवी जान ॥१५॥
 तेह विषै पण प्रगट है, अधिक धर्म ना दीह ।
 पर्व पर्यूषण प्रसिद्ध ही, पोसह प्रमुख सु लीह ॥१६॥
 ते पर्यूषण ने विषै, कल्प सूत्र व्याख्यान ।
 तेह विषै वतका कही, सुणज्यो सुगण सुजान ॥१७॥
 प्रभू दशमा सुर लोक थी, भव स्थित भोगव तेह ।
 चवियां पहलां ने पछै, जाणयुं अवधि करेह ॥१८॥
 चवन समय नवि जाणियो, सूक्ष्म काल विशेष ।
 इमहिज पनरमध्ययन में, द्वितीय आचारङ्ग लेख ॥१९॥

कुल चारुहाले जपनी, हरकीगौ मुनिराय ।
 उत्तराध्ययन विषै कछु, बारमा अध्ययने मांय ॥८०॥
 कर्म ग्रन्थ मांही - कश्चो, छट्ठे गुणठाणेंह ।
 नीच गोत नो उदय नहीं, न्याय मिलै किम तेह ॥८१॥
 अष्टम शतकी भगवती, द्दशम उद्देगै इष्ट ।
 जवन्य ज्ञान आराधना, सत अठ भव उत्कृष्ट ॥८२॥
 वृत्तिकार कछुं एह विध, चरित सहित जे ज्ञान ।
 तेहनी जवन्य आराधना, तसु भव ए पहिछान ॥८३॥
 बीजा सम दृष्टि तथा, देग व्रती ना जेह ।
 भव उत्कृष्ट असंखा है, न्याय वचन है एह ॥८४॥
 चन्द्रा विजय ग्रन्थ में, आराधक ना सोय ।
 आख्या भव उत्कृष्ट दण, एह मिलै नहिं कोय ॥८५॥
 अष्टम अङ्गे नैन प्रभू, कृष्ण भणी आख्यात ।
 तं तौजी पृथिवी विषै, जास्ये स्थित दधि सात ॥८६॥
 तीजी यौ अन्तर रहित, निकली सय वारेह ।
 अमम नाम हादशम् जिन, वास्ये महा गुन तेह ॥८७॥
 इहां आख्यो अन्तर रहित, तृतीय नरक यी ताहि ।
 निकली तीर्यङ्कर हुस्ये, तिब सुं बिब भव नाहि ॥८८॥
 प्रक्रान रत्न संचय विषै, आख्यो कृष्ण मुरार ।
 बालू प्रभा यी नीकली, नर भव लही उदार ॥८९॥

जाण्यां धर अह्ने कच्छा, तेह संख वचं ओण ।
 त्तिवि जाण्णु, कल्पे कच्छु, ते वयस अप्रमाण ॥३०॥
 वृहत्कल्प रै पञ्चमें, तनु कारण थी ताव ।
 सूर्य जगो जाणि ने, आहार लियो मुनिराय ॥३१॥
 भोगवत्तां शङ्का मडी, रवि जगो के नाहिं ।
 अथवा सूर्य आंथम्यो, तथा आंथम्यो नाहिं ॥३२॥
 शङ्क सहित इम भोगव्यां, रात्रि भोजन पिण्ड ।
 भोगवतो पामै तिको, गुरु चौमासौं दण्ड ॥३३॥
 इमहिज कारण विन रवि, जगो जाणौ ताव ।
 आहार यच्चो पिण शङ्क सहित, भोगवियां दण्ड आय ३४
 दशम उद्देश निशौथ में, रात्रि भोजन ताव ।
 कारण सूं पिण भोगव्यां, दण्ड चौमासौं आय ॥३५॥
 निशौथ उद्देशै वारमें, चुणिं विषै अवलोय ।
 निशि भोजन कारण थकी, भोगवणो कच्छो सोय ॥३६॥
 इमहिज वृहत्कल्प तण्णी, चुणिं वृत्ति विषेह ।
 रोगादिक कारण मुनी, निशि भोजन जीमेह ॥३७॥
 सूवे निशि भोजन प्रते, वंज्यो ते तो शुद्ध ।
 चुणिं विषै ए स्थापियो, तेह प्रत्यक्ष विरुद्ध ॥३८॥
 निशौथ उद्देशै पन्नरमें, आखी श्री जिन वारं ।
 सचित्त अम्ब चूसै मुनि, दण्ड चौमासौं जाव ॥३९॥

तिण जे विशेष सूत्र नी, अर्थ उत्सर्ग पणेइ ।
 जेम अछे तिमहिज मिलै, इम कछु टबा विषेइ ॥ १०० ॥
 टबाकार पिण इम कछो, सूत्र थकी विगटेइ ।
 अर्थ प्रमाण तिको नही, तो मुझ दूषण किम देइ ॥ १०१ ॥

॥ इति विषंवाद अधिकार ॥

॥ अथ अठारमूं भगवती में निर्युक्ति
 कही तथा पन्नवणा सामाचार्य कृत
 कहै तसुत्तर अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै निर्युक्ति कही, शत पण बीसमा साहिं ।
 हतौय उदेशै भगवती, तुम्हे न मानूं काहिं ॥ १ ॥
 तसु पूछीअे निर्युक्ति, कहनी कीधी जेइ ।
 भद्रबाहु कृता तव कहै, चौद पूर्व धर तेइ ॥ २ ॥
 तसु कहिये जे तुम्ह कही, भद्रबाहु कृत एइ ।
 तीं भगवती सूत्र विषे तिका, किम कहौ छै तेइ ॥ ३ ॥
 वीर कृता ए भगवती, तेइ विषे अवधार ।
 किम कहि भद्रबाहु कृता, देखो न्याय विचार ॥ ४ ॥
 भद्रबाहु मोड़ा हुआ, पञ्चम अर्थ सुजात ।
 चौथ चरकी भगवती, तेइ विषे किम यात ॥ ५ ॥

ऋषभ बाहुबलि आउषो, पूर्व-चौरासी लक्ष ।
 किम तसु शिव गति ब्रह्म समय, पेखो तज मज्जपक्ष ॥५०॥
 शत चौदशमें भगवती, सप्तम उद्देश विषेह ।
 वृत्ति विषे आख्यो तिको, सांभलजो चित देह ॥५१॥
 पन्दरसी प्रति बोधिया, तापस गौतम स्वाम ।
 प्रभू पै आवत् पामिया, केवल युग अभिराम ॥५२॥
 भो साधो ! वन्दो तुम्हे, श्री जिन प्रति शिरनाम ।
 इस गौतम आखे' छतै, जिन भाषै गुण धाम ॥५३॥
 ए केवल ज्ञानो तणो, हे गौतम ! मुनिराय ।
 लागै तुम्ह आशातना, वृत्ति विषे ए वाय ॥५४॥
 दशवैकालिक सूत्र में, नवमें ध्यान विषेह ।
 प्रथम उद्देशै चारसी, गाथा में इस लेह ॥५५॥
 विप्र अग्निहोत्री तिको, अग्नि प्रते शिरनाम ।
 आहुती पद मन्त्र पढ़, घृतादि सौंचे ताम ॥५६॥
 आचार्य प्रते ब्रह्म विषे, बाहुं शिष्य विनीत ।
 वर अनन्त ज्ञानो छतो, आराधै ब्रह्म रीत ॥५७॥
 हरौभद्र सूर करी, वृत्ति विषे इस उक्ति ।
 शिष्य केवल ज्ञानी छतो, करै गुरुनी भक्ति ॥५८॥
 कछु' वृत्ति में जिन प्रते, वन्दो गौतम स्थात ।
 तसु प्रभू कही आशातना, किम मिलै ए बात ॥५९॥

तसु कृत आगमं किम भूवै, न्याय मेव करि जीव ।
 सूत्र ब्रह्म नो लघू करै, तसु कारण नहिं कोय ॥१६॥
 ब्रह्महिज सूत्र निशीथ प्रति, गयी विसाह विचार ।
 मोटा नूं छोटी कखुं, एहवुं दीसै सार ॥१७॥
 वलि कहै दशवैकालिक पिण, कखुं सीजभाव एह ।
 तास नाम नन्दी विषै, किम आख्यो गुण गेह ॥१८॥
 गन्धर कृत जे भगवती, तास विषै सु विचार ।
 नाम नन्दी नूं पिब कछो, हिव तसु उत्तर सार ॥१९॥
 जेम पञ्चवषा तिमज ए, ब्रह्म यकी जूधू कौध ।
 पिण मूल यकी कौधी नवी, नथी सम्भवै सौध ॥२०॥
 चौदश पूर्व माहि यी, अर्थ अनोपम सार ।
 दशवैकालिक ब्रह्म पिण, पूर्व रचित उदार ॥२१॥
 ते मोटा नूं ए लघू, मनक पुत्र अर्थह ।
 सूत्र सीजभाव पिण कखुं, न्याय सम्भवै एह ॥२२॥

॥ इति निर्युक्ति अधिकार ॥

॥ अथ १६ मुं नन्दी थिरावली अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै नन्दी तथी, थिरावली है तेह ।

गन्धर कृत के अन्य कृत, हिव तसु उत्तर देह ॥ १ ॥

शतक सात में भगवती, छट्टै उद्देश सखिंद ।
 छट्टै आर वैताव्य बिन, सहु गिर हुस्ये विछेद ॥७०॥
 प्रकरण में शबुद्ध गिरि, सप्त हस्त परिमाण ।
 रहित्ये आख्यो तेह वच, प्रत्यक्ष विरुद्ध पिछाण ॥७१॥
 अष्टम शतके भगवती, नवम उद्देश विषेह ।
 माया गूढ माया करै, वचन अलोक बदेह ॥७२॥
 कूड़ा तोला ने बलि, कूड़ा माप करेह ।
 ए आरुई प्रकार करि, तीरि आयु बखेह ॥७३॥
 ए चिहुं कारण अग्रभ थौ, तीर्यञ्च आयु बख ।
 तिण कारण तीर्यञ्च नू, आयु माप कथिन्व ॥७४॥
 कार्य ग्रन्थ मांही कछो, तीर्यञ्च आयु पुन्य ।
 ते माटे ए सूच थौ, वचन विरुद्ध जवुन्य ॥७५॥
 पञ्च स्थावर विलोन्द्रिया, ए पिण तीर्यञ्च आण ।
 तास आउषो पुन्य कहै, प्रत्यक्ष विरुद्ध पिछाण ॥७६॥
 जघन्य आउषा नुं धणौ, तीर्यञ्च मरि ने तेह ।
 जो तीर्यञ्च मे जपजै, कोड़ि पूर्व स्थित केह ॥७७॥
 जघन्य आयु पञ्च तिरि तणा, माठा अध्यवसाय ।
 कछा भगवती ने विषे, शतक चौबीसमा मांहि ॥७८॥
 अपसत्य अध्यवसाय सूं, कोड़ि पूर्व तिरि होय ।
 तिथि सूं ए तिरि आउषो, माप कृत अवलोय ॥७९॥

दृष्टिवाद तणो धन्यो, वचन खलायां ताहि ।
 अन्य मुनो ने हसवो नहीं, दशवैकालिक मांहि ॥१२॥
 पञ्चम अङ्ग-तृतीय शत, प्रथम उद्देश्ये ताय ।
 बैक्रिय शक्ति सुर तणी, अग्नि भूति कहिवाय ॥१३॥
 वाय भूति शब्दी नहीं, प्रतीत नाणी तेह ।
 प्रभू ने पूछ-खमाविया, हादशाङ्ग धर एह ॥१४॥
 ठाणा अङ्ग ठाणे सात में, हिन्सा भूठ अदत्त ।
 शब्द रूप गन्ध फल रस, आस्वादी हुवे रक्त ॥१५॥
 वलि पूजा संस्कार प्रति, पामी ने हर्षाय ।
 सावद्य ते इह विध कह्यो, तास सेवबू थाय ॥१६॥
 जेम प्ररूपे ते विधे, नयो पालबू होय ।
 सप्त प्रकारे जाणबू, कृद्गस्थ प्रति अवलोय ॥१७॥
 चौद पूर्व धर पिण करै, पण्डितमणो विहु काल ।
 खलता खामी, नुं तिको, देखो न्याय निहाल ॥१८॥
 तिण सु चौदश पूर्व धर, वलि दश पूरव धार ।
 जिन साखे आगम रचे, इसो सम्भवै सार ॥१९॥
 इमहिज प्रत्येक बुद्धि पिण, जिन साखे सुविचार ।
 आगम रचवुं सम्भवै, अमल न्याय अवधार ॥२०॥
 इम मुज भयासै तिम कछु, अर्थ अनूप उदार ।
 फुन केवल ज्ञानी कह्यो, तेहिज छै तन्त सार ॥२१॥

ब्रह्म कल्प में सुर यई, हुस्ये तीर्यङ्कर देव ।
 इम आख्या तसु पञ्च भव, कीम मिलै ए भव ॥६०॥
 इत्यादिक जे सूत्र थो, वृत्ति प्रमुख रै मांहि ।
 विरुद्ध बचन कै ते प्रते, किम मानिजै ताहि ॥६१॥
 द्वितीय आचाराङ्क ने विषे, दशम उद्देशै मांय ।
 मंस मच्छ कछो पाठ में, तास अर्थ कहिवाय ॥६२॥
 टवो पार्श्वचन्द्र सूरि कृत, तेह विषे इम ख्यात ।
 वृत्तिकार ए मांस मच्छ, लोक प्रसिद्ध आख्यात ॥६३॥
 विरुद्ध सूत्र सुं ते भणौ, न संभाविये ए अर्थ ।
 बलि गौतार्थ जे वदै, प्रमाण कै ज तदर्थ ॥६४॥
 अस्थी शब्द सूत्र में, कुलिया कै बहु स्थान ।
 ए गट्टिया हरडै कछाँ, सूत्र पन्नवणा जान ॥६५॥
 कछा दाडिम प्रते बहुट्टिया, एहवा शब्द प्रभृत ।
 अस्थि शब्द कुलिया कछा, तो मंस शब्द गिर हुन्त ॥६६॥
 एहवो संभाविये अछै, ते माटे अवलोक्य ।
 बनस्पतिज विशेष कै, मंस मच्छ ए जोय ॥६७॥
 भाव उवाडै मंस मच्छ, चारित्र्या ने जेह ।
 कारण थो पिण आहारवो, योग्य नथी दीसैह ॥६८॥
 बली सूत्र में साधु ने, उत्सर्ग भाव आख्यात ।
 वृत्ति विषे अपवाद ए, भाव तथो अवदात ॥६९॥

भद्रबाहु खामी पड़े, बहु वर्षे अवधार ।
 वज्र खामी मोड़ा हुआ, देखो न्याय विचार ॥३२॥
 निर्मितियो कन्या धने, एम इहां आख्यात ।
 पिब निमन्त्रसो इम नयी कह्यो, देखो सुगण सुजात ॥३३॥
 महिमा कौधी देवता, इम इहां आख्यो सोय ।
 सुर करस्ये महिमा इसो, वचन कह्यो नहीं कोय ॥३४॥
 तिष कारव ए निर्युक्ति, भद्रबाहु कृत जाहि ।
 बलि ए निर्युक्ति विषै, वचन बहु विरुद्ध दिखाहि ॥३५॥
 उववाई में आखियो, उत्कृष्टी अवगाह ।
 धनुष पंचसय नौ तिको, सौभै ए जिन वाय ॥३६॥
 आवश्यक निर्युक्ति में, मोरादेवी माय ।
 सवा पांचसौ धनुष तनु, ए वचन किम मिलाय ॥३७॥
 ठावाङ्ग तूर्य ठावा विषै, प्रथम उद्देशा माहि ।
 सनत् कुमार चक्री तणी, अन्त क्रिया कही ताहि ॥३८॥
 आवश्यक निर्युक्ति में, चक्री सनत् कुमार ।
 तीजै सुरलीखी गयो, ए वचन विरुद्ध विचार ॥३९॥
 ऋषभ बाहुबल आउघो, पूर्व चौरासी लख ।
 समवायङ्ग में आखियो, पाठ माहि प्रत्यक्ष ॥४०॥
 आवश्यक निर्युक्ति में, ऋषभ बाहुबल राय ।
 एक समय शिवगत लही, किम मिलै ए वाय ॥४१॥

ग्रामो नास्ति सोम कुतः भद्रबाहु अणगार ।
 नथी हुन्ता तो तसु कृता. केम निर्युक्ति तिंवार ॥ ६ ॥
 सूत्र भगवती ने विषै, कही निर्युक्ति जेह ।
 तेह मानवा योग अन्है, पिण हिवडां नहिं तेह ॥ ७ ॥
 तब कहै पट तेवीस में, सामाचार्य ताहि ।
 सूत्र पन्नवणा'तिण कखु', कछो पौठका मांहि ॥ ८ ॥
 गणधर कृत ते भगवती, तेह विषै सु विचार ।
 नाम पन्नवणा नो कछो, ते किण विंध अवधार ॥ ९ ॥
 तसु कहिये ते-पन्नवणा, सामाचार्य जोय ।
 मोटा नौ छोटी करी, एहवुं दीसै सोय ॥ १० ॥
 पिण मूल थकी कीधी नवी, इसो सम्भवै नाहिं ।
 दश पूर्वधर ते नहीं, तसु कीधी किम थाय ॥ ११ ॥
 सम्पूर्ण दश पूर्व धर, चौदश पूर्व धार ।
 तास रचित आगम हुवै, वारुं न्याय विचार ॥ १२ ॥
 हेमि नाम माला विषै, धर काण्डे अवदात ।
 मुहस्ताद्या वज्रान्ता, दश पूर्व धर आखात ॥ १३ ॥
 मुहस्त से लेई करी, वज्र स्वामी लग जोय ।
 दश पूर्व धर दाखिया, अधिक पूर्व नहिं होय ॥ १४ ॥
 स्वामी वज्र थयां पछै, वहु वर्षे सुविमास ।
 सामाचार्य तो थया, दश पूर्व नहिं जास ॥ १५ ॥

आवश्यक निर्युक्ति-मुनि, कृत पञ्चक में काल-।
 पञ्च डाम ना पूतला, करवा कछा जु न्हाल ॥५२॥
 आवश्यक निर्युक्ति में, वतिका विरुद्ध अनेक-।
 चतुर हुवै ते ओलखौ, छांडै मत रो टेक ॥५३॥
 तिण सुं चौदश पूर्व घर, भद्रवाहु अणगार ।
 तेहनौ कीधी किम हुवै, ए निर्युक्ति-विचार ॥५४॥
 आवश्यक निर्युक्ति में, कारख यौ अणगार ।
 ग्रहण करै षट काय ने, कहिये ते अधिकार ॥५५॥
 शर्पादिक डसियां हतां, पृथ्वीकाय प्रतेह ।
 प्रथम अचित्त मांगी लिये, ग्रहस्थ समीपै जेह ॥५६॥
 जो मांगी लाधै नहीं, तो पोतै आणेह ।
 कदा अचित लाधै नहीं, तो मिश्र पृथ्वी मांगेह ॥५७॥
 मिश्र पृथ्वी लाधै नहीं, तो पोतैहिज जाय ।
 अठव्यादिक यौ मिश्र प्रति, ले आवै मुनिराय ॥५८॥
 मिश्र कदा लाधै नहीं, मांगै जई ग्रहस्थी-पास ।
 सचित पृथ्वीकाय प्रति, मांगी ल्यावै तस ॥५९॥
 जो मांगी सचित मिलै नहीं, तो पोतैहिज जाय ।
 खान प्रमुख आगर थकी, ले आवै मुनिराय ॥६०॥
 जेह काम आशी तिको, कार्य करौ ने ताय ।
 पृथ्वीकाय जे जवरै, तेह परिट्टवै जाय ॥६१॥

नन्दी पीठका ने विषै, मुधर्म जम्बू खाम ।
 प्रभव सौजभाव आदि त्यां, पाठ वन्दे बहु ठाम ॥ २ ॥
 अनागत जिन तूर्य अङ्ग, वन्दे पाठ न स्वात ।
 तेह अनागत मुनि भणौ, किम वंदै गणीनाथ ॥ ३ ॥
 तिण सँ एह थिरावली, देव वाचक कहिवाय ।
 पिब गबधर कृत ए नही, निर्मल विचारो न्याय ॥ ४ ॥
 थिरावली ने अन्त कछु, अन्य पिब सहु भगवन्त ।
 प्रथमी ज्ञान प्रकपणा, कहस्युं तास उदन्त ॥ ५ ॥
 नन्दी सूत्र नौ वृत्ति में, आख्यो इम अवदात ।
 दुष्य गणौ नो शिष्य जे, देव वाचक इम खात ॥ ६ ॥
 इब लेखे नन्दी सूत्र, दुष्य गणौ शिष्य देव ।
 मोटा नू छोटी कछु, ते जाणै जिन भेव ॥ ७ ॥
 कथा तथी गाथा जिकी, नन्दी सूत्र रे मांहि ।
 देव वाचक कीधी हुवै, एहडुं दीसै न्याय ॥ ८ ॥
 दश चौदश पूर्व धरा, आगम रचै उदार ।
 ते पिब जिननौ साख थी, विमल न्याय सुविचार ॥ ९ ॥
 पिब जिन नौ जे साख विन, आगम सूत्र अमोल ।
 कइस्य कृत किब विध हुवै, दाखु न्याय सँ तोल ॥ १० ॥
 चौ नाथी मोयम गणौ, चौदश पूर्व धार ।
 ते पिब वचन खलाविया, सप्तम अङ्ग मभार ॥ ११ ॥

॥ अथ बीसमूं नदी अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै नदी उत्तरै, मुनि ईर्ष्या समितेह ।
 तिहां जिन आन्ना ते भणौ, हिंसक तमु न कहैह ॥ १ ॥
 तिम न्हे पिण प्रतिमा भणौ, पुण्य चढ़ावां तेह ।
 न्हाने पिण जिन आण है, हिंसा तमु न कहैह ॥ २ ॥
 तमु कहिये माधू नदी, उत्तरै तिहां जिन आण ।
 जो पूजा में जिन आण है, तो मुनि किम न करै जाण ।
 वन्दना नौ पूछ्यां यकां, मुनि आन्ना दे तेह ।
 पुण्य चढ़ावूं इम कछां, मुनि आन्ना नहिं देह ॥ ४ ॥
 नदी जतरै जे मुनि, द्रव्य पूजा कहै तेम ।
 हेतु तिण जपर कइ, चतुर मुणो घर पेम ॥ ५ ॥
 विहार विधे जल सहित इक, नदी देख मुनिराय ।
 ते टालण रै कारणै, अवलार्ह पिण खाय ॥ ६ ॥
 इक कोशादिक अन्तरै, सूखी नदी निहाल ।
 तेह प्रते मुनि जतरै, उदक सहित दे टाल ॥ ७ ॥
 तिम दश दिननां पुण्य जे, सूका ते अवलोय ।
 एकल आडी पुण्य फुन, ततुवण चूंझा होय ॥ ८ ॥
 किसान चढावो पुण्य तुम, तुम लेखै इम न्हाल ।
 सूका फूल चढावणा, हरिया देषा टाल ॥ ९ ॥

जद कहै चौदश पूर्व धर, भद्रबाहु गुन गेह ।
निर्युक्ति तेहनो करी, किम मानूं नबि तेह ॥२२॥
हिव तेहनो उत्तर मुणो, तेह निर्युक्ति मांहि ।
हं बाटूं वञ्च स्वामी प्रते, एम कछुं छै ताहि ॥२३॥
जो भद्रबाहु कृत ए ह्वै, तो वञ्च स्वामी प्रति जेह ।
नमस्कार किण विध करै, देखोजी चित देह ॥२४॥
बलि निर्युक्ति में कछो, बाल्य अवस्था मांहि ।
मेह वर्षतां देवता, आहार निमन्त्रो ताहि ॥२५॥
पिण ते आहार वञ्छो नहौं, सौख्यो विनय आचार ।
एहवा वञ्च स्वामी प्रते, नमस्कार करूं सार ॥२६॥
नगर उज्जैणी ने विषै, जम्बक नामे देव ।
करी परीक्षा ने पछै, सख्यो तास स्वयमेव ॥२७॥
लब्धि अक्षौण माहणसौ, तेह तणो धरणहार ।
सौह गिरौ प्रशंसियो, बन्दू ते अणगार ॥२८॥
पदासारणी लब्धि जसु, दश पुर नगर मभार ।
महिमा कीधी देवता, करूं तासु नमस्कार ॥२९॥
जेह कुसुमपुर ने विषै, धनो शेठ जिंवार ।
धन फुन कन्याद्र करी, निमिन्त्रियो धर प्यार ॥३०॥
नव जीवन वय ने विषै, वञ्च अक्षि गणधार ।
नमस्कार तेहने करूं, डम कछो निर्युक्ति मभार ॥३१॥

जेह काय्य अनुमोदियां, मुनि ने लागै पाप ।
 तो करणवालो तो घुर करण, तिण में धर्म न थाप ॥२०॥
 सावदा कार्य सर्व ही, मुनि त्यागै विष जाण ।
 आज्ञा तेहनो किम दियै; वारुं करो विनाश ॥२१॥
 द्रव्य पूजा सावदा है, की निर्वदा कहिवाय ।
 सावदा है तो तेह में, धर्म पुण्य किम थाय ॥२२॥
 जो पूजा निर्वदा है, तो मुनि न करै काय ।
 बलि सामायिक पोषा मभै, तुम्है करो क्युं नांव ॥२३॥
 सामायिक पोषा मभै, पचख्या सावदा जोग ।
 निर्वदा तो त्याग्या नहीं, देखो दे उपयोग ॥२४॥
 द्रव्य पूजा आज्ञा मभै, की जिन आज्ञा वार ।
 जो आज्ञा वारै कहो, तो धर्म पुण्य मत धार ॥२५॥
 जो ए है आज्ञा मभै, तो मुनि न करै काहि ।
 सामायिक पोषा मभै, तुम्है करो क्युं नाहि ॥२६॥
 द्रव्य पूजा है विरत में, की अविरत रै माहि ।
 जो अविरत मांहीं कहो, तो धर्म पुण्य किम थाहि ॥२७॥
 द्रव्य पूजा है विरत में, तो मुनि क्युं न करेह ।
 सामायिक पोषा मभै, क्यों न करो तुम्है तेह ॥२८॥
 जो पूरी संस्र पड़े नहीं, तो राखो प्रभू प्रतीत ।
 जिन आज्ञा वाहर धर्म कहो, न करणी एह अनीत ॥२९॥

ज्ञाताध्ययने चाठमें, मल्लीनाथ जिनराय ।
 षोड मुध इगारस दिने, चारित केवल पाय ॥४२॥
 आवश्यक नियुक्ति में, चारित केवल नाथ ।
 मृगशिर मुध एकादशी, विरुद्ध बचन ए जान ॥४३॥
 नेऊ गणधर अजित ना, समवायक विषेह ।
 आवश्यक नियुक्ति में, कक्षा पचास जेह ॥४४॥
 तूर्य अङ्ग जिन मुविध ना, असौ अरु षट गणधार ।
 आवश्यक नियुक्ति में, अठ्यासी अधिकार ॥४५॥
 तूर्य अङ्ग शीतल तथा, तीन असौ मुविचार ।
 आवश्यक नियुक्ति में, एक असौ गणधार ॥४६॥
 तूर्य अङ्ग बासट कक्षा, बास पूज्य गणधार ।
 आवश्यक नियुक्ति में, कांसट्ट कक्षा तिवार ॥४७॥
 गणधर अनन्त प्रभू तथा, सूत्रे चौपन बास ।
 आवश्यक नियुक्ति में, आख्या है पचास ॥४८॥
 गणधर धर्म प्रभू तथा, सूत्रे अड़तालीस ।
 आवश्यक नियुक्ति में, तरांलीस फुन दीस ॥४९॥
 नेऊ गणधर शान्ति ना, तूर्य अङ्ग सुवगीस ।
 आवश्यक नियुक्ति में, आख्या है षट तीस ॥५०॥
 पार्श्व प्रभू ना तूर्य अंग, गणधर अष्ट उदार ।
 आवश्यक नियुक्ति में, आख्या दश गणधार ॥५१॥

कः कण्ठो आगार ते, रोख्यो सावद्य जाण ।
 सामायिक पोषह भग्ने, तेहना पिण पच्चखाण ॥१०॥
 दीधां अन्य तौरिक भग्नी, धर्म पुण्य जो होय ।
 तो आणन्दे किम तज्यो, हिये विमासी जोय ॥११॥
 उत्तराध्ययने चौदमें, गाथा वारमौ मांय ।
 भग्नु प्रते पुचां कच्चो, सांभलज्यो चित्त ल्याय ॥१२॥
 वेद भण्यां सुत जन्मियां, दाण शरण नहिं होय ।
 दियां जिमायां तमतमा, जावै इम कच्चो सोय ॥१३॥
 वृत्तिकार इह विध कच्चो, नरक रोगवा देय ।
 तो तेहने पोष्यां कृतां, किण विध धर्म कहिह ॥१४॥
 कोई कहै ए गृही हुन्ता, तसु उत्तर अवलोय ।
 तेहनी धुर गाथा विषै, तुर्य पदे कच्चुं सोय ॥१५॥
 कुमर आलोची ने वदै, इम कच्चो गणधर देव ।
 ते माटे तसु सत्य वच, पिण नहीं भूठ कहिब ॥१६॥
 वेद भण्यां सुत जन्मियां, दाण शरण नहिं होय ।
 ए पिण भग्नु प्रते कच्चुं, वेहुं पुतां अवलोय ॥१७॥
 ए वच सांचा तेहनां, तुम्है जाणो मन मांय ।
 तो दियां जिमायां तमतमा, ए पिण सांची वाय ॥१८॥
 द्वितीय सूयगडांगे सखर, कट्टाध्ययन रे मांहि ।
 निज श्रद्धा विप्रे कही, आद्र मुनि ने ताहि ॥१९॥

इम कारण थी धुर अचित, मिश्र सचित अपकाय ।
 मुनि दातार कने जई, मांगी ल्यावै ताय ॥६२॥
 जो मांग्यो जल ना मिलै, तो पोतैहिज जाय ।
 नदी तलावादिक थकौ, आप आणै मुनिराय ॥६३॥
 शूलादिक कारण पड्यां, इमहिज तैजकाय ।
 अचित मिश्र फुन सचित प्रते, मांगै ग्रही पै जाय ॥६४॥
 जो मांगी अग्नि मिलै नहीं, तो पोतैहिज जाय ।
 कुम्भ कारादिक स्थान थी, लेइ आवै मुनिराय ॥६५॥
 शूलादिक कारण पड्यां, इमहिज बाजकाय ।
 अचित मिश्र फुन सचित प्रति, ग्रहण करै ऋषि ताय ॥६६॥
 इमहिज बनस्पति अचित, मिश्र फुन सचित मुनिराय ।
 गाढा गाढ कारण पड्यां, ग्रहै मूलादिक ताय ॥६७॥
 वस बेन्द्रियादिक प्रते, तनु फोडादिक होय ।
 तास मिटावा मुनि ग्रहै, जलोक आदि मुजोय ॥६८॥
 आवश्यक निर्युक्ति में, परिट्ठावणिया समितैह ।
 आखी छै ए वारता, किम मानौजै एह ॥६९॥

॥ इति गिरावली अधिकार ॥

तिम सावद्य दान प्रशंसियां, कर्म तणो बंध थाय ।
 तो दान दिये ते धुर करण, तसु बंध बंध अधिकाय ॥२०॥
 दान निषेधां वृत्ती नौ, छिद करै इम स्यात ।
 कछो अर्थ में काल ए, वर्त्तमान मे थात ॥२१॥
 मिलतो अर्थ ए सूत्र थौ, देखो न्याय विचार ।
 ठाम ठाम सूत्रे कछो, सावद्य दान असार ॥२२॥
 असंजती ने दान दे, पाप एकन्त आस्त्रात ।
 सूत्र भगवती ने विषै, देखो तज पखपात ॥२३॥
 ते माटे वर्त्तमान जे, काल विषै जे मून ।
 मून कहै विहुं काल में, श्रद्धा तास जवून ॥२४॥
 द्वितीय सूयगडांगि विषै, पञ्चमध्ययने पेख ।
 देतो, लेतो एहवो, वर्त्तमान में देख ॥२५॥
 पुण्य पाप नहिं कहै तिहां, एहवुं बच अवलोच ।
 ते माटे वर्त्तमान हिज, काली मून सुजोय ॥२६॥
 कछो उपाशक अइ में, सुत सकडाल उदार ।
 गौशालक ने आपिया, फलय सिञ्जा संशार ॥२७॥
 कछो प्रभू ना गुण कर्या, तिण स्युं आपूं सोय ।
 पिण निश्चय नहिं धर्मा तप, इम कह दीघा जोय ॥२८॥
 दीघां गौशालक भणी, नही धर्मा तप सद्य ।
 तिमज अनेरा ने दियां, कीम हुवै पुण्य बन्ध ॥२९॥

जो चाढो तत्काल ना, शुष्क पुष्प न चढाय ।
 जद तो पुष्प नदी तणो, मिल्यो न सरिषो न्याय ॥१०॥
 उदक सहित टालै नदी, मुनि अंवलार्द्ध खाय ।
 तिण कारण हणवा तणु, ते कामी नहिं ताय ॥११॥
 हरित पुष्प चाढो तुम्हे, शुष्क पुष्प न चढाय ।
 दूण कारण हणवां तणो, तुम्हे कामी दूणन्याय ॥१२॥
 तिण सुं पुष्प नदी तणो, नथी सरिषो न्याय ।
 द्रव्य पूजा नी आण नही, नदी जिन आज्ञा मांय ॥१३॥
 जिन आज्ञा देवै तिको, निर्वद्य कारण जान ।
 जिन आज्ञा देवै नही, ते सावद्य कार्य मान ॥१४॥
 सुर सुर्याभ भणौ प्रभु. वन्दन आज्ञा खात ।
 नाटक नौ पूछां थकां, आण न दीधी नाय ॥१५॥
 मन में भलो न जाणियो. मौन रक्षा अवलोय ।
 तिण सुं ए नाटक कियो, ते सावद्य कार्य होय ॥१६॥
 प्रभूजी जे नाटक तणी, आज्ञा दीधी नांय ।
 तो किम द्रव्य पूजा तणी, आज्ञा दे जिनराय ॥१७॥
 मुनि दीक्षा लेतां किया, सावदरा पञ्चखान ।
 न करै द्रव्य पूजा तिको, सावद्य कार्य मान ॥१८॥
 सावद्य कार्य प्रते मुनि, करै करावै नांय ।
 अनुमोदै पिण नहिं तिको, निमल विचारो न्याय ॥१९॥

नित्य हजारों मत्त तदा, धान रांधता जाण ।
 हुवे हजारों मत्त तिहां, अग्नि पांणी घमसाण ॥५०॥
 उदक विपै फुं वारादि फुन, बलि वनस्पती जल मांय ।
 लूण मणां बन्ध लायतो, अनेक सूवा तसकाय ॥५१॥
 वायु जीव विराधना, ते पिण तिहां विशेष ।
 मोटो चारम्भ ए सही, दानशाला में देख ॥५२॥
 दिन दिन प्रति षट्काय हण, अनन्त जीवारी घात ।
 न गिणै पाप हिंसा तणो, तसु घट मांदि मिट्थात ॥५३॥
 असंयती वड्ड पोषियां, करै षट्काय बिषाण ।
 धर्म पुण्य किम तेह में, जीवो हिये विमास ॥५४॥
 धर्म हेतु प्रति जीव ने, हणियां दोष न कोय ।
 कछु अनार्य वचन ए, आचारङ्गे जीव ॥५५॥
 कछो धर्म रै कारणै, जीव न हणवू कोय ।
 ए आर्य नो वचन है, धुर अङ्गे अवलोय ॥५६॥
 तिण सूं प्रदेशी तणी, दानशाला पहिळाण ।
 श्री जिन आज्ञा बार है, समझो चतुर मुजाण ॥५७॥
 ज्ञाता अध्ययने तेरमें, ओ नन्दन मणिहार ।
 नन्दा पुष्करणी तणो, आख्यो वड्ड विस्तार ॥५८॥
 चिहुं दिश आहू बाग फुन, चिहुं बाग चिहुं शाल ।
 पूर्व बाग विषै प्रवर, चित्रशाला मुविशाल ॥५९॥

॥ अथ इक्कीसमूं दानाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

असंयतौ ने जाण ने, वा श्रावक ने कोय ।
 दान दियां स्यु फल हुवै, तसु उत्तर अवलोय ॥ १ ॥
 अष्टम शतकी भगवतौ, छट्टै उद्देशै जोय ।
 गौतम पूछो वीर प्रति, है प्रभू । श्रावक कोय ॥ २ ॥
 तथा रूप जे असंजति, तसु सचित्त अचित अशणादि ।
 अणेषणौ फुन एषणौक, प्रति लाभ्ये स्युं सम्वाद ॥ ३ ॥
 तेहने स्युं फल सम्पनै, तव भाषै जिनराय ।
 एकान्त पाप हुवै तसु, निरजरा किञ्चित नांय ॥ ४ ॥
 एकान्त पाप कछो प्रभू, प्रगट पाठ मे जोय ।
 तो ते दान दियां छतां, धर्म पुण्य किम होय ॥ ५ ॥
 वलि सातमां अङ्ग में, प्रथम अध्ययन मभार ।
 वीर भणी आणन्द कछो, अन्य तीर्थी प्रति धार ॥ ६ ॥
 अन्य तीर्थिक ना देव प्रति, फुन जिन ना मुनिराय ।
 अन्य तीर्थिक में जई मिल्या, तिणे संग्रह्या ताय ॥ ७ ॥
 ए विहुं प्रति वन्दू नहीं, वलि न करुं नमस्कार ।
 पहली बोलाऊं नहीं, एक वार बहु वार ॥ ८ ॥
 अशणादिक नहिं दुं तसु, वलि देवावूं नाहिं ।
 एहवुं अभिग्रह आदरौ, देखो आगम मांहि ॥ ९ ॥

रुधिरै खरह्यो वस्त्र से, जलादि करि शुद्ध होय ।
 तिम हिसादिक अघ तज्यां, जीव निमल हुवै सोय ॥७०॥
 सचित अचित सह ने दियां पुण्य कहै कै जेह ।
 कीड़ायत चोखी तथा, न्याय विचारी लीह ॥७१॥
 दशमें ठाणै देखल्यो, प्रभू कछा दश दान ।
 संचेयै कहिये तिकी, मुखजो चतुर सुजाण ॥७२॥
 सचित अचित जल अन्न लवण, अग्नि जमौकन्द जान ।
 अनुकम्पा आणी देवै, ते अनुकम्पा दान ॥७३॥
 द्वितीय दान संगह कह्यो, योवै बन्दीवान ।
 तथा छुड़ावै दाम दे, चोर प्रमुख ने जान ॥७४॥
 गृह करड़ा जाणी करी, धारिया ने जान ।
 देवै भय आणी करी, ते तीजो भय दान ॥७५॥
 खर्च करै मृत केहवा, जीवत बारियो जान ।
 आध ह्मासी प्रमुख ते, तूर्य कालूणी दान ॥७६॥
 बहु नौ लज्जाइ करी, सचित अचित धन धान ।
 दिये असंजती ने जिको, पञ्चम लज्जा दान ॥७७॥
 मुकलावो पैरावणी, जश अहङ्कारे जान ।
 दिये रावलिवा प्रमुख ने, छटो गार्व दान ॥७८॥
 कुशील नो अर्थी जिको, गणिकादिक ने जान ।
 दिये द्रव्य तेह ने कछु, सप्तम अघर्म दान ॥७९॥

जीमावै द्विज सहस्र बे, तसु पुण्य खन्ध बंधाय ।
 तेह पुण्य थी सुर हुवै, वेद विषै ए बाय ॥२०॥
 आद्र मुनि कह्यो सहस्र बे, दोहा जीमावै जेह ।
 तेह नरक में जपकै; अति अभिताप विषेह ॥२१॥
 प्रगट पाठ में बात ए, आद्र मुनि बच जोय ।
 तो असंयती रा दान में, धर्म पुण्य किम होय ॥२२॥
 कोई कहै छद्मस्थ था, आद्र मुनि तिहवार ।
 कह्युं ताण में तेह बच, किम कहिये तसु सार ॥२३॥
 तसु कहिये आद्र मुनि, चरचा करी विशाल ।
 बौद्ध मती गौशाल सूं, साग मती सूं न्हाल ॥२४॥
 एक छण्डिया प्रमुख ने, उत्तर दिया विचार ।
 तेह सत्य जाणो तुम्हे, तो ए पिण सत्य उदार ॥२५॥
 जाव अन्य प्रति सत्य है, ब्राह्मण प्रति अवदात ।
 उत्तर असत्य कहो तुम्हे, आ किसा लेखा री बात ॥२६॥
 सूत्र सूयगडांग चारमें, दान प्रशंसै सन्त ।
 वध बंछै षट काय नो, द्रुम भाष्यो भगवन्त ॥२७॥
 द्वितीय करण प्रशंसियां, हिंसक कहिये ताहि ।
 तो दान देवै ते धुर करण, ते हिंसक किम नाहि ॥२८॥
 करै प्रशंसा कुशील री, तामु कर्म बन्ध होय ।
 तो सेवै ते तो धुर करण, स्युं कहिये तसु सोय ॥२९॥

वैश्या ने देवै तिको, प्रत्यक्ष अधर्म पेख ।
 दौसै लोक विषै तसु, अधर्म नाम सम्पेख ॥८०॥
 धर्म दान विन शेष अठ, ते पिण अधर्म जान ।
 गुण निष्पन् ए नाम तसु, भाष्या श्री भगवान ॥८१॥
 श्री जिनवर जे दान रौ, आत्ता नही दे कोय ।
 धर्म पुण्य नहिं तेह में, हिये विमासी जोय ॥८२॥
 दशमें ठाणै धर्म दश, पाषण्ड धर्म आख्यात ।
 पिण ते नहिं आत्ता विषै, तिमहिज दान अवदात ॥८३॥
 सूत्र चारित्र जे धर्म बै, श्री जिन आत्ता मांहि ।
 तिमहिज जिन आत्ता विषै, धर्म दान कहिवाय ॥८४॥
 जिन आत्ता जे धर्म नौ, ते निर्वद्य पडिछाण ।
 आत्ता नहिं जिण धर्म रौ, ते तो सावद्य जाण ॥८५॥
 जिन आत्ता जे दान नौ, ते निर्वद्य अवलोय ।
 आत्ता नहिं जे दानरौ, ते सावद्य है सोय ॥८६॥
 दशमें ठाणै स्थिवर दश, भाष्या श्री भगवान ।
 सावद्य निर्वद्य ओलखो, जिन आत्ता करि जान ॥८७॥
 तिमहिज जिन आत्ता करी, सावद्य निर्वद्य दान ।
 ओलख ने निर्णय करै, ते कहिये बुद्धिवान ॥८८॥
 नवमें ठाणै पुण्य बन्ध, नव विध समुच्चै ख्यात ।
 अन्नपुण्य फुन पाणपुण्य, लैणपुण्य विख्यात ॥८९॥

दुःख विपाक मांही कछो, मृगालोढो देख ।
 गौतम पूछो वीर प्रति, पूर्व भवे द्रव्य पेख ॥४०॥
 स्यं दीधो स्यं भोगव्यो, इम पूछो गणिराय ।
 तिण सुं दान कुपाव ना, फल अति कटुक कहाय ॥४१॥
 प्रदेशी केशी भणौ, बोल्हो एहवौ वाय ।
 चार भाग ए राज रा, इं करस्युं मुनिराय ॥४२॥
 एक भाग राख्यां निमित्त, दूजो भाग खजान ।
 तीजो ह्य गय अर्थ हो, चौथो देवा दान ॥४३॥
 च्याहं सावद्य जाण ने, मौन रक्षा मुनिराय ।
 तीन भाग जिम तूर्य पिण, जाणो सावद्य ताय ॥४४॥
 पिण न कछो द्रव्य भाग तो, हेतु अब नौ राख ।
 तूर्य भाग तो पुण्य बन्ध, इम न कछो गुण तास ॥४५॥
 च्याहं भाग बोलाय ने, प्रदेशी राजान ।
 निज लफरो मेटी थयो, धर्म करण सावधान ॥४६॥
 तूर्य भाग दान तालके, नित प्रति धान रधाय ।
 वणौ मग रांक जिमायिवै, तिहां जीव हिंसा अधिकाय ४७
 सत्त महस्र जे ग्राम नां, चार भाग तसु कौध ।
 दान तालके घापियो, चौथो भाग प्रसिद्ध ॥४८॥
 दान तालके ग्राम था, साढ सतरै सौ जेह ।
 तसु हांसल धान रंधाय ने, दानभाला मांडेह ॥४९॥

बलि सूक्तता उदक प्रति, पायां तमु पुण्य होय ।
 अथवा उदक असूक्ततो, पायां पुण्य अवलोय ॥११०॥
 पात्रे । दीधां पुण्य है, तथा कुपात्र विषेह ।
 मुनि प्रति दीधां पुण्य है, तथा असाधु प्रतेह ॥१११॥
 चोर कसाई ने दियां, बलि गणिका प्रति जोय ।
 तुम्ह लेखे सहु ने दियां, पुण्य बन्ध अवलोय ॥११२॥
 लयणपुण्य समुच्चय कच्छो, ते जागां नवी कराय ।
 छ्वाय हणो दे तामु पुण्य, कै सीधो दीधां थाय ॥११३॥
 पात्र ने दीधां पुण्य है, तथा कुपात्र विषेह ।
 मुनि प्रति दीधां पुण्य है, तथा असाधु प्रतेह ॥११४॥
 गणिका चोर कसाई प्रति, दीधां पुण्य बंधाय ।
 समुच्चय लयणपुण्य कच्छो, उत्तर देवो ताय ॥११५॥
 सयणपुण्य समुच्चय कच्छो, रुंख कटाय कटाय ।
 पाट बाजोट कराय ने, दीधां पुण्य बंधाय ॥११६॥
 कै सीधा दीधां पुण्य है, पात्र कुपात्र भणोज ।
 साधु असाधु ने दियां, ते किण मे पुण्य कहोज ॥११७॥
 गणिका चोर कसाई प्रति, दीधां पुण्य अवलोय ।
 समुच्चय सयणपुण्य कच्छो, उत्तर देवो सोय ॥११८॥
 वस्त्रपुण्य समुच्चय कच्छो, कपड़ा नवा बनाव ।
 धोवाय दीधां पुण्य है, कै मोधा दीधां ताय ॥११९॥

विविध रूप चित्रा तिहां, नयना ने मुखदाय ।
 नाटक ना धुङ्कार बहु, जन मन हुलसत थाय ॥६०॥
 दानशाला दक्षिण बने, दिये दान दगचाल ।
 जीमाये बणौ मग रांक बहु, भोजन विविध रसाल ॥६१॥
 तीगच्छ शाला पश्चिम बने, राख्या बैद्य सुताम ।
 औषध करौ रोगी भणौ, करै अधिक आराम ॥६२॥
 शुभ अलङ्कार उत्तर बने, नार्दै प्रमुख बैसाय ।
 रोगी प्रमुख भणौ तिहां, खिजमत खान कराय ॥६३॥
 द्रुम बहु असंयती भणौ, मुख साता उपजाय ।
 उपना छेदहै सोल गद, नन्दन रै तनु मांय ॥६४॥
 काल करौ मौडक हुवो, निज पुष्करणी मांय ।
 सावद्य कार्य ना कटुक फल, निमल विचारो न्याय ॥६५॥
 ज्ञाताध्ययने आठमें, देखो चतुर सुमर्म ।
 चोखी सन्यासण कछुं, दान धर्म शुचि धर्म ॥६६॥
 दान धर्म शुचि धर्म कर, निरविघ्न स्वर्गे जाय ।
 मल्लि भणौ चोखी कहौ, ए निज अद्या ताय ॥६७॥
 तब मल्लि कछो चोखी भणौ, रुधिर खरड्यो जेह ।
 वस्त्र लोही सूं धोवियां, शुद्ध हुवै किम तेह ॥६८॥
 तिम अष्टादश पाप प्रति, सेवै जे कोई जन्त ।
 तेह निमल किण विध हुवै, दीघा एह दृष्टान्त ॥६९॥

नमस्कार समुच्चय कछो, सिद्ध साधु प्रति जोय ।
 नमस्कार कियां पुण्य है, कै अन्य प्रते कीधां होय ॥१३०॥
 कुत्ता भाई राम राम, कागा भाई राम ।
 इस चाण्डाल भणौ नम्यां, पुण्य है कै नहिं ताम ॥१३१॥
 विनय करै सधला तणो, विनय वादी अवलोय ।
 तसु पाषण्डी प्रभु कछो, सूत्रे ए वच जोय ॥१३२॥
 जो नमस्कार सहु ने कियां, पुण्य कहै मति मन्द ।
 ते कीड़ायत जाणवा, विनय वादी रा अन्ध ॥१३३॥
 अन्नपुण्य समुच्चय कछो, ते माटै अवलोय ।
 सहु ने अन्न दीधां थकां, पुण्य कहै जे कोय ॥१३४॥
 तसु लेखै समुच्चय कछा, मनपुण्य वचपुण्य काय ।
 ए पिण्य अशुद्ध तीनो थकी, पुण्य तणो बन्ध थाय ॥१३५॥
 जो सावद्य मन वच काय थी, पुण्य बंध नहिं थाय ।
 अन्न पिण्य दियां कुपात्र ने, पुण्य बंधि किण्यन्याय ॥१३६॥
 नमस्कार पुन्ये अपि, समुच्चय कहिये पेख ।
 सहु ने नमण कियां थकां, पुण्य बन्ध तसु लेख ॥१३७॥
 गणिका चोर कसाई प्रति, कर जोड़ी नमस्कार ।
 कीधां पिण्य पुण्य बन्ध हुवै, जसु लेखै अवधार ॥१३८॥
 सर्व भणी जो अन्न दियां, बलि सहु ने नमस्कार ।
 कीधां पुण्य तो देखलो, सप्तम अङ्क मभार ॥१३९॥

धर्म दानवर आठसूं, तीन भेद है तास ।
 सूत्र सुपात्र दान फुन, अभय दान गुण राश ॥८०॥
 आगम अर्थ बताय ने, तसु मित्थात्व मिटाय ।
 शुद्ध समकित पमाविये. सूत्र दान कहिवाय ॥८१॥
 वर महाव्रत धारौ मुनि, दिये सुजतो तास ।
 दान सुपात्र तसु कछो, द्वितीय भेद सुविमास ॥८२॥
 भय नहिं दे अंतू भणी, हणवारा पच्चखाण ।
 ते अभय ए भेद वण, धर्म दान रा जाण ॥८३॥
 सचितादिक जे द्रव्य वहु, दिये उधारा जेम ।
 ध्यान पाछो लेवा तणो, नवम काएन्ती एम ॥८४॥
 लैणायत ने जिम दिये, हांतो नैता देय ।
 दियां पछे पाछो लिये, दशम कएन्ती तेय ॥८५॥
 धुर वोहरा जिम उभय ए, दियां प्रथम दे तेह ।
 ते नवसूं फुन दशम जे, दियां पाछो दे जेह ॥८६॥
 धर्म दान अष्टम तिको, श्री जिन आज्ञा मांहि ।
 शेष दान नव है जिका, जिन आज्ञा में नांहि ॥८७॥
 असंजती ने दान दे, तसु कछो अब एकन्त ।
 नव ही दाल तेहने विषै, देखोजी बुद्धिवन्त ॥८८॥
 ए दश दान कछा तिके, गुण निप्यन्न तसु नाम ।
 पिण जिन आज्ञा बाहिरो, ते सावय्य अब धाम ॥८९॥

जागां पाट बाजोटादि नो, पडै साधू रै काम ।
 कपड़ो पिण साधू तथे, अवश्य चाहिजे ताम ॥१५०॥
 इस कल्पै साधू भणौ, आख्या तेहिज बोल ।
 देखोजी देखो तुम्हे, खांख झीया रौ खोल ॥१५१॥
 साधू बिन जो अन्य प्रति, दौधां पुण्या जो होय ।
 तो गाय मुयय किस नवि कह्यो, भैंस पुण्या पिण जोय ॥१५२॥
 सुवरण पुण्य रूपो पुण्या, हीरो पुण्या उदार ।
 मोती ने माणिक पुण्या, खेती पुण्या विचार ॥१५३॥
 इत्यादिक मुनिवर भणौ, नहिं कल्पै ते बोल ।
 सुख विषै ते नवि कह्यो, देखोजी दिल खोल ॥१५४॥
 मुनि प्रति नहिं कल्पै तिको, एक ही बोल कह्यो ।
 तो तुम्हे कहता अन्य प्रति, दीवै पिण पुण्या हुन ॥१५५॥
 जब को कहै कह्यो अर्थ मे, पात्रे अन्न दीवै ।
 तीर्थङ्कर नामादि जे, पुण्या प्रकृति बंधै ॥१५६॥
 पात्र थकी जो अन्य प्रति, दियां अनेरी ताहि ।
 पुण्या प्रकृति बन्ने इसो, कह्यो अर्थ रै माहि ॥१५७॥
 तमु कहिजे जे पात्र ने, दीवै जतां जु तैह ।
 तीर्थङ्कर नामादि जे, पुण्या प्रकृति बंधै ॥१५८॥
 आदि शब्द सैं तो जिकी, पुण्या प्रकृति सहु आय ।
 इका ही बाकी नवि रही, निमल विचारो न्याय ॥१५९॥

सयणपुण्या फुन वस्त्रपुण्या, मनपुण्या वचपुण्या काय ।
 नमस्कारपुण्यो नवम, समुच्चै ही कहिवाय ॥१००॥
 कोई कहै अन्नपुण्या इम, समुच्चय आख्यो स्वाम ।
 ते माटे सह ने दियां, पुण्या बन्ध कै ताम ॥१०१॥
 इम कहै तेहने पूछिये, अन्नपुण्या आख्यो सोय ।
 के कोरो दीधां पुण्या हुवे, के काचो दीधां होय ॥१०२॥
 के अन्नपुण्या रांध्यो दियां, सचित्त दियां पुण्य थाय ।
 तथा अचित्त दीधां थकां, पुण्य बन्ध कहिवाय ॥१०३॥
 दियां सुभक्तो पुण्य है, वा असुभक्तो दियेह ।
 पात्र प्रति दीधां पुण्य है, तथा कुपात्र विषेह ॥१०४॥
 मुनि प्रति दीधां पुण्य है, तथा असाधू प्रतेह ।
 चोर कसाई ने दियां, बलि गणिका प्रतेज देह ॥१०५॥
 समुच्चय आख्यो अन्नपुण्य, ते माटे अवलोय ।
 सह ने दीधां पुण्य नो, तुम्ह लेखै बन्ध होय ॥१०६॥
 इम तसकर गणिकादि जे, सह ने दीधां पुण्य ।
 तिणमुं सघला पात्र है, नहिं कुपात्र जवुन्य ॥१०७॥
 पाणपुण्य समुच्चय कह्यो, ते अचित्त पायां पुण्य होय
 के सचित्त उदक पायां थकां, पुण्य बंध तसु जोय १०८
 जो सचित्त पायां थो पुण्य हुवे, तो छायो पावेह ।
 अथवा अकारया उदक प्रति, पायां पुण्य कहैह ॥१०९॥

वृत्ती मानै तसु लेख पिण, पुण्य पात्रे ज दियेह ।
 अर्थ न मानै एह तिण, वृत्ति न मानी तेह ॥१७०॥
 सूत्र भगवती सुयगडांग, उत्तराध्ययन उजास ।
 असंजती प्रति दान दे, कछा अशुभ फल तास ॥१७१॥
 इम जाणै उत्तमा नरां, राखो सुद प्रतीत ।
 श्रीजिन आण उथाप ने, मती को करो अनीत ॥१७२॥
 ठाणा अङ्ग ठाणै तूर्य वर, तूर्य उद्देशा मांय ।
 च्यार मेह प्रभू आखिया, सांभलज्यो चित्तल्याय ॥१७३॥
 इक वर्षे जे खेत्त मे, अखेत्त वर्षे नाहि ।
 अखेत्त वर्षे एक पिण, खेत्त न वर्षे ताहि ॥१७४॥
 इक क्षेत्रे पिण वर्षतो, अखेत्रे पिण वर्षाय ।
 इक क्षेत्रे नहिं वर्षतो, अखेत्त वर्षे नाहि ॥१७५॥
 इण दृष्टान्ते पुरुष नौ, च्यार जाति कहिवाय ।
 देवै पात्र विषै जु इक, दिये कुपात्रे नाहि ॥१७६॥
 इह विध कछा कुपात्र ने, कुचेत्त सु वर न्याय ।
 बायो जिहां जगै नहीं, ते कुचेत्त कहिवाय ॥१७७॥
 ते माटै जु कुपात्र ने, दीधां शुभ अङ्कुर ।
 जगै नहिं तिण कारणै, कछा कुचेत्त भूर ॥ १७८॥

॥ इति दानाधिकार ॥

पात्रेव दीधां पुण्या है, तथा कुपात्र विषेह ।
 साधु असाधु ने दियां, किण मे पुण्या कहिह ॥१२०॥
 गणिका चोर कसाई प्रते, दीधां पुण्या बंधाय ।
 समुच्चय वत्थपुण्या कह्यो, उत्तर देवो न्याय ॥१२१॥
 मनपुण्ये समुच्चय कह्यो, सावदा अशुद्ध जवुन्य ।
 मन प्रवर्त्तायां पुण्या है, कै निर्वदा मन थी पुण्या ॥१२२॥
 पञ्च आस्रव सेवण तणा, मन थी पुण्या बंधाय ।
 पञ्च आस्रव छोडण तणा, मन थी पुण्या बंध थाय ॥१२३॥
 समुच्चय मनपुण्ये कह्यो, सावदा मन प्रवर्त्ताय ।
 ते थी पुण्य बंधे कै नहिं, उत्तर देवो ताय ॥१२४॥
 वचपुण्ये समुच्चय कह्यो, सावदा अशुद्ध जवुन्य ।
 वच बोल्यां थी पुण्य है, कै निर्वदा वच थी पुण्य ॥१२५॥
 समुच्चय वचपुण्ये कह्यो, मुख से बोलै गाल ।
 एक गुणै नवकार शुद्ध, किण थी पुण्या बंध न्हाल ॥१२६॥
 कायपुण्ये समुच्चय कह्यो, सावदा तन प्रवर्त्ताय ।
 तेह थकी पुण्या बध हुवे, कै निर्वदा तनु थी थाय ॥१२७॥
 गीत तम तनु थी खमै, ते थी पुण्या बंधाय ।
 गेहूँ पोसै केदै हरी, तेथी पुण्या बन्ध थाय ॥१२८॥
 हिन्सा झूठ अदत्त फुन, चौथो आस्रव ताहि ।
 समुच्चय कायपुण्ये कह्यो, दूण थी पुण्य कै नाहि ॥१२९॥

१३६] * श्रावक ने दिया स्वं थाय अधिकार *

गृहस्थ ने देवो तज्यो, स्वं खाणो मुनिराय ।
 ते ससार भ्रमण तणो, हेतु जाणो ताय ॥ ८ ॥
 मुथगडांग नवमें कच्चो, गाहा तेवोसम् ताहि ।
 तिण्णं सूं श्रावक आवियो, प्रत्यक्ष गृहस्थ मांहि ॥ १० ॥
 पनरमोद्देश निशीथ में, मुनि अन्य तीर्थीं प्रतेह ।
 अथवा गृहस्थ प्रते बली, अशनादिक आपेह ॥ ११ ॥
 वस्त्र पात्र फुन कम्बली, रजोहरण मुविचार ।
 ए आठ बोल देवै तसु दण्ड चौमासी धार ॥ १२ ॥
 देतां प्रति अनुमोदियां, दण्ड चौमासी आय ।
 ते माटे गृहस्थ विषे, श्रावक पिण्ड इहां आय ॥ १३ ॥
 तसु मुनि पोतै दै नहीं, बलि जसु देवै कोय ।
 अनुमोदै नहि तेहने, ऋषि आचार सु जोय ॥ १४ ॥
 तृतीय करण अनुमोदियां, दण्ड चौमासी आय ।
 तो प्रथम करण देवै तसु, धर्म पुण्य किम थाय ॥ १५ ॥
 पड़िमाधारी पिण्ड इहां, आयो गृहस्थ विषेह ।
 तसु अशनादिक नहि दिये, महा मुनि गुण गेह ॥ १६ ॥
 ते पड़िमाधारी प्रते, गृहस्थ दिये को आहार ।
 तो मुनि अनुमोदै नहीं, देखो न्याय विचार ॥ १७ ॥
 देता प्रति अनुमोदियां, मुनिवर ने दण्ड आय ।
 तो देणवाला ने धर्म किम, तसु खाणो अन्नत मांहि ॥ १८ ॥

अन्य तीर्थी ने नहिं करूँ, वन्दना ने नमस्कार ।
 अशशादिक पिण द्यं नहौं, आनन्द कछु उदार ॥१४०॥
 मुनि विन अन्य प्रति अन्न दियां, बलि कियां नमस्कार ।
 पुण्य हुवै तो किम लियो, आनन्द अभिग्रह सार ॥१४१॥
 जसु अन्न दीधां पुण्या हुवै, तेह ने पिण शिरनाम ।
 नमस्कार कीधां कृतां, पुण्या हुवै कै ताम ॥१४२॥
 ते नव ही निर्वद्य कै, साधू ने नमस्कार ।
 कीधां पुण्य कै तो तसु, अन्न दीधां पुण्य सार ॥१४३॥
 जल पिण निरदोषण तसु, दीधां पुण्य सु देख ।
 जागां पिण तसु सूभती, आप्यां पुण्य सु पेख ॥१४४॥
 सयण पाट प्रमुख तसु, दीधां पुण्य सो जोय ।
 बल्य पिण निरदोषण तसु, दीधां थौ पुण्य होय ॥१४५॥
 मन बच काया पिण बलि, निरवद्य थौ पुण्य बन्ध ।
 नमस्कार पद पञ्च प्रति, कीधां पुण्या सु सन्ध ॥१४६॥
 निरवद्य रै लेखै नवूँ, बोल सरीषा शुद्ध ।
 नवूँ शरीषा नवि कहै, श्रद्धा तास विरुद्ध ॥१४७॥
 साधू ने कल्पै जिक्के, तेहिज द्रव्य आख्यात ।
 द्रव्य अनैरा नवि कछा, देखो तज पखपात ॥१४८॥
 अन्न साधु रै जोइये, जल पिण मुनि रै ताय ।
 चाहिजे तिण कारणै, पांणपुण्य कहिवाय ॥१४९॥

व्यावच ग्रहस्थ तणौ कही, दशवैकालिक मांहि ।
 अणाचार अट्टबीसमो, तृतीय अध्ययने ताहि ॥२६॥
 गृही व्यावच मुनि नहीं करें, नथी करावे जाण ।
 करतां अनुमोदै नहीं, त्रिविध २ पञ्चखाण ॥२७॥
 ग्रहस्थ प्रति पूछै मुनि, मुख साता छे तोय ।
 अणाचार ते सोलमीं, दशवैकालिक जोय ॥२८॥
 मुख पूछां बच्छी तिणे, साता तसु अणाचार ।
 तो गृही ने साता कियां, किम हुवै धर्म उदार ॥२९॥
 दशाश्रुतस्कंधे ज्ञारमी, पड़िमा में सम्पेख ।
 पेज्ज बंधण तूटो नहीं, ज्ञात तणो सुविशेष ॥३०॥
 ते माटै कल्पै तसु, ज्ञात तणो जे आहार ।
 इम पेज्ज बंधण खातै कही, भिक्षाचरी तसु धार ॥३१॥
 पेज्ज बंधण ना अशुभ फल, ते माटै अवलोय ।
 तसु खातै भिक्षाचरी, ते पिण सावदा जोय ॥३२॥
 भगवती अष्टम शत विषै, पञ्चमुद्देशक जान ।
 गौतम पूछ्यो गृही करी, सामायिक मुनि स्थान ॥३३॥
 तसु भण्ड तस्कर अपहृष्टां, सामायिक चीतार ।
 भण्ड नी करै गवेषणा, आवक तेह तिवार ॥३४॥
 हे प्रभु ! ते निज भण्ड तणौ, करै गवेषणा सोय ।
 कै पर भंड नी ते करै, गवेषणा अवलोय ॥३५॥

ऋषभादिक कहिवै इहां. जिन चउबीस सु आय ।
 गौतमादिक गुणवै करी, चउद सहस्र मुनिराय ॥१६०॥
 तिम तीर्थङ्कर नामादि इम, आदि शब्द रै मांहि ।
 पुण्य प्रकृति आवी सहु, बाकी रही न कांय ॥१६१॥
 पात्र थकी को अन्य प्रति, दियां अनेरी जाण ।
 पुण्य प्रकृति बंधे तिकी, अर्थ विरुद्ध पहिछाण ॥१६२॥
 आदि शब्द में तो जिकी, पुण्य प्रकृति सहु आय ।
 वलि अनेरी पुण्य नी, प्रकृति किसी कहिवाय ॥१६३॥
 किण्हिक ठाणा अङ्ग में, छै ए अर्थ उदुन्य ।
 सहु ठाणा अङ्ग में नहीं, पाठ बिना अर्थ शून्य ॥१६४॥
 अन्य प्रति दीधां अन्न जे. पुण्य प्रकृति बंधेह ।
 वृत्ति विषै ए नवि कह्यो, अभयदेव सुरेह ॥१६५॥
 पात्रे अन्न देवा थकी, जे तीर्थङ्कर नामादि ।
 पुण्य प्रकृति नो बंध ते, अन्नपुण्य संवाद ॥१६६॥
 वृत्ती विषै इतरोज छै, पिणअन्य प्रति दीधां सोय ।
 बंधे अनेरी पुण्य प्रकृति, एहवुं कह्यो न कोय ॥१६७॥
 पाठ विषै पिण ए नहीं, वृत्ती विषै पिण नांहि ।
 सूत्र थकी पिण नहि मिलै, ए विरुद्ध अर्थ इगन्याय ॥१६८॥
 अन्नपुण्य को अर्थ शुद्ध, वृत्ती विषै कह्युं सोय ।
 पात्रे दीधां पुण्य कह्युं, प्रत्यक्ष ही अवलोय ॥१६९॥

ममत्व तजी नहीं ते भणी, घन तेहनो ज कहाय ।
 तिण सुं सामायक मक्के, मुनि प्रति-द्रव्य वहिराय ॥४८॥
 द्रव्य अनेरा नो हुवे, ते मुनि प्रति जो देह ।
 तो तेहनो आत्ता थकी, वहिरावे गुन गेह ॥५०॥
 पिण ममत्व भाव पच्चख्यो नहीं, तिण सुं तसु द्रव्य जोय
 वहिरायां आत्ता तणो, कारण नहिं छै कोय ॥५१॥
 तिण ज उद्देशे पूछियो, रुहो सामायक मांहि ।
 कोर्ब पुरुष सेवे तदा, तसु भार्या प्रति आय ॥५२॥
 हे प्रभु ते श्रावक तणी, भार्या प्रति सेवेह ।
 तथा अभायां प्रति तदा, सेवे इम पूछेह ॥५३॥
 जिन कहै ते श्रावक तणी, भार्या प्रति सेवन्त ।
 अभायां प्रति सेवे नहीं, बलि गौतम पूछन्त ॥५४॥
 हे प्रभु सामायक विषे, भार्या अभायां होय ।
 जिन कहै इन्ता गोयमा, भार्या अभायां जोय ॥५५॥
 किण अर्थे प्रभु इम कंहुं, भार्या प्रति सेवन्त ।
 अभायां प्रति सेवे नहीं, तव भाषे भगवन्त ॥५६॥
 जिन कहै सामायक विषे, इसी भायना आय ।
 माता नहिं छै मांहरी, पिता न म्हारो ताहि ॥५७॥
 भ्राता ते म्हारो नहीं, भगिनी मांहरी नाहि ।
 भार्या मांहरी को नहीं, सुत म्हारो नहिं ताहि ॥५८॥

॥ अथ बावीसमूं श्रावक ने दियां स्यूं थाय अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै श्रावक भणी, अश्रणादिक आपेह ।
तेहने स्यूं फल सपजै, हिव तसु उत्तर लेह ॥ १ ॥
द्वितीय सुयगडांगे कछो, द्वितीय अध्ययन विषेह ।
अथवा प्रथम उपङ्ग मे, प्रथम बीम मे लेह ॥ २ ॥
खाणो ने फुन पीवणो, श्रावक तणो सु जोय ।
अब्रत मांहे आखियो, बलि गहणो अवलोय ॥ ३ ॥
त्याग त्याग सहु ब्रत है, राख्यो जे आगार ।
तेहने अब्रत आखिये, बारुं न्याय विचार ॥ ४ ॥
दूजो आसव दाखियो, अब्रत ने जिनराय ।
ठाणांगठाणे पांचमें, बलि समवायाङ्ग मांहे ॥ ५ ॥
भाव शस्त्र अब्रत भणी, भाष्यो श्री जगभाण ।
शङ्का हुवै तो देखल्यो, ठाणांग दशमें ठाण ॥ ६ ॥
तिण सूं हियै विचारियै, श्रावक ने अवलोय ।
अब्रत सेवायां छतां, धर्म पुण्य किम होय ॥ ७ ॥
श्रावक ते विरते करी, देव वैमानिक थाय ।
कहुं भगवती प्रथम शत, अष्टमोद्देशक मांहे ॥ ८ ॥

शस्त्र के घट्काय नो, अधिकार्य कहिवाय ।
 तसु तीखो कौधां कृतां, धर्म पुण्य किम थाय ॥६६॥
 इमहिज पडिमा ने विषै, श्रावक आतम जाण ।
 अधिकार्य न्याये करी, वारुं करो विनाश ॥७०॥
 सामायक में आत्मा, तसु अधिकार्य आख्यात ।
 तो के सामायक विना, तेह तण्णी सौ वात ॥७१॥
 षट् पोसा इक मास में, चष्ट पोहरिया करेह ।
 अथा बोहित्त वरुं में, संवत्सरि इक लेह ॥७२॥
 एह तिहोत्तर दिन तण्णी, व्याज तसु घर आय ।
 बलि तोटादि नफा तण्णी, तेहिज धन्यो कहाय ॥७३॥
 घर पुत्रादिक जन्मियां, हर्ष हियै तसु आय ।
 चित्त उदास हुवै मूंचा, पेज्ज बंधन इम थाय ॥७४॥
 तोटो मुण विलखो हुवै, नफो मुण्णी बिकसाय ।
 सामायक पोषह मज्झे, ममत्व भाव इणन्याय ॥७५॥
 इमहिज पडिमा रै विषै, हर्ष सीम चित्त आय ।
 पेज्ज बंधन आख्यो प्रमु, न्यातील सूं ताव ॥७६॥
 एक लखपती श्रेष्ठ जसु, मात पिता परिवार ।
 स्त्री पुत्रादिक को नहौं, एकलङ्को अवधार ॥७७॥
 लाख रुपइया रोकड़ा, मिद भणौ ज भलाय ।
 श्रावक नौ पडिमा बहै, एकादश लग ताहि ॥७८॥

गौतम प्रति सधार मे, आनन्द आख्यो एस ।
 हे भदन्त ! हूं गृहस्थ कूं, गृहि मज्झ वसूं ज तेम ॥१८॥
 ते गृही मज्झ वसता भणौ, इतरो अवधि उप्पन्न ।
 पूर्वं दिशि लवणो दधी, जोयण पञ्च सयज्जन ॥१९॥
 देखूं ते हूं क्षेत्र प्रति, दक्षिण पश्चिम एम ।
 वलि उत्तर दिशि नै विधै, चूल हेमवन्त तेम ॥२०॥
 ऊंचो सौधर्म कल्प लग अधो नरक धुर तांस ।
 सहस्र चौरासौ वर्ष स्थिति, लोलुच नरकावास ॥२१॥
 गौतम बोल्या ए वडो, मोटो अवधि उदार ।
 गृहस्थ भणौ नहीं ऊपजै, हे आनन्द विचार ॥२२॥
 ते माटे तूं एहनौ, लै आलोवण सार ।
 जाव प्रायश्चित एहनो, पडिवजिये धर प्यार ॥२३॥
 तब आनन्द पूछ्यो भदन्त, जे वर सत्य वदेह ।
 आवै कै दण्ड तेह ने, श्री जिन वयण विषेह ॥२४॥
 गौतम कहै नहिं दण्ड तसु, वलि आनन्द कहै वाय ।
 सत्य प्रवर वच कहै तसु, प्रायश्चित जो नांय ॥२५॥
 तो तुम्ह हिज आलोवणा, जाव प्रायश्चित लेह ।
 इत्यादिक इधकार कै, देखोजी चित्त देह ॥२६॥
 व्रम सद्धम अहे, कच्छो, अणशण मे, सुविशेष ।
 आनन्द आख्युं गृहस्थ इ, तो पडिमा नो स्यूं पेख ॥२७॥

पड़िमा में पिण पञ्चमू, देश व्रत गुणठाव ।
 जे जे तसु आहार छै, ते ते अब्रत जाव ॥८८॥
 खाणो पीणो तेहनो, अविरत मांझो जोय ।
 तसु अब्रत सेवाविद्या, धर्म पूर्य किम होय ॥८९॥
 पड़िमाधारी आहार छै, तेहने तो कहै पाप ।
 तो देवै तसु धर्म किम, देखो धिर चित्त थाप ॥९०॥
 जो खेण वाला ने पाप छै, पाप जगायो जास ।
 धर्म पुराय किण विध जुवै, जोवो हिय विमास ॥९१॥
 खेण वाला ने जे जुवै, देश वाला ने तेह ।
 जिन आत्ता नहिं विहु भणौ, विहु ने आब्र बधेह ॥९२॥
 जे पड़िमाधारी बिना, अन्य तयो पिण देख ।
 खाणो पीणो पहिरणो, अविरत में सम्पेख ॥९३॥
 ते माटे मुनि दैन तसु, दोषां पावे दण्ड ।
 अनुमोद्यां पिण दण्ड है, सूत निशीथ मुमंड ॥९४॥
 श्रावक जिमावण तयो, जिन आत्ता दे नाहि ।
 आत्ता बिन नहिं धर्म पुराय, देखोजी दिख माहि ॥९५॥
 समदृष्टि श्रवे समो, जिन आत्ता में धर्म ।
 आत्ता बारै धर्म नहीं, ए जिन शासन मर्म ॥९६॥
 कहि कहि रे कितरो काह्न, धर्म न आत्ता बार ।
 आत्ता मांझो पाप नहीं, श्रध्यां सम्यक्त्व सार ॥९७॥

प्रभु कहै करे गविषणा, निज भंड तणीज तेह ।
 पिण जे पर ना धन तणी, गविषणा न करेह ॥३८॥
 बलि गौतम पूछ्यो प्रभु, सामायिक रै मांहि ।
 ते भंड ने वोसिरावियां, भंड अमंड कहाहि ॥३९॥
 जिन कहै हन्ता गोयमा, भंड अमंड कहाय ।
 बलि गौतम पूछ्यो प्रभु, तसु भंड कहो किणन्याय ॥४०॥
 प्रभु कहै सामायिक विषै, ते इसी भावना भाय ।
 हिरण्य नहीं ए मांहरौ, बलि मुझ सुवर्ण नाहिं ॥४१॥
 कांसौ नहीं ए मांहरौ, नही वस्त्र मुझ एह ।
 नहिं मांहरौ विस्तौर्य धन, कनक रत्न मणि जेह ॥४२॥
 मोती ने बलि शङ्ख शिल, प्रवाल झूंग कहाय ।
 पद्म रत्न आदिक कृतां, सार द्रव्य मुझ नाहि ॥४३॥
 एहवी चिन्तवना प्रवर, सामायिक में जान ।
 पिण समत्व भाव जे धन थकी, न कियो तिण पच्चखाण ॥४४॥
 तिण अर्थे दूम आखियो, निज भंड तणीज जेह ।
 गविषणा पिण पर तणा, भंड नौ नथौ करेह ॥४५॥
 प्रगट पाठ में दूम कह्यो, ते माटै अवलोय ।
 सामायिक में धन थकी, समत्व भाव तसु जोय ॥४६॥
 समत्व भाव पच्चख्यो नथौ, गृही सामायिक मांहि ।
 तो पड़िमा में धन तणी, समत्व तजौ किम ताहि ॥४७॥

सावद्य पाप सहित जे, सावद्य कहिये तास ।
 अन्तर आंख उघाड़ ने, वारुं न्याय विमास ॥ ८ ॥
 निशीथ उहे शै बारमें, मुनि अनुकम्पा आण ।
 दृष्टादिकी पाशे करी, जो बांधै तस प्राण ॥ ९ ॥
 अथवां बांधतां प्रते, जो अनुमोदै ताय ।
 चौमासौ तसु प्रायश्चित, प्रगट पाठ में वाय ॥ १० ॥
 इमहिज बन्धा जीव ने, छोडै तो दण्ड पाय ।
 छोड़ता प्रति जे वली, अनुमोद्यां दण्ड आय ॥ ११ ॥
 ए प्रत्यक्ष पाठ विषै कह्यो, अनुकम्पा ए जान ।
 सावद्य है तिण कारणै, दंड कह्यो भगवान ॥ १२ ॥
 छोडै तसु अनुमोदियां, तृतीय करण दंड ख्यात ।
 तो छोडै ते धुर करण, तास धर्म किम यात ॥ १३ ॥
 असंजती रो जीवणो, बंछै नहिं मुनिराय ।
 मरणो पिण नहिं बञ्छणो, ए राग द्वेष कहिवाय ॥ १४ ॥
 असंजती रो जीवणो, बञ्छ्यां धर्म जु होय ।
 तो ए अनुकम्पा तणो, प्रायश्चित किम जोय ॥ १५ ॥
 सावद्य ए अनुकम्पा है, तिण सुं दंड है तास ।
 निर्वद्य नो दंड हुवे नहीं, जोवो हिय विमास ॥ १६ ॥
 अनुकम्पा ने अर्थ हो, कृष्ण ईंट उपाड़ ।
 मूँकी वृद्ध तबो घरै, अन्तगडे अधिकार ॥ १७ ॥

नहिं है स्हारी पुत्रिका, सुत नौ बह्व विमास ।
 ते पिण मांहरो को नही, करै इस चिन्तवणा तास ॥५६॥
 प्रेम रूप बन्धन बलि, तसु विच्छिन्न न हुन्त ।
 तिण अर्थे करि तेहनी, भार्या प्रति सेवन्त ॥६०॥
 इह विध प्रभुजो आखियो, सामायक रै मांहि ।
 प्रेम बन्धन छेदो नथी, मात प्रमुख नूं ताहि ॥६१॥
 इसहिज पड़िसा ने विषै, मात प्रमुख नूं सोय ।
 प्रेम बंधन तूटो नथी, न्याय विचारी जोय ॥६२॥
 इग्यारसी पड़िसा मझै, न्यातीला नो धार ।
 प्रेम बंधन कूटो नथी, तिण सुं लै तसु आहार ॥६३॥
 कच्छं दशाश्रुतस्कन्ध इस, ते माटे अवलोय ।
 पेज्ज बंधन खाते तसु, आहार लेवूं पिण होय ॥६४॥
 पूछ्यां जिन आज्ञा न दे, लिण वाला ने जोय ।
 देण वाला ने पिण नही, जिन आज्ञा अवलोय ॥६५॥
 जिन आज्ञा वारै नही, धर्म पुण्य, रो अंश ।
 धर्म कहै आज्ञा विना, तसु कहिये मति भंश ॥६६॥
 सूत्र भगवती ने विषै, सप्तम सतकै भेव ।
 प्रथम उद्देशा ने विषै, दाख्यो श्री जिनदेव ॥६७॥
 सामायक मांहि कहौ, आवक नौ सपेख ।
 आत्म ते अधिकरण इस, प्रगट पाठ में लेख ॥६८॥

छेद्र करी जल आवतो, देखौ यहस्थ प्रतेह ।
 बतावणो नहिं जिन कछो, प्रत्यक्ष पाठ विषेह ॥२८॥
 उदक भराती नाव ए, देवू तुरत बताथ ।
 एहवुं पिण नवि चिन्तवै, मन माहीं मुनिराय ॥२९॥
 आप अने बहु अन्य जन, छुवै उदक करेह ।
 सम भावै बैठो रहै, राग द्वेष टालेह ॥३०॥
 द्वितीय अङ्ग में आखियो, श्रुतखंड द्वितीय विषेह ।
 पञ्चम अध्ययने प्रगट, तीसरी गाथा जेह ॥३१॥
 जीव सिंह व्याघ्रादि फुन, हिंसक देखी सन्त ।
 यह मारवा जोग कै, डूम न कहै गुणवन्त ॥३२॥
 अथवा हिंसक देख ने, यह हणवा जोग ज नाहिं ।
 एहवुं पिण कहिवुं नही, निपुण विचारो न्याय ॥३३॥
 वृत्तिकार एहवुं कछुं, वदवा जोग ज नाहिं ।
 डूम कहतां तसु कर्म नी, अनुमोदना जु आय ॥३४॥
 कछा सिंह बाघादि जे, आदि शब्द रै मांहि ।
 चातक जे मट्काय बा, ते सह्य आव्या ताहि ॥३५॥
 हयै कसार्ई अज भयी, तसु तारण अणगार ।
 त्याग, करावै बध तणा, दे उपदेश उदार ॥३६॥
 पिण ब्रकरा मुं जीवणो, बंछै नहिं मन मांहि ।
 असंजम जीवत बंछणो, बज्यौ कै जिनराय ॥३७॥

मित्र तणै ब्रत पञ्चमे, निज पोता ना जाण ।
 सहस्र दाम उपरन्त सूँ, राखण रा पचखाण ॥७६॥
 पड़िमाधारी ना जिकै, लाख दाम राखन्त ।
 तेह तणौ अब्रत तणो, अब किण नै लागन्त ॥७७॥
 तथा रुपइया लाख जे, किण रा परिग्रह मांहि ।
 पोतै रखवाली करै, पिण तसु परिग्रह नांहि ॥७८॥
 पड़िमाधारी ना प्रगट, परिग्रह मांहि पिछाण ।
 अविरत नो लागै तसु, पाप निरन्तर जाण ॥७९॥
 ममत्व भावं पचख्यो नथौ, पड़िमा मे इणन्याय ।
 सामायक जिम तेहनुं, तनु अधिकरण कहाय ॥८०॥
 तथा लखपती श्रेष्ठ इक, पुत्रादिक नहिं कोय ।
 गुमास्ता वह तेहने, विणज करै अवलोय ॥८१॥
 दुकान बाणोत्तर भणौ, श्रेष्ठ भलावी मोय ।
 श्रावक नौ पड़िमा बहै, एकादश लग जोय ॥८२॥
 व्याज चावै रुपइया तणो, ते किण रा घर मांहि ।
 बलि तोटारु नफा तणो, कंवर धणी कहिवाय ॥८३॥
 पड़िमाधारी ना प्रगट, घर मे चावै व्याज ।
 नफा अनै तोटा तणो, एहिज धणी समाज ॥८४॥
 लाख तणा बे लाख थया, परिग्रह इण रो हीज ।
 सहस्र पचास रक्षा कृतां, तोटो तास कहौज ॥८५॥

मात वचावा जठियो, भागी पोषह ताहि ।
 तो साधु वचावै तेहनुं. चारित्र भागै किम नाहि ॥४८॥
 ले कार्य्य कीधे कृतै, पोषह चारित्र भागिह ।
 ते कार्य्य में धर्म किम, न्याय विचारौ लिह ॥४९॥
 द्वितीय मुयगडाङ्गे पवर, कट्टा अध्वयन रे मांहि ।
 अठारमौ गाथा अमल, आद्र मुनि कडिवाय ॥५०॥
 निज कर्म प्रते खपायवा, वा अन्य तारण ताहि ।
 धर्म देशना प्रभु दियै, निमल विचारौ न्याय ॥५१॥
 असंजती जे जीव छै, तास वचावा हित ।
 वीर प्रभू उपदेश दे, इम नवि पाख्यो तिथ ॥५२॥
 द्वितीय आचारङ्ग ने विषै, द्वितीय अध्वयन ताहि ।
 प्रथम उद्देशै प्रभु कछो, ग्रहस्त लडै मांहीसांहि ॥५३॥
 देखी नवी चिन्तै मुनि, मारो एह प्रतेह ।
 अथवा दूष ने मत हथो, राग द्वेष वर्जैह ॥५४॥
 द्वितीय आचारङ्ग ने विषै, द्वितीय अध्वयन विषिह ।
 प्रथम उद्देशै ग्रहस्त वे, तेज आरम्भ करैह ॥५५॥
 देखी मन चिन्तै न मुनि, अग्नि उजालो एह ।
 अथवा अग्नि उजाल मति, इम पिष नवि चिन्तैह ॥५६॥
 तथा बुझावो अग्नि ए, अथवा मत बुझाव ।
 एहनुं पिष नवि चिन्तै, राखै मुनि सस भाव ॥५७॥

इस सांभल उत्तम नरां, राखो जिन सु प्रतीत ।
आज्ञा वारै धर्म कह्यौ, करवी नही अनीत ॥६६॥

॥ इति श्रावक ने दियौ स्युं अधिकार ॥

॥ अथ तेबीसमूं अनुकम्पा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै असंजती भणौ, जीह बचावै जाण ।
स्युं फल तास समुपजै, तसु उत्तर पङ्क्तिखण ॥ १ ॥
जीव छोडावै दाम दे, जिन मुनि नहिं दे आण ।
अनुमोदै पिण नहिं तिकी, सावदरा पञ्चखाण ॥ २ ॥
मुनि दीक्षा लीधी तदा, सर्व सावद पञ्चखेय ।
जीव छोडावै नहिं तिकी, निज वस्त्रादिक देय ॥ ३ ॥
ग्रहस्थ छोडावै दाम दे, जो मुनि अनुमोदेह ।
द्वतीय करण भागै तसु, पाप कर्म बंधेह ॥ ४ ॥
द्वतीय करण अनुमोदवै, लागै पाप जबून ।
तो दाम दियै ते धुर करण, केम हुवै तसु पुण्य ॥ ५ ॥
सामायक पोषह विषै, सावद प्रति पञ्चखेह ।
जीव छोडावै नहिं तिकी, निज वस्त्रादिक देह ॥ ६ ॥
खोटी सावद जाण कौ, जे त्यागो मुनिराय ।
ग्रहस्थ ते सावद कियां, धर्म पुण्य किम याय ॥ ७ ॥

निशीथ उद्देशै ग्यारमें, पर ने भय उपजाय ।
 उरावता प्रति अनुमोदै, दण्ड चौमासी आय ॥६८॥
 ग्रहस्थ नी रक्षा करै, रक्षा करि प्रतीह ।
 अनुमोद्यां पिण दण्ड कछो, निशीथ तेरमें लेह ॥६९॥
 दशवैकालिक तीसरै, ग्रहस्थ तणी मुनिराय ।
 साता पूछां सोलमो, अणाचार कछो ताय ॥७०॥
 ग्रहस्थ नी व्यावच क्रियां, आठ बीसमूं न्हाल ।
 अणाचार मुनिवर भणी, दाख्यो परम कृपाल ॥७१॥
 करै करावै जे नथी, करता प्रते अवलीय ।
 मुनि अनुमोदै पिण नहीं, तो धर्म कहै किम सोय ॥७२॥
 अश्यादिक ग्रहस्थी भणी, दियां मुनि ने दण्ड ।
 अनुमोद्यां पिण दण्ड कछुं, निशीथ पनरमें मंड ॥७३॥
 शस्त्र है षटकाय नूं, ग्रहस्थ तणी जे शरीर ।
 तसु तीखो करवा तणी, किम आज्ञा दे बीर ॥७४॥
 घातिक जे षट काय ना, तास बचावै कोय ।
 तसु प्रते आज्ञा किम दियै, न्याय विचारो जोय ॥७५॥
 ॥ हिव साधूरो आज्ञा बाहर रो ग्रहस्थ व्यावच
 करै तसु उत्तर ॥

कोई कहै साधू तणी, व्यावच ग्रहस्थ करैह ।
 तेह विषै स्थूं फल जुवै, तसु उत्तर हिव लेह ॥७६॥

राणौ धारणौ गर्भ नौ, अनुकम्पा ने अर्थ ।
 पथ्य अनादिक भोगव्या, ज्ञाता मांहि तदर्थ ॥१८॥
 सुलसां नौ अनुकम्प करि, देवकी ना सुत आणि ।
 सूं कथा हरण गवेषी सुर, अन्तगड में जाण ॥१९॥
 अभय कुमार तणौ वली, अनुकम्पा चित्त आणि ।
 दोहलो पूछो मित्र सुर, ज्ञाता मे जिन वाणि ॥२०॥
 रत्तन द्वीप देवी तणौ, जिन ऋषि करुणा कौध ।
 ज्ञाता नवम अध्येन कच्छं, सावद्य यह प्रसिद्ध ॥२१॥
 ब्रूयादिक अनुकम्प नौ, जिन आज्ञा दे नाहिं ।
 ते माटै सावद्य तिके, देखोजी दिल मांहिं ॥२२॥
 जीव हणौ मुज कारणै, चिन्ताव नेम कुमार ।
 तोरण थौ पाछा फिद्या, ए अनुकम्पा सार ॥२३॥
 जीव हणान्ता नेम ना, विवाह निमत्त पिछाण ।
 ते टाल्यो पाप पोता तणो, जिन आज्ञा तिहां जाण ॥२४॥
 गज भव सुशलो नवि हणयो, कष्ट भोगव्यो आप ।
 निर्वद्य ए अनुकम्प कै, गज टाल्यो निज पाप ॥२५॥
 उत्तराध्ययन इकवीस में, चीर देख समुद्रपाल ।
 छोड़ायो आख्युं नथी, चरण लियो सुविशाल ॥२६॥
 दूजो श्रुतस्कन्ध अङ्ग धुर, तृतीय अध्ययन विचार ।
 प्रथम उद्देश कछो मुनि, बेठो नाव सभाग ॥२७॥

पेटूची अति दुःख रे, दूठौ भूतौ सम कहौ ।
 गृही मसलै कर मुक्त्त रे, तेहने पिण तसु लेख पुण्य ॥८५॥
 अठवी विषै अचेत रे, हय खर सगट वैसाण ने ।
 आणै गृही पुर तैथ रे, तेहने पिण पुण्य तसु मतै ॥८६॥
 मुनि याको मग मांहि रे, बोझ घणो पोष्यां तणो ।
 पगभर खिखो न जाय रे, ते बोझ उठायीं पिण धर्म ॥८७॥
 अरण्य बलि पुर मांहि रे, सन्त दृषातुर चेत नहौं ।
 सचित उदक गृही पाय रे, तेह ने लेखै धर्म तसु ॥८८॥
 इत्यादिक अवलोय रे, गृही मुनि ना कार्य करै ।
 हरस छेद्यां धर्म होय रे, तसु लेखै सहु में धर्म ॥८९॥
 मुनि नौ हरस छेदन्त रे, तेहने अनुमोदै मुनि ।
 दगड चौमासो हुन्त रे, तृतीय उद्देश निशीय में ॥९०॥
 अनुमोद्यां ही पाप रे, तो गृही छेद्यां पुण्य किम ।
 जिन आज्ञा चित्त स्थाप रे, आज्ञा विन नहौं धर्म पुण्य
 सामायक पञ्चखाण रे, निर्वद्य कार्य अन्य बलि ।
 ग्रहस्थ करै को जाण रे, तो मुनि अनुमोदै तसु ॥९२॥
 निर्वद्य कार्य ताहि रे, गृही कौघे धर्म पुण्य तसु ।
 अनुमोदै मुनिराय रे, तेहने पिण धर्म पुण्य छै ॥९३॥
 विणज अने व्यापार रे, सावद्य कार्य अन्य बलि ।
 ग्रहस्थ करै तिंवार रे, धर्म पुण्य तेह ने नथी ॥९४॥

दशमें अध्ययन द्वितीय अङ्क, चार बीसमी गाह ।
 जीवित मरण न बंछणो, असंजम जीवित ताह ॥३८॥
 तेरमें ध्ययने द्वितीय अङ्क, तीन बीसमी गाह ।
 जीवन मरण न बंछणो, असंजम जीवित ताह ॥३९॥
 'मनरम अध्ययने द्वितीय अङ्क, दशमी गाथा मांहि ।
 असंजम जीवित प्रते, मुनि आदर न दिये ताहि ॥४०॥
 तृतीय अध्ययने द्वितीय अङ्क, तूर्य उद्देश विषेह ।
 जीवित मरण न बंछणो, असंजम जीवित तेह ॥४१॥
 इत्यादिक बहु स्थान धी, असंजम जीवित ताय ।
 बाल मरण नहिं बंछणो, भाष्यो श्री जिनराय ॥४२॥
 आप तयो नहिं बंछणो, असंजम जीवित सोय ।
 तो पर नुं बंछ्या थकां, धर्म पुण्य किम होय ॥४३॥
 बाल मरण पिण आपरो, बंछै नहिं मुनिराय ।
 पर नू पिण बंछै नहीं, बंछ्यां धर्म न घाय ॥४४॥
 पण्डित मरण ज आप रो, बंछै महा मुनिराय ।
 पर नू पिण बंछै तिको, विमल विचारो न्याय ॥४५॥
 कच्चो सातमा अङ्क में, पोषह विषै पिच्छाण ।
 मात बचावण जठियो, चूलणीपिया जाण ॥४६॥
 अमा तसु डम आखियो, भागो पोषह सोय ।
 बलि व्रत भागो कच्चो, भागो नियम सु जोय ॥४७॥

किण ही ग्रहस्थ पञ्चखाण रे, हरस छेदावा ना किया ।
 जबरौ सूं पहिछाण रे, वैद्य हरस छेदै तसु ॥१०५॥
 नेम भङ्ग तसु नाहिं रे, पिण त्याग भङ्ग करवा तणो ।
 कामौ वैद्य कहिवाय रे, तिण सुं धर्म न तेहने ॥१०६॥
 तिम मुनि रै पञ्चखाण रे, हरस छेदावा गुहौ कने ।
 जबरौ सूं पहिछाण रे, वैद्य हरस छेदै तसु ॥१०७॥
 नियम भङ्ग तसु नाहिं रे, पिण त्याग भङ्ग करवा तणो ।
 कामौ वैद्य कहाय रे, तिण सुं नहिं तसु धर्म पुण्य ॥१०८॥
 वैद्य हरस छेदेह रे, अनुमोदै नहिं जे मुनि ।
 किम तसु धर्म कहिह रे, न्याय विचारौ देखल्यो ॥१०९॥
 अनुमोदां हो पाप रे, तो छेदै तसु पुण्य किम ।
 तृतीय करण अच स्थाप रे, प्रथम करण तो अधिक अच
 पाप हुवै धुर करण रे, ते अधनौ अनुमोदना ।
 तौजे करण उच्चरण रे, तिण लेखै तसु पाप है ॥१११॥
 प्रथम करण पुण्य होय रे, ते पुण्य नौ करणी प्रति ।
 अनुमोदै जे कोय रे, तास पाप किण विध हुवै ॥११२॥
 करण वाला ने पुण्य रे, ते अनुमोदां पाप कहै ।
 प्रत्यक्ष बचन जबुन्य रे, न्याय दृष्टि करि देखिये ॥११३॥
 छेदै तिण ने पुण्य रे, ते पुण्य रौ करणी प्रति ।
 अनुमोदां जो पुण्य रे, तास पाप किण विध हुवै ॥११४॥

નવમઃઉત્તરાધ્યયને કહ્યું, મિથિલા બલતી દેખ. . .
 સાહમું નવિ જોયો નમી, ટાલ્યો રાગ વિશેષ ॥૫૮॥
 દશવૈકાલિક સાતવેં, પદ્માસમી જે ગાહ.
 માહોમાંહી સુર મિહૈ, ડ્રમ મનુ માહોમાંહિ ॥૫૯॥
 તિર્યંચ માહોમાંહિ લહે, એહની થાવો જીત.
 દુશરૌ જય થાવો મતી, મુનિ ન કહે એ રીત ॥૬૦॥
 દશવૈકાલિક સાતવેં, દુક્કાવનમી ગાહ.
 વર્ષાં ને ફુન વાયરો, સીત ઉષા અધિકાહ ॥૬૧॥
 રાજ વિરોધ રહિત ફુન, થાવો દેશ મુગાલ.
 ઉપદ્રવ રહિત હુવો વલ્લી, ડ્રમ ન કહે મુનિ માલ ॥૬૨॥
 એ સાતોં હોવો તથા, એ સાતોં મત હોય.
 એ વિધ પિંણ ને કહે કદા, અમલ ન્યાય અવલોય ॥૬૩॥
 દિશા મુઠ જે ગ્રહસ્થ ને, માર્ગ બતાયાં દગ્ધ.
 નિશીથ ઉદેશૈ તૈરમે, ચૌમાસિક પ્રવચ્છ ॥૬૪॥
 ઠાણા અંદ્ર ઠાણે તૌસરે, તૃતીય ઉદેશક માંય.
 આત્મ રક્ષક ત્રીન જે, આહ્યા શ્રી જિનરાય ॥૬૫॥
 દિન્સાદિક દેખી કરી, દિયૈ ધર્મ ઉપદેશ.
 અથવા મૌન રહે મુનિ, સમભાવે સુવિશેષ ॥૬૬॥
 અથવા જઠી ત્યાં થકી, એકાન્ત જાગાં જાય.
 આત્મ રક્ષક એ કહ્યા, પિંણ છોડાવણો કહ્યો નાંય ॥૬૭॥

धर्म पुण्य नहिं होय रे, ते सघला बोलां ममै ।
 तो पाप गृही ने जोय रे, जिन आत्मा नहिं ते भयी ॥१२५॥
 तिम ते हरस छेदना रे, अशुभ क्रिया ते वैद्य ने ।
 मुनि नहिं अनुमोदना रे, धर्म पुण्य किय विध हुवै ॥१२६॥
 हरस छेदां शुभ कर्म रे, तो आचारंग में कछा ।
 त्यां सघला में धर्म रे, कहवो तिण रे लिख ए ॥१२७॥
 धर्म नहिं अन्य मांदि रे, तो केदै ब्रणादि गृही ।
 तिण में पिण पुण्य नांदि रे, ए सावदा आत्मा नयी ॥१२८॥
 हरस छेदां धर्म हुन्त रे, तो मुनि शिर सेतौ गृही ।
 कूवा पिण काळंत रे, तिण में पिण तसु लिख पुण्य ॥१२९॥
 बलि मुनिवर नौ सोय रे, पग चम्पौ मईन करै ।
 करै जो औषध कोय रे, तसु लिखै पुण्य सह ममै ॥१३०॥
 उक्ति विषै डम बाय रे, धर्म बुद्धि छेदां यकां ।
 क्रिया हुवै शुभ ताय रे, अशुभ क्रिया लोभादि करि ॥१३१॥
 विरुद्ध अर्थ छे एह रे, सूद यको मिलतो नथी ।
 मुनि नही अनुमोदिह रे, तास क्रिया शुभ किम हुवै ॥१३२॥
 डम शुभ क्रिया जो होय रे, तो औषध तेलादि करि ।
 मुनि तनु मई कोय रे, तास क्रिया पिण शुभ हुवै ॥१३३॥
 बलि मुनि पग थौ ताय रे, खीलो कांटो काडियां ।
 तसु लिखे कहिवाय रे, तेहने पिण हुवै शुभ क्रिया ॥१३४॥

जे व्यावच मुनि नौ करै, तसु आज्ञा प्रभु देह ।
निरदोषण अशणादि कर, तेह विषै धर्म लेह ॥७७॥
जे व्यावच मुनि नौ करै, प्रभु आज्ञा नहिं देह ।
तेह विषै नहिं धर्म पुण्य. न्याय विचारौ लेह ॥७८॥

॥ साधूरी हरस छेयां पुण्य शुभ क्रिया कहै
तेहनुं उत्तर ॥

सोलस शतकै भंगवती, तृतीय उद्देश विमास ।
हरस छेदै जे मुनि तणौ, क्रिया कहौ प्रभु तास ॥७९॥
हरस छेदूँ हूँ तुम तणौ, द्रम पूछ्यां अणगार ।
आज्ञा न दियै गृही भणौ, तिण सुं आज्ञा बार ॥८०॥
कार्य करावै नहि मुनौ, ग्रहस्थ कनै जे अंश ।
जबरी सूं जो को करै, तो न करै तास प्रशंस ॥८१॥

॥ सौरठा ॥

ग्रहस्थ मुनि नी पेख रे, हरस छेदवै धर्म पुण्य ।
तो मुनि ना कार्य अनेक रे, तसु लेखै कौधां धर्म ॥८२॥
मुनि पग कांटो जाण रे, बलि फांटो चक्षू धकी ।
गृही काडै विण आण रे, तसु लेखै धर्म गृही भणौ ॥८३॥
दूखै पेट अपार रे, मुनि चित व्याकुल दुःख घणौ ।
गृही मसलै कर सार रे, तेहने पिण पुण्य लेख तसु ॥८४॥

दूखै पेट मुनी तणो, मौत घात अवलोय ।
 बार्ड मसलै उदरतो, तसु लेखै धर्म होय ॥ ३ ॥
 बलि किण ही साधू तणी, ठलौ पेटूची ताम ।
 बहु दुःख फेरोपी घणो, अन्न नहिं भावै आम ॥ ४ ॥
 ते पेटूची मुनि तणी, बार्ड मसलै कोय ।
 तो उणरै लेखे तदा, तिण में पिण धर्म होय ॥ ५ ॥
 किण ही मुनि रो गोलो चढ्यो, बहु दुःख बार्ड देख ।
 गोलो मसलै तेहनूं, धर्म हुइ तसु लेख ॥ ६ ॥
 अग्नि विषै पड़ता प्रते, बार्ड बांह प्रकड़ेह ।
 बारै काडे तेहने, तो धर्म तसु लेखेह ॥ ७ ॥
 जंवा शौ पड़तो मुनि, बार्ड भेलै तास ।
 तिण मांही पिण धर्म छै, तेहने लेख विमास ॥ ८ ॥
 आखड़ पड़तां मुनि भणौ, बार्ड भाल राखेह ।
 पड़ता ने बैठो करै, हुवै धर्म तसु लेखेह ॥ ९ ॥
 माथो दूखै मुनि तणो, बार्ड शिर दाबेह ।
 मलम लगावै दूखणै, तसु पिण धर्म कहैह ॥ १० ॥
 पाटो बांधै दूखणै, मुच्छी फुन मुसलेह ।
 ब्रह्मादिक बहु मुनि तणा, बार्ड कार्य करेह ॥ ११ ॥
 दुःखी देख साधू भणौ, मरतो देखी ताय ।
 पीडाणो देखी करी, साता करै सवाय ॥ १२ ॥

सावद्य कार्य ताहि रे, गृही कौधे पिण पाप है ।
 अनुमोदै मुनिराय रे, प्रायश्चित आवै तसु ॥६५॥
 हरस छेदण री ताहि रे, आज्ञा जिन मुनि न दियै ।
 अनुमोदै पिण नाहि रे, तिण सुं ते सावद्य अछै ॥६६॥
 ग्रहस्थ पासै जाण रे, कार्य करावा मुनि तणै ।
 जावज्जोव पचखाण रे, मर्णान्ते पिण नियम ए ॥६७॥
 हरस गुम्बडा आदि रे, गृही पै छेदावण तणा ।
 मुनि ने त्याग संवाद रे, गृही छेदै जबरौ थकी ॥६८॥
 मुनि अनुमोदै नाहि रे. तो तसु त्याग भागै नहीं ।
 पिण कामी कहिवाय रे, त्याग भगावानो गृही ॥६९॥
 तिण सुं सावद्य एह रे, वलि अनुमोदै पिण नहीं ।
 आज्ञा पिण नहिं देय रे, ते माटै नहिं धर्म पुण्य ॥१००॥
 जे कामी गृही थाय रे. त्याग भगावा मुनि तणो ।
 धर्म नहिं तिण मांहि रे. न्याय दृष्टि अवलोकिये ॥१०१॥
 किण गृही अट्टम कौध रे, आहार च्यार त्यागन किया ।
 व्याकुल तृषा प्रसिद्ध रे, थयां अचेतन अन्य गृही ॥१०२॥
 उसनोदक तसु पाय रे, कियो सचेतन अधिक सुख ।
 नेम भङ्ग तसु नांय रे. पिण कामी त्याग भांगण तणो ॥१०३॥
 तेम इहां अवलोय रे. नेम भङ्ग मुनि नो नथी ।
 पिण कामी गृही होय रे, त्याग भगावा मुनि तणो ॥१०४॥

जो यां संहु बोलां मभौ, जिन आज्ञा दे नांहि ।
 तो धर्म पुण्यं पिण को नहौं, धर्म जिन आज्ञा मांहि ॥२३॥
 जे मुनिवर ने त्याग कै, ते कार्य्य अवलोक्य ।
 ग्रहस्थ करै को मुनि तणा, तास धर्म नहौं होय ॥२४॥
 जिण रीते जिणवर कछो, तिण रीते अवलोक्य ।
 अज्झा ने मुनिवर भणौ, वचावियां धर्म होय ॥२५॥
 जे प्रभु सौखावै नहौं, न करै तास प्रशंस ।
 आज्ञा पिण देवै नहौं, तिहां धर्म तणो नहि अश ॥२६॥

॥ इतिःसुमद्राधिकार ॥

॥ अथ पञ्चीसमूं गोशालाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै कइस्थ प्रभु, चौनाणी या जेह ।
 किम चूका कहो वीर ने, तसु उत्तर हिव लेह ॥ १ ॥
 बलि तुम्ह कहो गोशाल ने, दौदा दौधौ स्वाम ।
 ते किण सूत्र विषै कछुं, तसु उत्तर पिण ताम ॥ २ ॥
 बलि अनुकम्पा करि प्रभु, राख्यो जे गोशाल ।
 तेह विषै पिण स्युं थयुं, तसु उत्तर पिण न्हाल ॥ ३ ॥
 शतक पनरमें भगवती, आया सावत्यी स्वाम ।
 उत्पत्ति गोशाला तणी, गौतम पूछी ताम ॥ ४ ॥

धर्म बिना पुण्य नाहिं रे, शुभ जीगां थी निरजरा ।
 पुण्य बन्ध पिण थाय रे, ज्युं गड्डुं लारै खाखलो ॥११५॥
 द्वितीय आचारङ्ग मांय रे, तेरम अध्ययन नै विषै ।
 पाठ कछा जिनराय रे, ग्रहस्थ करै साधु तणा ॥११६॥
 मुनि तनु ब्रणज थाय रे, गृही छेदै शस्त्रे करी ।
 मुनि मन कर बळ्छै नांय रे, न करावै बचकाय करि ११७
 ब्रण छेदो नै ताहि रे, रुधिर राधि काटे गृही ।
 मुनि मनकरि बळ्छै नांहि रे, न करावै बचकाय करि ११८
 गृही मुनि पगवलि काय रे, तैल चोपडै मईने ।
 मुनि मन कर बळ्छै नांय रे, न करावै बच काय करि ११९
 गृही मुनि पग थी ताहि रे, खीलो कांटो काडियां ।
 मन करि बळ्छै नांहि रे, न करावै बचकाय करि १२०
 मुनि मस्तक थी ताहि रे, गृही काटे जूं खीख प्रते ।
 मन करि बळ्छै नांहि रे, न करावै बच काय करि १२१
 बोल इत्यादिक ताहि रे, ग्रहस्थ करै साधू तणा ।
 बळ्छै नाहिं मुनिराय रे, द्वितीय आचारंग तेरमे १२२
 मुनि अनुमोदै नांहि रे, तो ग्रहस्थ करै ए ऋषि तणा ।
 धर्म पुण्य तिण मांहि रे, किण ही बोल बिषै नथी १२३
 मुनि तनु ब्रण छेदन्त रे, धर्म कहै इक बोल में ।
 तो तमु लेखै हुन्त रे, धर्म सर्व बोलां भक्त ॥१२४॥

तनुवाय शाला विषै, गोशालो तिहवार ।
 मुक्त प्रति तिण देख्यो नहौं, जोयोभयन्तर बार ॥१५॥
 मुक्त अण देख्ये निज उपधि, ब्राह्मण ने दे ताथ ।
 मूंडी दाड़ी मूँह प्रति, मिल्यो ज मुक्त सूं आय ॥१६॥
 तीन प्रदक्षिण दे करी, जाव नमी कहै मुज्ज ।
 ये धर्माचार्य माहरा, हूं धर्म अन्तीवासी तुम्ह ॥१७॥
 तब मैं गोशालक तणां, एह अर्थ प्रति सोय ।
 अङ्गीकार कौधो तदा, पाठ विषै द्रम जोय ॥१८॥
 वृत्तिकार कह्युं एहवा, अजोग ने पिण जेह ।
 अङ्गीकार कौधो प्रभु, ते अक्षीण राग पणह ॥१९॥
 बलि तेहना परिचय थकी, ईषत् थोड़ी जाण ।
 जेह गर्भ अनुकम्पना, सद्भावे पहिछाण ॥२०॥
 प्रभु छद्मस्थ पणै करि, जेह अनागत काल ।
 तेह विषै जे दोष ना, अजाणवा थी न्हाल ॥२१॥
 अवश्य होणहार भाव थी, कियो प्रभु अङ्गीकार ।
 अभय देव सूर कह्यो, वृत्ति विषै ए सार ॥२२॥

॥ ते टीका कहै छै ॥

अभ्युप गच्छामि यच्चैतस्य अयोगस्याप्यभ्युगमनं भगवत स्तदक्षीण
 रागतया परिवये नेषत्स्नेह गर्मानुकम्पासद्भावात् छद्मस्थ तयाऽना-
 गत दोषानवगमादऽवश्यं भावीत्वाच्चे तस्यार्थेति भावनीयं ।

बलि मुनि शिर थी सोय रे, जूवां लौखां काडिया ।
 तसु लेखै अवलोय रे, तेहने पिण हुवै शुभ क्रिया ॥१३५॥
 मुनि अति लृषा अचेत रे, सचित अचित जल पाय कर ।
 कौधो गृहस्थ सचेत रे, तसु लेखै हुवै शुभ क्रिया ॥१३६॥
 थाको मुनि उजाड़ रे, गाडै हय खर चाढ़ करि ।
 आणै ग्राम मभार रे, तसु लेखै हुवै शुभ क्रिया ॥१३७॥
 इत्यादिक अवलोय रे, मुनि ने जे कल्पै नहीं ।
 ते करै कार्य्य गृही कोय रे, तसु लेखै पिण शुभ क्रिया ॥१३८॥
 जो यां बोलां रे मांहि रे, न हुवै गृही ने शुभ क्रिया ।
 तो हरस छेद्यां पिण ताहि रे, किम शुभ क्रिया कहिजिए ॥
 हरस छेदण रौ ताम रे, जिन मुनि आज्ञा नहिं दियै ।
 जिन आज्ञा विन काम रे, कौधां नहिं कै धर्म पुण्य ॥१४०॥

॥ इति अनुकम्पा अधिकार ॥

॥ अथ चौवीसमूं सुभद्राधिकार ॥

॥ दोहा ॥

फांटो काट्यो आंख थी, सती सुभद्रा जेह ।
 किणौ सूत्र में ए नहीं, कथा विषै कै एह ॥ १ ॥
 जो सुभद्रा ने धर्म कै, तो मुनि ना अवलोय ।
 अन्य कार्य्य वार्द्ध क्रियां, तसु लेखै धर्म होय ॥ २ ॥

माटी मूल सहैत तिण, तुरत उपाड़ी जेह ।
 एकन्ते न्हाख्यो तदा, ते तिल यम्भ प्रतेह ॥३२॥
 तत्तिण थोडो वृष्टि करि, थंभ्यो तिल यम्भ स्थान ।
 यथा सप्त तिल फूल चवि, एक फली में आण ॥३३॥
 गोशाला साथै तदा, हूं आयो कुर्म ग्राम ।
 तेहि नगर रै बाहिरै, बाल तपस्वी ताम ॥३४॥
 नाम बैसियायिण तिको, तप छट्ट छट्ट करेह ।
 रवि सन्मुख आतापना, तिहां खेतो विचरेह ॥३५॥
 तसु शिर थौ रवि ताप करि, यूँका भूमि पडन्त ।
 तास दया अर्थे तिको, बलि २ शिरै धरन्त ॥३६॥
 तब गोशालो मुझ पास थौ, बाल तपस्वी पाहि ।
 धीरै धीरै आय ने, बोल्यो एह्वी वाय ॥३७॥
 स्युं तूं मुनि तपस्वी अछै, तथा तत्व नूं जाण ।
 यत्ती तथा तूं कदा ग्रही, कै ऊं सिज्यातर माण ॥३८॥
 गोशाला ना वचन ने, तिण आदर नहिं दीध ।
 मन में भलो न जाणियो, साधौ मौन प्रसिद्ध ॥३९॥
 बे वण वार गोशाल तब, बोल्यो तिमहिज बाण ।
 स्युं तूं मुनि तपस्वी अछै, जाव ऊंछां रो स्थान ॥४०॥
 बाल तपस्वी शीघ्र तब, कोप चढ़ो असराल ।
 जे आतापन भूमि थौ, पाछो बलियो न्हाख ॥४१॥

फांटो काड्यो सुभद्रा, धर्म हुसी ज्यो तास ।
 तो यांनि पिण धर्म है, तिण रै लेख विमास ॥१३॥
 साधू रा कारज करै, बाईं जे जिण रीत ।
 तिम कारज भाई करै, श्रमणी ना धर प्रीत ॥१४॥
 जो सुभद्रा ने धर्म है, तो श्रमणी नो जोय ।
 भाई फांटो आंख थौ, काड्यां पिण धर्म होय ॥१५॥
 बलि कांटो पग मांदि थौ, श्रमणी तणोज सोय ।
 भाई काटे तेह में, तसु लेखि धर्म होय ॥१६॥
 बलि गोलो श्रमणी तणो, पेट पेटूची जोय ।
 भायो मसलै तेह में, तसु लेखै धर्म होय ॥१७॥
 शिर दावै श्रमणी तणूँ, भायो तसु दुःख देख ।
 इम मुच्छी मसलै तसु, धर्म होसी तसु लेख ॥१८॥
 मलम लगावै दूखणै, बलि अज्मा पड़ती जोय ।
 भायो भेलै तेहने, तसु लेखै धर्म होय ॥१९॥
 पड़ती ने बैठी करै, इत्यादिक अवलोय ।
 श्रमणी ना भायो करै, तसु लेखै धर्म होय ॥२०॥
 साधू रा बाईं करै, तास धर्म है सोय ।
 तो श्रमणी ना भायो कियां, तिण में अघ किम होय ॥२१॥
 सुभद्रा फांटो काडियो, जो तिण में धर्म होय ।
 तो सारां में धर्म है, न्याय सरिणो जोय ॥२२॥

॥ दोहा ॥

उषा तेजु प्रति संहरी, मुक्त प्रति बोल्हो बाय ।
 जाणया भगवन् आपने, जाणया २ ताहि ॥५०॥
 आप तथा ज प्रसाद थी, दग्ध हुआ नहिं एह ।
 संभव थी गत शब्द ने, बार २ उचरेह ॥५१॥

॥ गीतक छन्द ॥

कछुं वृत्ति में गोशाला जो भगवन्त संरक्षण कियो ।
 सराग भावे करि प्रभु दूक दया रस थी राखियो ॥
 जे उभय मुनि नवि राखस्ये ते बीतराग प्रणै वृत्तौ ।
 फुन लब्धि अण फोडण थकी बलि अवश्य भावौ भाव थी ॥

॥ अत्र टीका ॥

इह च यद्गोशालाकस्य संरक्षणं भगवताः कृतं तत्सारागत्वेन वचै-
 करसत्वाद्भगवतः यच्च सुनक्षत्रसर्वाणामूति मुनिपुंगवयोर्न करिष्यति
 तद्बीतरागत्वेन लब्धिनुपजीवकत्वात् अवश्यं भावित्वाद्देव्यवसेयं ॥इति ॥

॥ दोहा ॥

गोशालो तिया अवसरै, मुक्त प्रति बोल्हो बाय ।
 जूं सिध्यातरियो किस्सू, तुम प्रति भाषै ताहि ॥५२॥
 जाणया भगवन्त तो भणौ, जाणया जाणया सोय ।
 तब छूं गोशाला प्रते, इम बोल्हो अवलौय ॥५३॥

वीर कहै सुण गोयमा, गौ नी शाला मांय ।
 ए जन्म्यो तिख कारणै, नाम गोशाल कहाय ॥ ५ ॥
 हूं तौस वर्ष घर में रहौ, ग्रहं चरण सुख राशि ।
 प्रथम वर्ष पख पख सुतप, चट्टौ ग्राम चौमास ॥ ६ ॥
 तप मास मास दूजै वर्ष, नगर राजग्रह वार ।
 नालंदा पाडा मझै, चौमासी सुविचार ॥ ७ ॥
 तनुवाय शाला विषै, हूं तप करत विशेष ।
 आय रक्षो गोशाल पिण, ते शाला इक देश ॥ ८ ॥
 प्रथम मास नूं पारणो, विजय तणै घर कीध ।
 प्रगट हुवा जे पञ्च द्रव्य, महिमा देख प्रसिद्ध ॥ ९ ॥
 गोशालो कह्यो मुझ भणौ, श्री धर्माचार्य सोय ।
 धर्मान्तिवासी प्रभू, हूं तुम्हनो अवलोक्य ॥ १० ॥
 तब मैं तेहना वचन ने, आदर न दियो कोय ।
 मन मे भली न जानियो, धारी सौन सु जोय ॥ ११ ॥
 द्वितीय मास नो पारणो, अनन्द ने घर कीध ।
 तिमहिज गौशाले कह्यो, मैं आदर नही दीध ॥ १२ ॥
 तृतीय मास नूं पारणो, कियो सुदर्शन गेह ।
 तिमहिज गौशाले कह्यो, मैं आदर नही देह ॥ १३ ॥
 तूर्य मास नूं पारणो, कोछाक संनिवेश ।
 ब्राह्मण बहुल तणै घरे, करि चाल्यो सुविशेष ॥ १४ ॥

॥ દોહા ॥

તિણ અવસર ગોશાલ તે, સાંભલ બચ મુખ પાસ ।
 વિહનો યાવત્ પામિયો, અત હી ભય મન તાસ ॥૬૩॥
 મુખ પ્રતિ વન્દી નમન કરિ, ઢૂમ બોલ્યો અવલોય ।
 સંક્ષિપ્ત વિસ્તોર્ણ પ્રમુ, તેજ લેશ કિમ હોય ॥૬૪॥
 તિણ અવસર હું ગોયમા, ગોશાલા પ્રતિ તાહિ ।
 તેહ મંચલૌ પુત્ર પ્રતિ, બોલ્યો દૂહ વિધ બાય ॥૬૫॥
 દૂક મૂઠી ડહદૈ કરી, ફુન જે ડણા જલેહ ।
 દૂક પુશલી તપ છટ છટૈ, અન્તર રહિત કરેહ ॥૬૬॥
 જાંચી બાંહ આતાપના, સૂર્ય સંનમુખ લેહ ।
 તસુ છેહડૈ ષટ્ માસ રૈ, તેજુ લેશ હૈ તેહ ॥૬૭॥
 ગોશાલક તિણ અવસરૈ, એ મુખ અર્થ પ્રતેહ ।
 સમ્યક્ પ્રકારે વિનય કરિ, અંગોક્ત કરેહ ॥૬૮॥
 તિણ અવસર હું ગોયમા, ગોશાલક સંઘાત ।
 અન્ય દિવસ કુર્મ યામ જે, નગર થકી વિલ્યાત ॥૬૯॥
 સિદ્ધાર્થ ફુન યામ જે, નગરે આવત તામ ।
 જે તિલ થમ્મ મુખ પૂછિયો, મટ આબ્યો તે ઠામ ॥૭૦॥
 તબ ગોશાલો મુખ પ્રતે, બોલ્યો એહવી બાય ।
 મુખ ને પ્રમુ તુમ્હ જદ કહ્યું, તિલ નિપજસી તાહિ ॥૭૧॥

॥ दोहा ॥

तदन्तर हूँ गोयमा, गोशाला रे साथ ।
 भोगविया षट् वर्ष लग, लाभ अलाम सञ्जात ॥२३॥

सुख दुःख ने सत्कार फुन, असत्कार फुन सोय ।
 अनित्य जागरणा जागतो, हूँ विचखो अवलोय ॥२४॥

मृगशिर मासे एकदा, हूँ गोशाला साथ ।
 जे सिद्धार्थ ग्राम थी, कुर्म ग्राम प्रति जात ॥२५॥

तिल बूटो इक देख ने, मुझ प्रति तब गोशाल ।
 ए तिल नौपजसेक नहीं, इम पूछ्यो तिह काल ॥२६॥

सप्त जीव तिल पुष्य ना, मरी २ ने ताय ।
 किहां उपजसे हे प्रभु ! तब हूँ बोल्हो वाय ॥२७॥

नौपजसे तिल यम्भ ए, फूल जीव जे सात ।
 मरी मरी ए एह ने, तिल यम्भ विषै विख्यात ॥२८॥

एक फली जे तिल तणी, तेह विषै अवलोय ।
 ए तिल सप्त डुरये सही, इम मै भाष्यो सोय ॥२९॥

तब गोशालै मुझ बचन, अड्यो नहिं मन मांहि ।
 प्रतीतियो पिण नहीं तिणे, रोचवियो पिण नांहि ॥३०॥

मुझ ने झूठो घालवा, धीरै धीरै तास ।
 पाछो वल ने आवियो, ते तिल बूटा पास ॥३१॥

इम निश्चय गोशालका, वनस्पति रै मांहि ।
पउट्ट परिहार करै तिकै, मरी मरि तसु तन आय ॥८२॥

॥ टीका ॥

पारिवृत्य २ मृत्वा २ यस्तस्यैव वनस्पति शरीरस्य परिहाट परि-
भोग स्तत्रै बोत्यादो सौ पारिवृत्य परिहारस्त ।

॥ वार्त्तिका ॥

वनस्पति कहता वनस्पति ना जीव जे पारिवृत्य २ क० मरी मरी ने
पहिज वनस्पति ना शरीर नो परिहार क० परियोग ते तिहाँज उपजहुं
ते पारिवृत्य परिहार कहिडं ते प्रति परिहरति कहता करै ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवसर गोशाल ते, मुझ इम कह्ये कतेह ।
एह अर्थ अइ नही, नही प्रतीत न रुचिह ॥८३॥
एह अर्थ अण अइतो, जिहां तिल स्थम्भ त्यां आय ।
ते तिल थम्भ थौ तिल तणो, सङ्गखी तोड़ै ताहि ॥८४॥
ते तिल संगली तोड़ने, करतल विषै ज सोय ।
सप्त तिल पाड़ै तदा, प्रगट पणै सु जोय ॥८५॥
तिण अवसर गोशाल ने, गिणतां ते तिल सात ।
एहवुं मन में चिन्तव्युं, जाव समुत्पन्न जात ॥८६॥
इम निश्चय सहु जीव पिण, पउट्ट परिहार करेह ।
हे गीतम गोशाल नूँ, पउट्ट वाद कह्युं एह ॥८७॥

समुदघात तेजस प्रति, करै करौ अवलोय ।
 सात आठ पग ते तदा, पाछो उसरी सोय ॥४२॥
 मङ्गलि पुत्र गोशाल ने, हणवा काजे जाण ।
 काटे तेज शरीर थी, ए तेज उष्ण पिच्छाण ॥४३॥
 तिण अवसर हूँ गोयमा, गोशालक नौ जेह ।
 तेह मङ्गली पुत्र नौ, अनुकम्पा अर्थेह ॥४४॥
 बेसियायण नामे तिको, बाल तपस्वी जेह ।
 तेह तणी जे तेज प्रति, दूर हरण अर्थेह ॥४५॥
 तापस ने गोशाल रै, इहां विचाले न्हाल ।
 शीतल तेजु लेश्य प्रति, मैँ मूँको तिण काल ॥४६॥

॥ चौपाई ॥

जा मुझ शीतल तेजुलेशं, तिण लेश्या करि ने सु-
 विशेष । बेसियायण तापस नौ जाणी, उन्ही तेजु लेश
 हणाणी ॥४७॥ बेसियायण तपस्वी तिह अवसर, मुझ
 शीतल तेजु लेश्या करि । पोता नौ जे उष्ण पिच्छाणी,
 तेजु लेश्य हणाणी जाणी ॥४८॥ गोशाला ना तनु ने
 ताछो, जाण्यो किञ्चित पीड़ न पायो । देख्युं छवि छेद
 अण करतो, ते उष्ण तेजु लेश्य मंहरतो ॥ ४९ ॥

रे काशव तूं इम कहै, मखली सुत गोशाल ।
 धर्मान्तेवासी माहरो, पिण हूं नहीं ते न्हाल ॥८६॥
 मखली सुत गोशाल ते, धर्मान्तेवासी तोय ।
 ते तो काल करी गयो, सुरलोकि अवलोय ॥८७॥
 महाकल्प चौरासी लक्ष, सप्त देव भव सार ।
 सप्त संयूथा सन्नि गर्भ, सप्त पउट परिहार ॥८८॥
 इत्यादिक निज शास्त्र नी, वक्तिका कहै बणाय ।
 जीव उदार्वे नाम हूं, पिण गोशालो नांय ॥८९॥
 गोशाला रे तनु विषै, अम्है कीधूं प्रविश ।
 सप्तम् पौट परिहार ए, इत्यादिक जे अग्रिष ॥९०॥
 चोर तणो दृष्टान्त प्रभु, गोशाला ने दीध ।
 तब गोशालो बोलियो, अगल डगल बहु विध ॥९१॥
 श्रवानु भूति मुनि तदा, गोशाला पै आय ।
 भगवन्त ने अनुराग करि, बोल्यो एहवी वाय ॥९२॥
 समण; माहण पै एक पिण, आर्य्य बच धारिह ।
 तो पिण तसु बन्दै नमै, यावत सेव करेह ॥९३॥
 तो स्युं कहियो गोशाल तुम्ह, भगवन्त प्रवर्या दीध ।
 निश्चय भगवन्त मूँछियो, शिष्य पणै सुप्रसिद्ध ॥९४॥
 वृत्ति पणै करिने बलौ, सिब्यो भगवन्त तोय ।
 सौखावी भगवन्त तुम्ह, तेजु लेश अवलोय ॥९५॥

हे गोशाला तू इहां, बेसियायण नामेह ।
बाल तपस्वी प्रति तदा, देखी नेत्र करेह ॥ ५५ ॥
धीरे २ जसरी, मुक्त पासा थी ताहि ।
जिहां बेसियायण तिहां, जई बोल्यो द्रम बाय ॥ ५६ ॥

॥ चौपाई ॥

स्यूं तूं मुनि तपस्वी छै कोई, तथा तत्व नो जाण
सु होई । स्यूं तूं यती कदायही कहियो, कै तूं जूं नूं
सिध्यात्तरौयो ॥ ५७ ॥ बेसियायण तपस्वी तिहवारं, तुम्ह
बच आदर न दिये लिंगारं । मन में पिण भलो न
जाणै, रज्जो मून धरो तिह ठाणै ॥ ५८ ॥ अहो गोशाला
तूं तब हेर, तिण बाल तपस्वी प्रतेज फेर । तूं मुनि कै
जाव जूं सीया तरियो, द्रम बे तण बार उच्चरियो ॥ ५९ ॥
तब बाल तपस्वी शीघ्र कोप्यो, जाव पाछो जसर चित्त
रोप्यो । तुम्ह हणवा तेजु मूंकीह, तब हूं तुम्ह अनुकम्पा
अर्थेह ॥ ६० ॥ तिणरो उणा तेजु हणवा न्हाल, मूंकी
शीतल तेजु अन्तराल । तब बाल तपस्वी चित्त ठाणौ,
उणा तेजु हणाणी जाणौ ॥ ६१ ॥ पीड तुम्ह तनु नवि
देखेह । उणा तेजु लेश्या सहरेह । तब मुक्त प्रति
बोल्यो बाय, जाणया २ हे भगवन् ताहि ॥ ६२ ॥

छद्मस्थ यको छः मास मे, काशव काल करेह ।
 प्रभु कहै छहं वर्ष सोल लग, गन्ध गज जिम विचरेह ॥ ११६ ॥
 ते मूकौ तेजू तिका, पैठी तुम्ह तनु न्हाल ।
 तेह थौ सप्तम निशिमभै, तूँ करसी छद्मस्थ काल ॥ ११७ ॥
 पुर में जन कहै उभय जिन, लवै माछे मांहि बाध ।
 क्षुण सांचो भूँठो कंवण, आश्चर्य ए अधिकार ॥ ११८ ॥
 गोशालो निज स्थान जई, सप्तम निशि सुविचार ।
 सम्यक्त पामी आत्म निन्द, काल कियो तिहवार ॥ ११९ ॥
 प्रभु वेदन षट् मास सही, पछै विजोरा पाक ।
 लौधै तनु प्राक्रम बध्यो, प्रभुजी होगया चाक ॥ १२० ॥
 गोयम तब बे मुनि तणौ, पूछौ फुन पूछेह ।
 अन्तेवासी आपरो, कुशिष्य गोशालक जेह ॥ १२१ ॥
 काल करी ने किछां गयो, प्रभु भाष्यो सुविशाल ।
 अन्तेवासी मांहरो, कुशिष्य गोशालक न्हाल ॥ १२२ ॥
 श्रमण घातक छद्मस्थ यको, काल करी सुजगीस ।
 अच्युत कल्पै ऊपनो, स्थिति सागर बावीस ॥ १२३ ॥
 भगवती पनरमें शतक में, छै बहूलो विस्तार ।
 इहां संक्षेप यकी कह्यो, गोशालक अधिकार ॥ १२४ ॥
 कही सूत्र में तिमज कह्युं, हिव तसु कहिये न्याय ।
 प्रभु शिष्य कियो गोशाल ने, बलि बचायो ताय ॥ १२५ ॥

तिमज सप्त पुष्प जीव चवि, एक संगली मांय ।
 हुस्ये सप्त तिल तेह बच, मिथ्या प्रत्येक्ष दिखाय ॥७२॥
 ते तिल स्थम्भ न नीपनो; सप्त पुष्प ना जीव ।
 चवी सप्त तिल नवि धया, द्रुक सुंगली में अतीव ॥७३॥
 तिण अवसर हूँ गोयमा, गोशालक प्रति बाय ।
 बोल्हो तैं मुक्त जद वचन, श्रद्धो नहिं मन मांय ॥७४॥
 प्रतीतियो नहिं रोचव्यो, एह अर्थ अवलोय ।
 मनमें अश्रद्धतो छतो, भूँठो घालण मोय ॥७५॥
 ए मिथ्यावादो हवो, इम मन करौ विचार ।
 मुक्त थो पाछो जसरौ. धीरै धीरै धार ॥७६॥
 जिहां तिल यम तिहां आयने, यावत एकान्त ठाम ।
 न्हांख्यो ते उपाड़ ने, हें गोशालक ताम ॥७७॥
 तत्खिण बादल अम् दिख्य. प्रगट थयो तिहवार ।
 अम् बदल ते शीघ्र ही, तिमहिज यावत धार ॥७८॥
 तेह तिलनां स्थंभ नी. एक संगली मांहि ।
 तदा जपना सप्त तिल, अम काहुं तिम ताहि ॥७९॥
 हे गोशाला तेह ए, तिल नूं स्थंभ निपन्न ।
 नथी तेह अण नीपनूं, निश्चय करौ सुजन्न ॥८०॥
 तेह सप्त पुष्प जीव चवि, ए तिल स्थम्भ नी जाण ।
 एक संगली ने विवै, थया सप्त तिल आण ॥८१॥

॥ दोहा ॥

अक्षीण राग पणै करौ, अङ्गीकार प्रति ख्यात ।
 ते राग भाव में धर्म किम, समझो सुगण मुजात ॥१३४॥
 बलि परिचय करी ने कछो, ईषत् स्नेह अनुकम्प ।
 एह कार्य आछो हुवै, तो इह विध कैम पर्यम्प ॥१३५॥
 अक्षीण राग पणा विषै, परिचा विषय मुजाय ।
 स्नेह अनुकम्पा ने विषै, भलो कार्य किम होय ॥१३६॥
 बलि अनागत दोष ना, अजाणवा थौ जौय ।
 अङ्गीकार कौधो कछो, ते दोष किसो अवलोय ॥१३७॥
 ए तिल नीपजसे कछो, तिण दौधो तुरत उपाड़ ।
 हिन्सा जीवारी हुई, ए अवगुण अवधार ॥ १३८ ॥
 बलि लब्धि फोड गोशाल नो, रक्षण कौधो ताय ।
 तिण बहु मिथ्यात बधावियो, ए पिण अवगुण थाय ॥१३९॥
 बलि तेजु लेश्या प्रते, सौखावी भगवान ।
 तिण लेश्याइं मुनि हग्या, ए पिण अवगुण जान ॥१४०॥
 बलि प्रताप ना प्रभु ने करौ, तेजु लेश्य करेह ।
 वेदन अति षट् मास सही, प्रत्यक्ष अवगुण एह ॥१४१॥
 बलि तिल बूंटो नीपनो, एम कछो भगवान ।
 तत्क्षिण तिणे उपाडियो, ए पिण अवगुण जान ॥१४२॥

हे गोतम गोशाल नूं, मुक्त पासा थी जेह ।
आत्मइं करि कै तसु, पडिबुं जुदो कहैह ॥८८॥
॥ वार्त्तिका ॥

आयाए पाठ नो अर्थ, वृत्तीकार आयाए पाठ ना बे अर्थ कियाः—
अगवन्त कहै स्हारा पासा थी आयाए कहता आत्मई करी अपकम ते
जुदो पड़यो निससो अथवा आयाए कहता आदाथ तेजु लेख्या नूं
उपदेश ग्रहण करी ने जुदो पड़यो ।

॥ इति आयाए पाठ नूं अर्थ ॥

तिण अवसर गोशाल ते, इक्क मुठि उडदेह ।
इक्क पुसली उण्णोदके, छट् थावत् विहरैह ॥८९॥
तिण अवसर गोशाल ते, षट् मासि अवलोय ।
संचित विसीणं तिका, तेजु लेख्यवन्त होय ॥९०॥
तिण अवसर गोशाल पै, पार्श्व नाथ ना जोय ।
षेट् साधू भागल हुन्ता, आवी मिलिया सोय ॥९१॥
गोशाला ने गुरू पणै, पडिवज्झ रहिता जेह ।
ते साथै तिमहिज सहु, पूर्वं कच्चा तिम लेह ॥९२॥
यावत् ए अजिन छतो, पिण जिन शब्द उच्चार ।
प्रकाशमान छतो ज ए, विचरै छै इहवार ॥९३॥
मोटौ प्रणध ने विषै, वीर कहौ ए बात ।
गोशालो मुख कोपियो, निज संघ प्रति ले साथ ॥९४॥
वीर समीपै आय ने, बोल्थो एहवौ बाय ।
भलो कहै रे काशवा, आछो कहै रे ताहि ॥९५॥

प्रभु कच्छो अन्तेवासौ मुक्त, कुशिष्य गोशाल जगौस ।
 अच्युत्कल्पै ऊपनो, स्थित सागर बावीस ॥१५३॥
 नवमें शतके भगवतौ, तेतीसम उद्देश ।
 गौतम पूछ्यो वीर प्रति, सांभल जो सुविशेष ॥१५४॥
 अन्तेवासौ कुशिष्य तुक्त, जमाली अणगार ।
 काल करौ किहां ऊपनो, प्रभु भाषे तिहवार ॥१५५॥
 अन्तेवासौ कुशिष्य मुक्त, जमालो अणगार ।
 लन्तका कल्पै ऊपनो, किल्बिष पणै विचार ॥१५६॥
 जमालो ने कुशिष्य कछां, तिमहिज कुशिष्य गोशाल ।
 ते माटै बिहुं शिष्य हुन्ता, देखो नयन निहाल ॥१५७॥
 अन्तेवासौ बिहुं भणौ, आख्या श्री जगनाथ ।
 बलि कुशिष्य बिहुं ने कछा, देखो तज पखपात ॥१५८॥
 कुपूत कहिवै पूत धुर, तिणहिज रौत पिछाण ।
 कुशिष्य कहिवै शिष्य धुर, समझौ चतुर मुजाण ॥१५९॥
 अङ्गीकृत आख्यो प्रथम, अवानुभूति ख्यात ।
 कच्छो मुनचव मुनि बलि, फुन प्रभु कच्छो विख्यात ॥१६०॥
 तास कुशिष्य कच्छो बलि, ए पच्च ठाम पहिछान ।
 दीक्षा गोशाला तणौ, देखोजी बुद्धिवान ॥१६१॥
 नवमें ठाणै वृत्ति में, जिन कइस्य सुजोय ।
 दीक्षा न दियै इम कच्छो, शिष्य वर्ग ने सोय ॥१६२॥

वलि भगवन्त बहु श्रुत कियो, भगवन्त थकी ज सोय ।
 भाव अनार्य पडिबज्झियो, ते माटै अवलोय ॥१०६॥
 मति दूम है गोशाल तुम्ह, करण योग्य नहिं एह ।
 तेहिज छाया ताहरौ, नहीं अनेरी जेह ॥१०७॥
 सुण गोशालो कोपियो, तेजु लेश करि ताम ।
 श्रवानु भूति मुनि प्रते, भस्म कियो तिण ठाम ॥१०८॥
 द्वितीय वार गोशाल फुन, कठिन वचन अधिकाय ।
 नष्ट विणष्टादिक कछो, तब मुनछव मुनिराय ॥१०९॥
 जिम श्रवानुभूति कछो, तिमहिज कछो विचार ।
 गोशालो तब तेज करि, परितापै तिहवार ॥११०॥
 प्रभु पै आवी बन्दि नम, महाव्रत प्रति आरोप ।
 सन्त सत्यां ने खांम ने, कौधो काल अकोप ॥१११॥
 द्वितीय वार गोशाल फुन, प्रभु प्रति निठुर वदेह ।
 तब प्रभु गोशाला प्रते, मुनि कछो तिमज कहैह ॥११२॥
 है गोशाला तो भणी, मैं प्रवज्या दीध ।
 यावत मैं बहु श्रुति कियो, म्लेच्छ भाव ते कीध ॥११३॥
 गोशालो सुण कोपियो, तनु थौ काटै तेज ।
 प्रभु तनु परितापै तदा, पिण तनु नहिं येसेज ॥११४॥
 गोशाला रा तनु विबै. पाछी पैठी आय ।
 लागी दाह शरीर में, बोल्यो प्रभु प्रति वाय ॥११५॥

भावै स्नेह अनुकम्प कहौ, भावै मोह अनुकम्प ।
 श्री जिन आज्ञा वार है, सावद्य तेह प्रपन्न ॥१७०॥
 मोह कर्म ना उदय थी, स्नेह राग ए होय ।
 तिण सुं स्नेह अनुकम्प ते, मोह अनुकम्पा जोय ॥१७१॥
 स्नेह किण सुं करिवो नहिं, भाष्यो श्री जिनराय ।
 उत्तराध्ययने आठमें, दूजौ गाथा मांय ॥१७२॥
 ईषत् स्नेह अनुकम्प कहौ, ते अनुकम्पा सोय ।
 सावद्य पाप सहित्य छै, अथवा निर्वद्य जोय ॥१७३॥
 जो निर्वद्य अनुकम्प ए, तो ईषत् क्युं ख्यात ।
 पूरण कृपा करि प्रभु, इम कहता अवदात ॥१७४॥
 ईषत् स्नेह अनुकम्प ए, जो सावद्य छै सोय ।
 तो सावद्य में धर्म नहीं, द्विये विमासौ जोय ॥१७५॥
 ईषत् लोभ भलो नहीं, ईषत् भलो न मान ।
 ईषत् माया नहीं भली. तिम ईषत् स्नेह जान ॥१७६॥
 ईषत् झूठ भलो नहीं, ईषत् भलो न क्रुद्ध ।
 ईषत् अदत्त भलो नहीं, तिम ईषत् स्नेह अशुद्ध ॥१७७॥
 गौतम ने जिन स्नेह थी, अटक्यो केवल ज्ञान ।
 तो गोशाला रा स्नेह थी, धर्म पुण्य किम जान ॥१७८॥
 काल अनागत दोष पिण. वृत्तिकार आख्यात ।
 तो प्रशंसवा योग्य ए, कार्य्य किम कहात ॥१७९॥

गोशाला नी वारता, प्रमुजी धुर सूं ख्यात ।
 मास २ तप द्वितीय वर्ष, न्हे कीधो सुविख्यात ॥१२६॥
 प्रथम मास ने पारणै, विजय तणै घर कीइ ।
 गोशालो कछो आप गुरु, ह्रं तुम शिष्य प्रसिद्ध ॥१२७॥
 तसु अङ्गीकार मै नवि कियो, द्वितीय मास ने जाण ।
 पारण गोशालै कछुं, तिणहिज रीत पिछाण ॥१२८॥
 अङ्गीकार न कियो तदा, तृतीय मास रै जेह ।
 पारण फुन गोशाल कछुं; पिण मै अङ्गीकृत न करेह ॥१२९॥
 जो शिष्य करवानी रीत हुबै, तो प्रथम बार ही पख ।
 अङ्गीकार करता प्रभु, न्याय विचारौ देख ॥१३०॥
 तूर्य मास ने पारणै, तिमज कछुं गोशाल ।
 मुक्त धर्माचार्य तुम्है, ह्रं धर्म अन्ते वासी न्हाल ॥१३१॥
 मै अङ्गीकार कीधो तसु, इम कछो सूत्र विषेह ।
 वृत्तिकार एहवो कछुं, सांभलजो चित्त देह ॥१३२॥

॥ गीतक छन्द ॥

अक्षीण राग पणा थेकी, परिचय करी ने जानियं ।
 ईषत् स्नेह अनुकम्पना, सद्भाव थी पहिछानिय ॥
 अह्वा : अनागत, दोष ना, अजाणवा थी आद्रत ।
 फुन अवश्य भावी भावथीज, अजोग प्रति अङ्गीकृतं ॥

इहां सराग पणौ कछो, ते सराग पणारे मांय ।
 धर्म पुण्य किण विध हुवै, देख विचारो न्याय ॥१८०॥
 सराग पणो - कहि नै पछै, दया एक रस ख्यात ।
 जिसो सराग पणो हुवै, तिसौ दया ए यात ॥१८१॥
 सराग भाव निर्वद नही, तिम दया न निर्वद एह ।
 दोनूं सावद जाणवा, न्याय विचारौ लेह ॥१८२॥
 बे साधु नवि राखिया, ते बीतराग भाविह ।
 दयावन्त पिण जद हुन्ता, पिण सावद दया न तेह ॥१८३॥
 बीतराग थयां पछै, भाव सराग न होय ।
 तिम बीतराग थयां पछै, सावद दया न कोय ॥१८४॥
 कोइ कहै सावद दया, किहां कहौ छै ताम ।
 न्याय कहूं छूं तेहनो, मुण राखो चित्त ठाम ॥१८५॥
 हेमि नाम माला विषै, आठ दया रा नाम ।
 दया शुक कारुण्य फुन, करुणा घृणा जु ताम ॥१८६॥
 कृपा अने अनुकम्प फुन, वलि अनुक्रोश कहाय ।
 नाम एकार्थ आठ ए, द्वितीय काण्ड रै मांय ॥१८७॥
 ॥ अथ हेमिनाम माला में आठ दया रा
 नाम कह्यो ते लिखिये छै ॥

सूरतोय दयाशुकः कारुण्यं करुणा घृणा कृपानु कम्पानु क्रोशो ॥ इति ॥
 जिन चक्षु रंहांमो जीवियो, रत्न द्वीप नी जेण ।
 देवी नी करुणा करी, ज्ञाता नवम् अध्ययन ॥१८८॥

एम अनागत दोष ना, अजाणवा थी न्हाल ।
 प्रमु छद्मस्थ पणै कियो, अङ्गीकृत गोशाल ॥ १४३ ॥
 जो ए अवगुण जानता, तो कीम करै अङ्गीकार ।
 पिण उपयोग दियो नहीं, वारूँ न्याय विचार ॥ १४४ ॥
 जो अपर अनागत दोष हुवै, तो कहिये तमु नाम ।
 प्रगट वृत्ति में आखियो, दोष अनागत ताम ॥ १४५ ॥
 कोई कहै गोशाल ने, अङ्गीकार कृत ख्यात ।
 पिण दीक्षा दीधी इसो, किहां पाठ अवदात ॥ १४६ ॥
 अवानु भूति मुनि कह्यो, है गोशाला तोय ।
 प्रवर्ज्या दीधी प्रमु, बलि प्रमु सूँझो सोय ॥ १४७ ॥
 वृत्ति पणै सेव्यो प्रमु, सोखायो भगवान ।
 बलि बहु श्रुति प्रमु कियो, प्रगट पाठ पढ़िखान ॥ १४८ ॥
 इमज सुनवच मुनि कह्यो, इम प्रमु कह्यो प्रसिद्ध ।
 है गोशाला तो भणौ, न्है ज प्रवर्ज्या दीध ॥ १४९ ॥
 यावत् मैं बहु श्रुत कियो, मुझ सिती इहवार ।
 भाव अनार्य पड़िबज्यो, इम आख्यो जगतार ॥ १५० ॥
 तव गोशाले जिन ऊपरै, सूँकी तेखू लेश ।
 प्रमु षट् मास लगे सहौ, वेदन अधिक विशेष ॥ १५१ ॥
 जे षट् मास यथां पकै, प्रमु तनु थयो निराम ।
 गौतम पूछ्यो कुशिष्य तुझ, मर उपनो किण ठाम ॥ १५२ ॥

तिण सँ तेजु लब्धि प्रति, फोड़ी ने भगवान ।
 गोशाला ने राखियो, कइस्य थकां पिछाण ॥२०६॥
 केवल ज्ञान थयां पकै, लब्धि फोडवणी नाहिं ।
 बहू ठामे वर्जी प्रभु, देखो सूत्रे मांहि ॥२१०॥
 पद छत्तीसम पन्नवणा, वैक्रिय लब्धिज ताय ।
 फोद्यां क्रिया जघन्य चण, उत्कृष्ट पञ्च ही पाय ॥२११॥
 दूमहिज आहारिक लब्धि प्रति, फोद्यां थी पहिछान ।
 जघन्य तीन क्रिया कहौ, उत्कृष्ट पञ्च मुजान ॥२१२॥
 दूमहिज तेजु लब्धि प्रति, फोडै तेह ने जोय ।
 जघन्य तीन क्रिया कहौ, उत्कृष्ट पञ्च ज होय ॥२१३॥
 तेजु लब्धि जे फोडवी, प्रभु कइस्य पणेह ।
 केवल लक्षां क्रिया कहौ, वैक्रिय नौ परै एह ॥२१४॥
 सराग भाव करि कार्य कृत, तास स्थाप स्युं होय ।
 केवल लक्षां पकै कह्यो, ताम स्थाप कै सोय ॥२१५॥
 कोई कहै अनुकम्प करि, प्रभु राख्यो गोशाल ।
 ते माटै इहां धर्म कै, उत्तर तास निहाल ॥२१६॥
 ब्रह्म तणो अनुकम्प करि, कृष्णे ईंट उपाड़ ।
 तास घरे मेलौ कहौ, अन्तगडे अधिकार ॥२१७॥
 सुलसां नौ अनुकम्प करि, पुत्र देवकी नां ज ।
 मूंक्या हरण गवेषि सुर, सूत्र अन्तगड साज ॥२१८॥

॥ अथ ठाणांग नवमें ठाणौ टीका में कह्यो
छै तीर्थकर छद्मस्थ थका दीक्षा न दियै
ते गाथा लिखिए छै ॥

न परोवर सिया नय, छुमत्या परोवर ।
संपि दिविनय सौस वग्गां, दिरकन्ति जिणा जहासब्बे ॥
केवल उपजिया बिना, दीक्षा दीधी आम ।
अक्षीण राग पणै करी, परिचय स्नेह ग्रताप ॥१६३॥
बलि अजाण पणा थकौ, जेह अनागत दोष ।
वृत्तिकार पिण द्रम कछो, तो मुझ थी बयूं अपसोस ॥
अयोग ने अङ्गीकार कृत, एमं कछुं वृत्तिकार ।
जे दीक्षा देवा योग्य नहीं, तेह अयोग विचार ॥१६५॥
अक्षीण राग पणै कछो, ते राग भाव रै मांहि ।
आणां केवली नो अछै, अथवा आज्ञा नाहिं ॥१६६॥
बलि परिचय करि ने कछो, ते परिचय पहिछान ।
आछो छै अथवा बुरो, न्याय विचार मुजान ॥१६७॥
वैषत् स्नेह गर्भानुकम्प, सभाव थी अवलोक्य ।
अङ्गीकृत कछुं वृत्ति में, तास न्याय हिव जोय ॥१६८॥
जे अनुकम्पा ने विषै, स्नेह रछो छै ताय ।
स्नेह गर्भ अनुकम्प ते, मोह अनुकम्प कहाय ॥१६९॥

भगवती गौतम गुण मझै, तेजु लेश्या प्रति ताहि ।
 संकीचै ते गुण कछो, फोड्यां गुण कछो नाहिं ॥२२८॥
 इत्यादिक बहु सूत्र में, तेजु वैक्रिय आदि ।
 मुनि ने लब्धि न फोडणी, देखो घर अहंत्वाद ॥२२९॥
 जो लब्धि फोड गोशाल ने, राख्यां धर्मज होय ।
 तो बे मुनि प्रति राख्या न कयूं, न्याय विचारी जोय ॥२३०॥
 जब कहै बे मुनिवर तणो, मृत्यु जाण भगवान ।
 तिण कारण राख्या नहीं, हिव तमु उत्तर जाण ॥२३१॥
 वृत्तिकार तो इम कछो, बीतराग भाविह ।
 लब्धि अण फोड्यां थकी, बलि अवश्य भावी है एह ॥२३२॥
 शीतल तेजु लब्धि प्रति, अण फोडवा थी ख्यात ।
 तिण सुं शीतल तेजु पिण, किम फोडै जगनाथ ॥२३३॥
 ज्यो प्रभु बे मुनिवर तणो, जाण्यो मृत्यु जिंवार ।
 तो मुनि गौतम आदि त्यां, कयूं नहिं कीधी सार ॥२३४॥
 गौतम आदि विषै हुन्ती, शीतल तेजु लेश ।
 त्यां लब्धि फोड राख्या न कयूं, बे मुनि प्रति सुविशेष ॥
 जब कहै गौतम आदि प्रति, वर्ज्यां प्रभुजी ताथ ।
 तिण सुं मुनि राख्या न बे, निमुणो तेहनो न्याय ॥२३५॥
 प्रभु तो आनन्द ने कछो, तू मुनि प्रति कहैह ।
 धर्म प्रति चोयण मत करो, गोशालक थी जेह ॥२३६॥

होणहार निश्चय तिको. टाल्यो नहीं टलन्त ।
 तिण कारण गोशाल ने, दीक्षा दी भगवन्त ॥१८०॥
 वृत्तिकार पिण डम कछो, तुम ने पिण तिण रीत ।
 कहिवुं तेहिज उचित है, वारुं बचन बदीत ॥१८१॥
 कोदुं कहै ए वृत्ति ने, तुम्हें न मानो कोय ।
 तो बात वृत्ति नौ किम कहो, हिव उत्तर अवलोय ॥१८२॥
 भगवती शतक अठारमें, प्रभुजी भणी प्रत्यक्ष ।
 सोमिल प्रश्नज पूछिया, शरसव भक्ष अभक्ष ॥१८३॥
 जिन कछो जे ब्राह्मण तणा, शास्त्र विमै आख्यात ।
 शरसव ना वे भेद है, इत्यादिक अवदात ॥१८४॥
 तो ब्राह्मण ना शस्त्र प्रते, स्युं मान्युं जगनाथ ।
 पिण तेहने समभायवा, तसु मतनौ कही बात ॥१८५॥
 तिम मिलती ए वार्ता, वृत्ति तणी आख्यात ।
 जे वृत्ति मानै तेहने, समभावा कही बात ॥१८६॥
 वलि प्रभु गोशाला तणी, अनुकम्पा चित्त ल्हाय ।
 शीतल तेजू फोड़वी, रक्षण कीधो ताय ॥१८७॥
 वृत्तिकार डम आखियो, तेह सराग प्रणेह ।
 एक दया ने रस थकी, रक्षण कीधो एह ॥१८८॥
 वे मुनि ने न बचावसी, तब वीतराग भावेह ।
 लब्धि अण फोड़वा थकी, अवश्य भावी एह ॥१८९॥

केदैं हरश मुनि तणी, क्रिया वैद्य ने खात ।
 शतक सोलमें भगवती, तृतीय उद्देश सञ्ज्ञात ॥२४६॥
 आन्ना श्री जिनवर तणी, जेह कार्य में नांय ।
 तेह कार्य कौधां छतां, धर्म पुण्य किम थाय ॥२५०॥
 तिमज लम्बि फोड़ण तणी, श्री जिन आण न देह ।
 धर्म पुण्य किम तेह में, न्याय विचारो एह ॥२५१॥
 कोइ कहै छद्मस्थ प्रभु, फोड़ौ लम्बि लिंवार ।
 दण्ड लियो स्युं तेहनो, ह्वि तमु उत्तर सार ॥२५२॥
 राजसूतौ ने बोलियो, विषय वचन रहनेम ।
 प्रायश्चित्त चाल्यो न तमु, पिण लियो हुस्ये धर पेस ॥२५३॥
 जल बिच पावौ नाव जिम, आद्रमुते कपि कौध ।
 प्रायश्चित्त चाल्यो न तमु, पिण लीधो हुस्ये प्रसिद्ध ॥२५४॥
 मोह बग्गे सीहो मुनी, रोयो मोटै साद ।
 प्रायश्चित्त चाल्यो न तमु, पिण लीधो हुस्ये संवाद ॥२५५॥
 धर्म घोष ना सन्त जे, आवौ चोहटा मांहि ।
 नाग श्री हेली निन्दी, तमु दण्ड चाल्यो नांहि ॥२५६॥
 हणसे हय नृप सारथी, नाम सुमङ्गल सन्त ।
 प्रायश्चित्त चाल्यो न तमु, शतक पनरम् उहंन ॥२५७॥
 कोइ कहै आलोचना, पडिक्रमणा कहौ तास ।
 तिण सुं ए दण्ड तेहनुं, ह्वि उत्तर सुविमास ॥२५८॥

करुणा नाम दया तपो, ते माटै सुविचार ।
 एह दया सावद्य है, श्री जिन आज्ञा बार ॥१८६॥
 उत्तराध्ययन बावीस में, नेमनाथ भगवान ।
 जीव देख अनुक्रोश मन, पाठ विषै पहिछान ॥२००॥
 अनुक्रोश ते करुणा कहौ, अविचूरि में अर्थ ।
 ते माटै करुणा दया, निर्वद्य एह तदर्थ ॥२०१॥
 तिण सूं भाव सराग नौ, दया ज सावद्य सोय ।
 अष्टादश में देखलो, दशमूं राग सुजोय ॥२०२॥
 लब्धि अणफोड़ववा यकौ, वीतराग भावेह ।
 बे साधुं नवि राखस्ये, ए पिण वृत्ति विषेह ॥२०३॥
 तिण सूं सराग भाव करि, शीतल तेजु लेश ।
 लब्धि फोड़वौ राखियो, गोशालक सुविशेष ॥२०४॥
 गोशालक हणवा भणौ, बाल तपस्वी जेह ।
 उणा तेजु लेश्या प्रते, मूंकी पाठ विषेह ॥२०५॥
 भगवन्त अनुकम्पा करी, लेश्या शीतल तेह ।
 मूंकी गोशालक भणौ, रक्षण करण कहैह ॥२०६॥
 उणा तेजु लेश्या कहौ, शीतल तेज ही लेश ।
 तेजु लेश ए बिहुं कहौ, पाठ विषै सुविशेष ॥२०७॥
 उणा तेज लेश्या प्रते, तापस मूंकी सोय ।
 लेश्या शीतल तेज प्रति, प्रभू मूंकी अवलोय ॥२०८॥

छट्ठा गुणठाणा विषै, आखी चार कषाय ।
 षट् लेश्यां संज्ञा चिह्नं, अशुभ जोग पिण्ण आय ॥२६६॥
 परिचय स्नेह अनुकम्प करि, अक्षीय राग पणोह ।
 सराग भाव फुन लब्धि नू. फोडवतुं पिण्ण लेह ॥२७०॥
 प्रथम छट्ठा गुणठाण ना, प्रगट भाव ए पेख ।
 निर्वद्य किम कहिये तमु, न्याय विचारी देख ॥२७१॥
 जेह कार्य नौ केवली, आत्ता न दिये कोय ।
 धर्म पुण्य नहिं तेह में, हिये विमासी जोय ॥२७२॥
 जेह कार्य नौ केवली, आत्ता देवे आप ।
 धर्म पुण्य छै तेह में, तिहां नहिं किञ्चित पाप ॥२७३॥
 केहें जिन आत्ता में पाप कहै, धर्म जिन आत्ता बार ।
 बिहुं विष अशुद्ध प्ररूपवै, किम पामै भव पार ॥२७४॥
 जिन धर्म जिन आत्ता दिये, जिन धर्म सिखावै आप ।
 जे धर्म कहै आत्ता बिना, ते कंवर प्ररूप्यो आप ॥२७५॥
 आत्ता बारै धर्म रो, कंवर धणी अवलोय ।
 हाथ जोडि पूछ्यां थकां, कुण आत्ता दे सोय ॥२७६॥
 देव गुरु तो मौन रहै, नहिं अनुमोदै अंश मात ।
 तो आत्ता बाहिर धर्म री, उत्पति रो कुण नाथ ॥२७७॥
 संवर ने बलि निरजरा, दीय प्रकारे धर्म ।
 जिन आत्ता में ए बिहुं, ते थौ शिवमुख धर्म ॥२७८॥

पथ्यः धारणी भोगव्यो, गर्भं अनुकम्पा आण । ॥ २१८ ॥
 अभय अनुकम्पा मुर करी, दोहलो पूखो जाण ॥ २१९ ॥
 हरकेशी मुनिवर तणी, अनुकम्पा करि यत्न ।
 रुधिर वसन्ता छात्र कृत, उत्तराध्ययन प्रत्येक ॥ २२० ॥
 वलि मुनि नौ व्यावच अर्थ, छात्रां ने दुःख देह ।
 ए पिण सावद्य जाणवी, तिम अनुकम्प कहैह ॥ २२१ ॥
 अनुकम्पा तस जीवनी, आणी ने मुनिराय ।
 बांधै-बांधतां प्रति, अनुमोद्यां दण्ड आय ॥ २२२ ॥
 दमहिज छोडै छोडतां प्रति, मुनि जे अनुमोदेह ।
 निशीय उद्देशे वारमें, दण्ड चौमासी कहैह ॥ २२३ ॥
 अनुकम्पा ए सहू कहौ, पाठ विषे पहिछाण ।
 जिन आज्ञा नहिं तेह मे, तिण सुं सावद्य जाण ॥ २२४ ॥
 तिम प्रभु गोशाला तणी, अनुकम्पा चित आण ।
 तेजू लब्धिज फोडवी, तिण सुं सावद्य जाण ॥ २२५ ॥
 आहारिक लब्धि फोडवै, अधिकरण कछो तास ।
 शतक सोलमें भगवती, प्रथम उद्देश विमास ॥ २२६ ॥
 वैक्रिय लब्धि फोडवै, कछो विराधक ताहि ।
 भगवती तीजे शतक में, तूर्य उद्देशा मांहि ॥ २२७ ॥
 जङ्गा विद्या चारणा, लब्धि फोडवी जाय ।
 तेथानक विन पडिकम्पां, कछा विराधक ताय ॥ २२८ ॥

गुणवन्त री निन्दा कियां, कर्म तणुं बन्ध होय ।
 तेह कर्म थो दुःख लहै, नरक निगोदै सोय ॥२८८॥
 तिण सुं हित शिद्धा भलौ, धारै सुगण मुजाण ।
 राग द्वेष छांडौ करी, आराधै जिन आण ॥२८९॥

॥ कलश ॥

॥ चाल गीतक छन्द ॥

जिन वयण गुण मणौ रखण सार उदार देखौ
 संगच्छा, अवि तथ्य पथ्य सु अर्थ जे मुक्त मद्यामना में
 निम कछा । अति श्रेष्ठ मिष्ट गरिष्ठ प्रवर विशिष्ट जिन
 बच आद्यतं ॥ बच विरुद्ध को आयो हुवै मुक्त तास
 मिथ्या दुःकृतं ॥ १ ॥ उगणीसै तेतीस वर्ष विद द्वादशी
 फागुण वही, वर शहर बीदासर विषै हृद श्रमण एका-
 वन सही । फुन अर्ज का इकशय तिहां गणी आण
 सम्प्रति शोभती । वर समय सार उदार निर्णय कीध
 जय जय गणपती ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

भिन्नू भारीमाल फुन, तृतीय पाट ऋषिराय ।
 तास पसाए सुगण वृद्धि, जय जय हर्ष सवाय ॥ १ ॥

पिण मुनि प्रते नवचावणा, इम तो आख्यो नांय ।
 तिण सुं गौतम आदि जे, मुनि नहौं राख्यो कांय ॥२३६॥
 पिण जे लट्ठि फोड्य तणी, श्रीजिन आन्ना नांय ।
 तिण सुं शीतल तेजु प्रति, किम फोडै मुनिराय ॥२४०॥
 लट्ठि फोड गोशाल ने, राख्यो श्री भगवान ।
 जद छट्मस्थ पणै हुन्ता, मोह स्नेह बश जान ॥२४१॥
 जल थी नाव भरौ जतौ, देखी ने मुनिराय ।
 गृहौ प्रते बतावणो नहौं, द्वितीय आचारङ्ग मांय ॥२४२॥
 डूबे आपं अने बलौ, जे डूबे बहु जीव ।
 तसु अनुकम्प करै नहौं, रहै समभाव अतीव ॥२४३॥
 मात.बचावा जठियो, चूलणि पिया पिछाण ।
 तसु पोषह भागो कछो. ससम अङ्गे जाण ॥२४४॥
 मिथिला बलती देख नमि, रहामों जोयो नाहिं ।
 देखो उत्तराध्ययन मे, नवमें अध्ययने ताहि ॥२४५॥
 दशवैकालिक सातमें, देव मनुष तिर्यञ्च ।
 विग्रह लडता परस्पर, देखी ने मुनि सञ्च ॥२४६॥
 एहनी होवै जीत पुन, एहनी होवै हार ।
 एहनुं न कहै मद्या मुनी, हिव तसु न्याय विचार ॥२४७॥
 हार जीत नबि बञ्छवी, तो तास विचै पड सन्त ।
 कीम करावै हार जय, देखोजी मति मन्त ॥२४८॥

उत्तराध्ययन इकबीस में, समुद्रपाल सम्बेग ।
प्रायो तस्कर देखने, देखो तज उद्देग ॥ ५ ॥
सम्बेग पाठ तणो अर्थ, अविचूरि में ख्यात ।
सम्बेग ना हेतु भणौ, सम्बेग चोर कहात ॥ ६ ॥

॥ सूत्र गाथा ॥

तं पसि ऊर्णं सम्बेगं, समुद्रपालो इण मज्जी, अहो असुहाण
कम्माणं, निज्झाणं पावणं इमं ॥ उत्तराध्ययन २१ वे गाथा ६ मीं ॥

॥ अत्र अविचूरी ॥

तमिति तथा विच द्रव्यं दृष्ट्वा सविग संसार वैमुच्यतो मुक्त्य
अमिलापस्तद्वेतुत्वात्सोपि सविगस्तं समुद्रपाल इव वक्षमाणं अत्रवीत्
यथा अशुभानां पापकानां कर्मणा अनुष्ठानानां निर्यानं अवसानं पापकं
अशुभं इव प्रत्यक्ष असौवराकौ वद्वार्थ मित्यनीय ते इति भावः ।

॥ वार्त्तिका ॥

इहाँ कह्यो तं कहतां ते, तथा विच द्रव्य देखी ने सम्बेग ते संसार
विमुक्कपणो मुक्तिनी अमिलापा ते सम्बेग ना हेतु पणा थकी, सोपि
कहतां तिको चोर पिण सम्बेग, जिम पापकारो कर्म ते अनुष्ठान ना
छेहइ अशुभ ए प्रत्यक्ष राक वच ने अर्थे इह विच लेजाय छै, एतलै
सम्बेग नो हेतु चोर ते देखी ने समुद्रपाल बोल्यो अशुभ कर्म ना फल
ए भोगवै छै ।

॥ दोहा ॥

सम्बेग नो हेतु कह्यो, तस्कर ने अवलौय ।
पिण गुण नहिं छै ते भणौ, वन्दन योग न कोय ॥ ७ ॥

चर्म समय नूं पाठ ए, खन्धक धनो आदि ।
 बहु मुनि नो समुच्चय कछो, तिम ए पिण संवाद ॥२५६॥
 जंघा विद्या चारणा, तस्स ठाणस्स सोय ।
 आलोदय पडिक्कमिय, एह्वो पाठ मुजोय ॥२६०॥
 लब्धि फोड्डी ते स्थान प्रति, आलोवी गुणवन्त ।
 वलि पडिक्कमे ते मुनी, पद आराधक हुन्त ॥२६१॥
 मुनी मुमङ्गल स्थान के, तस्स ठाणस्स नाहि ।
 तिण सुं लब्धि फोड्ढण तणो, दण्ड कछो नहिं ताहि ॥२६२॥
 पिण त्प ह्य अरु सारथी, हणसे दण्डज तास ।
 तेह मुनी लिस्ये सही, कच्चुं सव्वठ सिद्ध वास ॥२६३॥
 इत्यादिक बहु ठाम ही, प्रायश्चित्त चाल्या नाहि ।
 पिण लिया हस्ये महा मुनी, गुणो देखोजी दिल मांहि ॥२६४॥
 तेजु लब्धि जे फोड्ढवै, तास क्रिया वण पच्च ।
 केवल लच्छां कछो प्रभु, तिण सुं दण्ड मुसच्च ॥२६५॥
 कल्पातीत हुन्ता प्रभू, कै ए सांची वाण ।
 पिण किण गुणठाणै तिकी, कहिये चतुर मुजाण ॥२६६॥
 प्रभुजी चरित्त लियां पछी, श्रेणी चळ्या पहलांज ।
 सप्तम गुण कट्ठै बली, वे गुणठाण समाज ॥२६७॥
 सप्तम गुणठाणा तणी, उत्कृष्टी अवलोय ।
 अन्तर मङ्गरत स्थिति कै, कट्ठै बहु स्थित जोय ॥२६८॥

દ્વેષ તથા હેતુ પ્રમુ, પિણ તે ગુણા સહીત ।
 તિણ સું તે નિન્દનીક નહિ, દેખોજી ધર પ્રીત ॥૧૮॥
 વસ્તુ, જે ગુણ સહિત પ્રતિ, દેખી દ્વેષ લહેહ ।
 દ્વેષ તણો હેતુ તિકા, પિણ નિન્દનીક નહિં જીહ ॥૧૯॥
 વસ્તુ, જે ગુણ હીણ પ્રતિ, દેખિ સવેગ લહેહ ।
 સંવેગ નો હેતુ તિકા, પિણ વન્દનીક નહિં તેહ ॥૨૦॥

॥ અથ સત્તાવીસમ્ બ્રાહ્મી લિપિ અધિકાર ॥

॥ દોહા ॥

કોઈ કહે અહ્ન પદ્મમે, બ્રાહ્મી ની લિપિ સાર ।
 નમસ્કાર તેહને કહ્યું, હિવ તમુ ઉત્તર ધાર ॥ ૧ ॥
 નમો વેંભીએ લિવી એ, લિપિ કર્તા નામેય ।
 ચરણ સંહિત જિન ધુલિપિક, અર્થ ધર્મસી એહ ॥ ૨ ॥
 પાથા ના કર્તા ભણી, પાથો કંહિએ તાહિ ।
 એવં ભૂત નયને મતે, અનુયોગ દ્વાર રે માંહિ ॥ ૩ ॥
 અથવા લિપિ જે ભાવ લિપિ, જે મુનિ ને આધાર ।
 નમસ્કાર છે તેહને, એહવું દીસે સાર ॥ ૪ ॥
 તીર્થ નામ જિમ સૂઝ નૂં, તે સંઘ ને આધાર ।
 તિણ મું સહ્ન ને તીર્થ કહ્યું, તિમ ભાવે લિપિ સાર ॥ ૫ ॥

दोय प्रकारे धर्म बलि, श्रुत पुन चरित पिछाण ।
 जिन आज्ञा ए बिहुं विषै, समझो सुगण मुजाण ॥२७६॥
 पञ्च महाव्रत साधुरा, श्रावक ना व्रत बार ।
 जिन आज्ञा में ए बिहुं, आज्ञा बार असार ॥२७७॥
 तिण सुं जिन आज्ञा तणो, राखो सुगण प्रतीत ।
 धर्म जिन आज्ञा धारियो, ते गया जमारो जीत ॥२७८॥

॥ अथ हित शिक्षा ॥

दुःख बहु नरक निगोद ना, सच्चा अनन्ती बार ।
 धर्म जिन आज्ञा शिर धरै, हुवै तास निस्तार ॥२७९॥
 मनुष जन्म दोहिलो लह्यो, लह्यो सामग्री सार ।
 पञ्च महाव्रत आदरौ, आराध्यां भव पार ॥२८०॥
 जो चरित धर्म ग्रही नहिं सकै, तो श्रावक ना व्रत बार ।
 निर अतिचारे पालियां, प्राप्ति भव दधि पार ॥२८१॥
 जो बार व्रत ग्रही न सकै, तो समदृष्ट उदार ।
 देव गुरु धर्म ओलखां, मुख प्राप्ति श्रीकार ॥२८२॥
 जो पूरौ समझ पड़े नहीं, तो गुणवन्त रा गुण गाय ।
 कोइक रसायण आवियां, पातिका दूर पुलाय ॥२८३॥
 पोतै व्रत पालै नहीं, पालै व्यासुं द्वेष ।
 दोय मूर्ख तिण ने कह्यो, प्रथम आचारङ्ग देख ॥२८४॥

वैदिक विकथा वारता, मन्त्र जन्म पुन तन्त्र ।
 कोक सामुद्रिक शास्त्र ए, लिपि में सह आवन्त ॥१६॥
 पाप शास्त्र गुनतीस पुन, वर्ण- स्थापना पेख ।
 ए अठारै लिपि विषै, वन्दनीक तुम्ह लेख ॥१७॥
 वीतराग तो तेहने, पाप शास्त्र आख्यात ।
 द्रव्य-लिपि कहिए तेहने, वन्दनीक किम यात ॥१८॥
 जो वन्दनीक द्रव्य लिपि हुवै, द्रव्य लिपि कहौ अठार ।
 तेह विषै सह आविया, किम वन्दै अणगार ॥१९॥
 ते माटै ते भाव लिपि, वा करता नामेय ।
 अक्षरम वर्ण गुणयुक्त नै, नमस्कार- सुगुणेह ॥२०॥

॥ वार्त्तिका ॥

कोई कहै भगवती रे आदि में नमोवर्नीय लिपिए । ए शब्द कही
 पछै कह्यो नमो सुयस्स ते लिपि ने नमस्कार करी सुत्र ने नमस्कार
 कसुं ते भाव सुत ने नमस्कार कथे छतै ते भाव सुत्र ने विषै भावलिपी
 पिण आय गई सो पूर्बे भाव लिपी ने नमस्कार किधो तेहनुं स्युं कारण
 नमोवर्नीय लिपिए अने नमो सुयस्स ए वे पद किम कहा तेहनुं उत्तर ॥
 दशवैकालिक अध्ययन आठमैं गाया ४१ मी में कह्यो कुम्भुवं अल्लिण
 पल्लिण गुत्तो, काछवा नी परै अल्लिण ते इषत् गुत्त पल्लिण ते प्रकृष्ट
 लीन वणो गुत्त इहाँ वे पद कहा तथा दशवैकालिक अध्ययन चौथे
 कह्यो पृथिविकाय ऊपर न लिहेज्जा कहता थोड़ोसो अथवा एक
 बार लिखै नहीं, न विलिहेज्जा कहता बहुवार लिखै नहीं इहाँ पिण
 वे पद कहा, तथा उत्तराध्ययन पहले आलवति लवति वा न सिपज्ज
 कथाइवि गुर्ह, आलवति कहता एकवार बोलाव्यो वा ते अथवा लवति

तिण काले भिन्नू गणे, मुनिवर सित्तर दीय ।
 ह्वक सह वाणु अर्जका, गणौ आणा अवलोय ॥ २ ॥
 उत्तर तुम्हे मंगाविया, हमे लिखाव्या नांय ।
 ते माटै ए प्रश्न ना, उत्तर दोहा बणाय ॥ ३ ॥
 दोहा गहस्थ कांठे करी, निज मति थकी लिखेह ।
 तिकी खोट व्यो को लिखी, तो मुभा दोषण मत देह ॥ ४ ॥

॥ इति गोशालाधिकार ॥

॥ अथ छब्बीसमूं प्रतिमा वैराग्य नो
 हेतु कहे तेहनुं उत्तर ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे वैराग्य नो, हेतु प्रतिमा एह ।
 जिनं प्रतिमा देखी करी, वर वैराग्य लहेह ॥ १ ॥
 ते माटै बन्दनीक है, निज प्रतिमा जग मांय ।
 ह्व तेहनुं उत्तर कहूं, सांभल जो चित्तल्याय ॥ २ ॥
 वषभ देख प्रति वूझियो, कर कांडू नरराय ।
 दु मुह इन्द्रध्वज स्थम्ब प्रति, देख सम्बेग सुपाय ॥ ३ ॥
 चूडि सूं प्रति वूझियो, नमि नृपति तिह काल ।
 अम्ब देख प्रति वूझियो, नगई नाम भूपाल ॥ ४ ॥

वृषभादिक देखी करौ, कर कडू आदिह ।
 बूझ्या पिण वृषभादि ते, वन्दनीक न कहिह ॥ ८ ॥
 मुनि वेषे जे पासल्यो, तसु देखी ने सोय ।
 बैराग पावै पिण तिको, वन्दन योग न कोय ॥ ९ ॥
 तिम जिन प्रतिमा देख ने, पावै जे वैराग ।
 पिण ते वन्दन योग नहीं, देखो मत पक्ष त्याग ॥ १० ॥
 ज्ञान दर्शन चारित तणा, गुण नहिं छै जे मांय ।
 ते सम्बेग नो हेतु जुबै, पिण वन्दनीक नहिं धाय ॥ ११ ॥
 मुनिवर प्रति देखी करी, द्वेष धरै मन कोय ।
 द्वेष तणो हेतु मुनी, पिण निन्दनीक नहिं होय ॥ १२ ॥
 श्रवानु भूति मुनि तणा, वचन सुणी गोशाल ।
 कोप्यो शौघ उवावलो, भस्म कियो तेह काल ॥ १३ ॥
 कोप तणो हेतु मुनी, पिण गुण सहित मुसन्त ।
 ते माटे निन्दनीक नहीं, देखोजौ बुद्धिवन्त ॥ १४ ॥
 मुनचक्र ना वचन सुणि, धन्युं गोशाले द्वेष ।
 द्वेष तणो हेतु तिको, पिण निन्दनीक नहिं पेख ॥ १५ ॥
 वीर प्रभूना वचन सुणि, कोप्यो शौघ गोशाल ।
 कोप तणा हेतु प्रभू, पिण निन्दनीक मत न्हाल ॥ १६ ॥
 छद्म वीर प्रति देखि ने, जन बहु द्वेष धरैह ।
 दुःख दीघा अति आकरा, आख्यो धुर अङ्गेह ॥ १७ ॥

वृत्तिकार द्रव्य लिपि कही, तेह लिपि गुण सून्य ।
 नमस्कार तेहने करेइं, ते तो बात जबुन्य ॥ ६ ॥
 द्रव्य निक्षेपो गुण रहित, वन्दन जोग्य न ताम ।
 समवायके देखल्यो, द्रव्य भाव जिन नाम ॥ ७ ॥
 भरत एरवत खेद ना, अनागते जिन नाम ।
 समचै चौबीस नाम जिन, वन्दे पाठ न ताम ॥ ८ ॥
 वलै एरवत खेच नौ, चउबीसी वर्त्तमान ।
 ठाम ठाम वन्दे कछुं, ए गुन सहित सुजान ॥ ९ ॥
 वर्त्तमान चउबीस ए, भरत खेद नौ ताहि ।
 ठाम ठाम वन्दे काछो, जोवो लोगस्य मांहि ॥ १० ॥
 ते लेखै द्रव्य लिपि भणी, द्रव्य सूत्र ने सोय ।
 नमस्कार किम कौनिये, हिये विमासी जोय ॥ ११ ॥
 वृत्तिकार द्रव्य लिपि भणी, थाप्यो छै नमस्कार ।
 सूत्र थकौ मिलतो नथी, एह अर्थ अवधार ॥ १२ ॥
 तथा पद में जे लिख्या, अक्षर ना आकार ।
 वन्दनीक जो ते हुवै, तो लिपि अष्टादश धार ॥ १३ ॥
 अष्टादश लिपि ने विषै, वेद पुराण सपेख ।
 कुरान जोतिष पिण हुवै, वन्दनीक तुम्ह लेख ॥ १४ ॥
 अष्टादश लिपि ने विषै, वर्ण संज्ञा सपेख ।
 सह पुस्तक में जे लिख्या, वन्दनीक तुम्ह लेख ॥ १५ ॥

कहतां बार बार बोलाव्यो नं० शिष्य बैठो रहै नही कदाचित पिण इहाँ
पिण वे पद कहा, तथा उत्तराध्ययन इग्यारमे नासीले कहितां सर्वथा
चारित्र नो विराधना नथी विसीले कहतां थकी चारित्र नी विराधना
नथी इहाँ पिण देश अने सर्व ए वे पद कहा, तथा बृहत्कल्पउद्देशी तीसरै
अन्तर घरने विपै साधू ने न कल्पे निहा इत्तपवा कहिता थोड़ी नौद लेवी
पयला इत्तपवा कहितां विशेष ऊंभवो इहाँ पिण वे पद कहा, इत्यादिक
अनेक ठामें वे पद कहा तिम इहाँ पिण वे पद जाणवा लिपि शब्दे भाव
लिपि ते देश थकी श्रुत ज्ञान अने नमो सुयस्स ते सर्व श्रुत ज्ञान कहा
तथा लिपिना करता ऋषभदेव ने लिपिक कहिए ते चारित्र युक्त प्रथम
जिनने नमस्कार ।

॥ अत्र टीका ॥

अयं च प्राग् वाख्याता नमस्कारादिकाग्रन्थ वृत्ति कृत्ता न व्याख्यातो
कुतोप कारणा दिति, ए भगवती नी वृत्ति में अमय देव सूर कह्यो ।

॥ सौरठा ॥

नमस्कारादिक ताहि रे. रचना पूर्व कही जिका ।

मूल वृत्ति रै मांदि रे, न कही किण कारण तिका । १।

द्रम कछो वृत्तिकार रे, ते माटै हिव तेहनं ।

प्रवर न्याय जे सार रे, बुद्धिवन्त हिये विचारज्यो ॥ २॥

॥ इति ॥ श्रीमद् जयाचार्य कृत हित शिक्षावली प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध ॥

